

कटोरी के ऊपर कुकर का ढक्कन लगा दें. किंतु वेट न लगाएं. 40 मिनट के बाद पूरी पुडिंग भाप से पक जाएगी.

अंत में सलाई से जांच कर लें. यदि सलाई अंदर चली गई तो पुडिंग पक गई.

ठंडी होने पर पुडिंग पर थोड़ा सा अनन्नास जैम फैला कर लगा दें और फिर हरे रंग की टूटीफ्रूटी से सजा दें.

हरियाली बरफी

सामग्री : 1 प्याला हरे छोलिए की पीठी, 2 प्याले खोया. 2 प्याले चीनी, ½ छोटा चम्मच इलायची दाना, 3 बूंद केवड़ा एसेंस, 1 चांदी का वरक, 1 छोटा चम्मच पिस्ता पीठी, 1 छोटा चम्मच नारियल बूरा, 1 प्याला दूध सास के लिए.

विधि : हरे छोलिए की पीठी बनाने के लिए छोलिए को दूध में पांच मिनट पका कर बारीक पीस लें और अलग रख दें.

दो प्याले पानी आंच पर रखें. उबलने पर चीनी डालें. एक तार की चाशनी बनने पर छोलिए की पीठी डाल कर हिलाएं और फिर खोया तोड़ कर उस में अच्छी तरह मिला दें और एक मिनट पका कर मक्खन का हाथ लगी थाली में उलट दें. ऊपर नारियल का बूरा, इलायची दाना एसेंस में मिला कर चिपका दें. थोड़ी ठंडी होने पर वरक लगा कर जमने पर काट लें.

यदि बरफी पूरी तरह न जमे यानी थोड़ी ढीली भी रह जाए तो कोई बात नहीं, खाने में स्वादिष्ट होगी.

छोलिए की किश्तियां

सामग्री : ½ किलो हरा छोलिया, 1 बड़ा चम्मच सूजी भुनी हुई, 1 बड़ा चम्मच ब्रेड का चूरा, 2 बड़े चम्मच टमाटर सास, 1 छोटा चम्मच चिली सास, 1-1 छोटा चम्मच नमक, मिर्च, गरममसाला, 3 बड़े चम्मच मक्खन, 100 ग्राम आलू के कतले (चिप्स), 100 ग्राम बादाम गिरी, 1 किलो बड़ेबड़े आलू, ½ प्याला संतरे का रस, 100 ग्राम पनीर ताजा.



शाही सासेज



परिरक्षित टमाटर

विधि :
आलू उबाल कर ठंडे कर लें. बीच में इसे इस तरह से खोखला कर लें कि आलू एक किश्ती की तरह दिखे. आलू अधिक नहीं उबलने चाहिए. बस इतना उबले कि टूटे नहीं. अब संतरे के रस में पनीर को मिला कर अच्छी तरह हथेलियों पर मसलें. नमक, मिर्च, गरम-मसाला, सूजी, ब्रेड का चूरा, टमाटर सास में मिला कर उसी पनीर मिश्रण में मिला दें. उधर बादाम गिरी पानी में भिगो कर रख दें. हरा छोलिया 'चिली सास' एक बड़ा चम्मच मक्खन तथा थोड़े नमक के साथ पका कर सुखा लें. इसे अलग रख लें.

अब पनीर, सूजी तथा ब्रेड चूरे वाले मिश्रण से आलुओं को लपेट कर 15 मिनट तक रख दें. फिर बोरोसिला की चौड़ी प्लेट में दो बड़े चम्मच मक्खन फैला कर एकएक किश्ती को सजा दें. पांच मिनट ग्रिल चालू कर के रख दें. 8-10 मिनट में सारा मिश्रण जम जाएगा और आलू थोड़े सख्त हो

जाएंगे. बाहर तब निकालिए जब परोसने का समय हो. खाने की मेज पर रख कर उन में हरा छोलिया भर दीजिए. अंत में एकएक या आधीआधी बादाम गिरी और आलू के कतलों से सजा दीजिए.

शहंशाही सासेज

सामग्री : 1 छोटा चम्मच मेथी सास, 3 छोटे चम्मच छोलिया सास, 1 बड़ा चम्मच पनीर, 2 बड़े चम्मच ब्रेड का चूरा, ½ छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच टोमैटो सास, 1 छोटा चम्मच चिली सास, 1 चुटकी गरममसाला, 250 ग्राम आलू, 1 बड़ा चम्मच संतरे का रस, प्याज के लच्छे, हरी धनिया सजावट के लिए.

विधि : आलू उबाल कर चूरा कर लें. उस में एक बड़ा चम्मच पनीर, नमक तथा गरममसाला डाल कर खूब मसलें. फिर उस में ब्रेड का चूरा व तीनों चटनियां (सास) मिलाएं, हिलाएं और मसलें. अंत में छोलिया सास मिला कर एक बड़ा सा पेड़ा बना कर रख लें. फिर पतीले में पानी उबाल कर उस पर एक कटोरी उलट दें और उस कटोरी के ऊपर यह पेड़ा मलमल के कपड़े में बांध कर 15 मिनट के लिए भाप में पका लें.

उस के बाद उसे सासेज की शक्ल में काट कर रख लें. जब भी चाहिए गरमगरम तल सकते हैं. तल कर रखने से बिगड़ जाते हैं.

छोलिया सास बनाने के लिए तीन चम्मच छोलिया दाने, थोड़ा नमक और एक छोटा चम्मच सिरके के साथ पीस लें. सिरके के स्थान पर नीबू का रस का प्रयोग भी हो सकता है.

ध्यान दें आलू का चूरा बनाते समय उस में संतरे का रस डालें, पानी नहीं.

—शक्ति मरवाहा

परिरक्षित टमाटर

सामग्री : 2 किलो लाल सख्त टमाटर, 2½ लीटर पानी, 2 ग्राम सोडियम बेंजोएट, 300 ग्राम नमक, 10 ग्राम सिट्रिक एसिड.

विधि : टमाटरों को धो कर पोंछ लें. पानी में सिट्रिक एसिड डाल कर दोतीन उबाल आने पर नमक मिला कर ठंडा होने रख दें. कस कर बंद होने वाले ढक्कन के बड़े भांड या मरतबान में टमाटर डाल दें. एक छोटा चम्मच पानी में सोडियम बेंजोएट घोल कर ठंडे किए हुए पानी में मिला कर पानी को टमाटरों के ऊपर तक भर दें. ढक्कन को कस कर बंद कर दें. जब टमाटर महंगे हों या बाजार से न ला सकें तो परिरक्षित टमाटर निकाल कर प्रयोग कीजिए. इस प्रकार आप मटर, गोभी, कमलककड़ी आदि अन्य सब्जियां भी परिरक्षित कर सकती हैं. —मधु गुप्ता●

मन दर्पण

मन के दर्पण में, रूप तेरा समाया है,
चाहत में तेरी, कुछ खोया कुछ पाया है.

हिरणी सी हैं चंचल आंखें,
कपोलों पर खिले गुलाब,
अधर तुम्हारे कमल की पांखें,
है हुस्न तुम्हारा लाजवाब.

नुपुरों की ध्वनि से, मन का द्वार खटकाया है,
चाहत में तेरी, कुछ खोया कुछ पाया है.

घनेरे केशों के बादल में,
मुख मयंक यूं हो गया,
प्रथम दर्शन पर ही तेरे,
मैं तुझ में ही खो गया.

झील सी आंखों में, प्रेमसागर लहराया है,
चाहत में तेरी कुछ खोया कुछ पाया है.

दशकों का ये प्रेम बंधन,
बंध जाएं हम दोनों,
कमी न रह जाए कहीं,
भावों को मेरे पहचानो.

सपनों की दुनिया में, नंदनवन सजाया है,
चाहत में तेरी कुछ खोया कुछ पाया है.

– शकुंतला राहांगडाले





अपने चेहरे की त्वचा पहचान कर देखभाल कीजिए

लेख ● हरजीत कौर

सुंदर, साफ व लावण्यमय त्वचा तो प्रत्येक स्त्री चाहती है परंतु इस की देखभाल में प्रायः लापरवाही बरती जाती है. फिर अधिकांश स्त्रियां यह भी नहीं जानतीं कि उन की त्वचा कैसी है? रूखी, तैलीय या संवेदनशील. इसलिए वे गलत प्रसाधनों तथा नुसखों का इस्तेमाल कर लेती हैं. परिणामतः त्वचा खराब हो जाती है. अतः उपचार करने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि आप की त्वचा किस किस्म की है.

सर्वप्रथम सादे पानी से चेहरा धोएं. फिर चेहरे के हर भाग यानी माथे, गाल, नाक, ठोड़ी पर एकएक टुकड़ा टिशू पेपर का रखें. बीचबीच में पेपर को हलकेहलके त्वचा पर दबाती रहें, यदि टिशू पेपर पर पेल के धब्बे दिखाई दे तो इस का अर्थ है कि त्वचा तैलीय है. यदि पेपर का कुछ भाग



चेहरे को सिर्फ साबुन पानी से धो कर ही साफ, स्वच्छ हुआ नहीं समझ लेना चाहिए. यदि आप चाहती हैं कि आप का चेहरा दमकता रहे तथा आप के चेहरे की त्वचा स्वस्थ रहे तो इस के लिए आप को कुछ विशेष बातें अमल में लानी होंगी.

तैलीय व कुछ भाग सूखा रहे तो यह मिलीजुली त्वचा है और यदि टिशू पेपर पर तेल के हलके से बिंदू हों तो यह सामान्य त्वचा कहलाएगी. यदि रूखी त्वचा होगी तो टिशू पेपर पर चिकनाई का कोई धब्बा नहीं आएगा और कागज प्रभावहीन रहेगा.

त्वचा किस प्रकार की दिखाई देती है:

तैलीय त्वचा

ऐसी त्वचा पर हमेशा तेल दिखाई देता है विशेषतया माथे, ठोड़ी व नाक के आसपास ध्यान से देखने पर त्वचा में छोटेछोटे छिद्र दिखाई देते हैं. ऐसी त्वचा पर किए गए मेकअप में बहुत चमक आती है परंतु दोतीन घंटे बाद त्वचा पर अधिक तेल आने से मेकअप खराब भी हो जाता है. तैलीय त्वचा पर मुंहासे भी अधिक निकलते हैं किंतु ऐसी त्वचा पर झुर्रियां देर से पड़ती हैं.

शुष्क त्वचा

यह त्वचा रूखी व कमजोर होती है व सर्दियों में त्वचा खुरदरी हो जाती है. इस त्वचा पर किए गए मेकअप में कोई चमक नहीं आती व धूप में आने पर रूखी त्वचा लाल भी हो जाती है.

मिलीजुली त्वचा

यह त्वचा कहीं से तैलीय व कहीं से रूखी दिखाई देती है व त्वचा में तनाव तथा कहींकहीं लकीरें रहती हैं. लगभग 35-40 वर्ष की उम्र की स्त्रियों की त्वचा ऐसी हो जाती है.

सामान्य त्वचा

यह त्वचा आदर्श मानी जाती है. इस में चेहरे पर ताजगी, आकर्षण व गुलाबीपन झलकता है और स्त्रियां हलका सा मेकअप कर के भी सुंदर दिखाई देती हैं. यह छूने में नर्म होती है. गरमियों में ऐसी त्वचा पर थोड़ा सा तेल आ सकता है व सर्दियों में तनिक शुष्क हो सकती है.

संवेदनशील त्वचा

यह त्वचा बहुत नाजुक होती है. इसे खुरदरे कपड़े से रगड़ने या अधिक साबुन लगाने से त्वचा पर चकत्ते से पड़ जाते हैं, त्वचा लाल हो जाती है. ऐसी त्वचा पर प्रसाधन भी कम माफिक आते हैं.

अपनी त्वचा की पहचान कर के ही उस की देखभाल कीजिए.

तैलीय त्वचा की देखभाल

इस त्वचा की उचित देखभाल करना

तैलीय त्वचा पर नियमित रूप से उबटन लगाने से चेहरे की त्वचा का तेल संतुलन बना रहता है.





मिलीजुली त्वचा की देखभाल करना थोड़ा कठिन होता है क्योंकि यह कहीं से रूखी व कहीं से तैलीय होती है. ▲

अत्यंत आवश्यक है. तैलीय त्वचा को दिन में तीनचार बार सैट्रीलैक, नीको, चंद्रिका या किसी भी औषधियुक्त साबुन से धोएं व तौलिए से थपथपा कर पोंछें. गरमियों में दिन में चेहरे पर एस्ट्रिजेंट लोशन, जो चेहरे पर तेल आने से रोकता है, लगाए रखें. तैलीय त्वचा के रोमछिद्रों को सिकोड़ने के लिए 'विचहेजल' उपयुक्त एस्ट्रिजेंट है. एस्ट्रिजेंट के स्थान पर टोनिंग लोशन भी इस्तेमाल किया जा सकता है.

चिकनी त्वचा की सफाई कच्चे दूध से करें. रुई में कच्चा दूध ले कर पूरा चेहरा, गरदन व कान साफ करें और फिर साबुन से धोएं. यह उपाय प्रतिदिन रात को करें. यदि मेकअप किया हो तो यह उपाय सोते समय अवश्य ही करें.

तैलीय त्वचा पर यह उबटन लगाएं. दो बड़े चम्मच बेसन में एक नीबू का रस, थोड़ा सा चंदन पाउडर व चुटकी भर हलदी मिला कर पानी से पेस्ट बनाएं. पेस्ट न गाढ़ी हो न पतली. इसे चेहरे व गरदन पर लगाएं. 10 मिनट बाद रगड़ कर उतारें व फिर सादे पानी से धो लें. यह उबटन हर दूसरेतीसरे दिन करें.

इस उबटन द्वारा बेसन त्वचा के तेल को सोख लेता है व त्वचा कांतिमय हो उठती है. सर्दियों में इस उबटन में तीनचार बूंदें सरसों का तेल मिला लें, क्योंकि तब त्वचा थोड़ी सी खुश्क हो जाती है.

10-15 दिन में एक बार यदि त्वचा को भाप दी जाए तो इस से रोमछिद्रों में छिपा मैल बाहर निकलता है, जिस से त्वचा साफ हो जाती है. भाप देने के बाद चेहरा पोंछ कर बर्फ लगाएं.

शुष्क त्वचा की देखभाल

जिन स्त्रियों की त्वचा शुष्क है, वे यदि इस की सही देखभाल न करें तो चेहरे की त्वचा लटक जाती है व जल्द ही झुर्रियां पड़ जाती हैं. शुष्क त्वचा पर मौसम का प्रभाव भी जल्दी पड़ता है. तेज हवा व तेज धूप से इसे बचाएं. शुष्क चेहरे को बारबार साबुन से न धोएं, केवल सादे पानी से धोएं. साबुन प्रयोग करना हो तो ग्लिसरीनयुक्त साबुन ही लगाएं. और यदि पानी खारा (नमकीन) हो तो उबाल कर ठंडा कर लें अन्यथा खारे पानी से त्वचा अधिक शुष्क हो जाती है. धोने के बाद चेहरा अधिक रगड़ कर न पोंछें.

सर्दियों में सारे दिन चेहरे पर मास्चराइजिंग लोशन लगाए रखें जो त्वचा को मुलायम बनाता है चेहरे पर कुछ चिकनाहट लाने के लिए गंधरहित रेंडी का तेल, बादाम रोगन या जैतून के तेल से रात्रि के समय मालिश करें. सुबह उठ कर अतिरिक्त तेल रुई से पोंछ कर ठंडे पानी के छींटें मारें.

शुष्क त्वचा के लिए मेकअप करते समय सारे प्रसाधन तेलयुक्त लें. जैसे, कोल्ड क्रीम, ग्लोगैटर, मास्चराइजरयुक्त फाउंडेशन, तरल रूज, क्रीमयुक्त आइशैडो इत्यादि. इन से त्वचा को चमक व कांति मिलती है, जिस से त्वचा आकर्षक दिखाई देती है.

भोजन में ऐसी चीजों का समावेश

करें, जिन में विटामिनों व प्रोटीन की भरपूर मात्रा विद्यमान हो.

सामान्य त्वचा की देखभाल

सामान्य त्वचा के लिए हमेशा सादे पानी से मुंह धोएं. सर्दियों में गुनगुने पानी से चेहरा धोया जा सकता है. चेहरा धोने के लिए हमेशा एक ही कंपनी का साबुन रखें. बारबार साबुन बदलने से त्वचा अधिक रूखी या तैलीय हो सकती है. प्रतिदिन सुबह या रात को सोते समय क्लीनजिंग मिल्क से चेहरा साफ करें व फिर साफ पानी से भलीभांति धो कर रोएंदार तौलिए से पोंछें.

सामान्य त्वचा पर हर तीसरेचौथे दिन यह उबटन लगाएं. एक चम्मच जौ का आटा, एक चम्मच बेसन, आधा चम्मच दूध, दो बूंद सरसों का तेल व थोड़ा सा पानी मिला कर चेहरे पर लगाएं. कड़ा होने पर मल कर छुड़ाएं. फिर गुनगुने पानी से धो लें. त्वचा निखर उठेगी.

यदि मेकअप करना हो तो हलका सा करें व रात को सोते समय वह मेकअप क्लीनजिंग मिल्क से जरूर उतारें. यदि सप्ताह में एक बार मेकअप न करें तो बेहतर है. इस से त्वचा स्वस्थ रूप से श्वास ले सकेगी.

मिलीजुली त्वचा

ऐसी त्वचा की देखभाल करना कठिन हो जाता है जो कहीं से रूखी हो व कहीं से तैलीय. अतः चेहरे पर ऐसे उबटन व लोशन लगाएं जिन में कुछ तैलीय तत्त्व हों जो त्वचा का रूखापन हटाएं व कुछ एल्कोहल की मात्रा हो जो अतिरिक्त चिकनाई वाले भाग की चिकनाई हटा सके, जिस से त्वचा संतुलित बने.

प्रतिदिन चेहरे पर नीबू, ग्लिसरीन व गुलाब जल की बराबर मात्रा मिला कर बनाया गया लोशन आधे घंटे तक लगाएं व फिर धो दें. चेहरे पर आलपरपज क्रीम का उपयोग भी अच्छा रहेगा.

चेहरा धोने के लिए अधिक गरम पानी प्रयोग में न लाएं. चेहरे पर साबुन लगाने की बजाय यदि यह उबटन प्रतिदिन लगाएं तो लाभप्रद रहेगा. मसूर की दाल को पोटेशियम परमैंगनेट में भिगो कर छाया में सुखा लें व इस का आटा पीस लें. प्रातः स्नान से पूर्व थोड़े से आटे में दही मिला कर चेहरे पर लगाएं व 10 मिनट बाद धो दें.

दिन में एकाध बार साबुन से चेहरा धोया जा सकता है व रात को सोने से पूर्व क्लीनजिंग मिल्क से साफ कर चेहरा सादे पानी से धोएं व हलका पोंछ लें.

अपने भोजन में विटामिन सी युक्त खाद्य पदार्थ अधिक लें.

संवेदनशील त्वचा

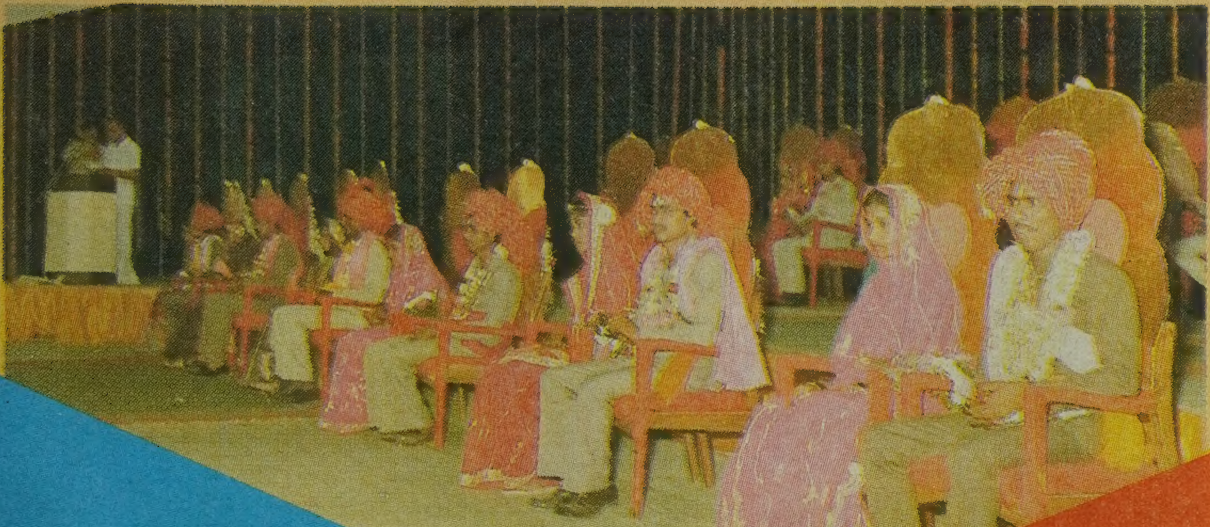
इस त्वचा पर पूरा ध्यान दें. जिन पदार्थों के खाने व चेहरे पर लगाने से एलर्जी हो, वे प्रयोग में न लाएं. बेबी सोप या कोल्ड क्रीम वाली साबुन से चेहरा धोएं व चेहरा रगड़ कर कदापि न पोंछें. कई बार खुरदरे तौलिए से ही त्वचा पर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं.

क्लीनजिंग क्रीम से त्वचा की प्रतिदिन सफाई करें.

सर्दियों में चेहरे पर लैनोलिन युक्त मास्चराइजर लगाएं. गरमियों में खरबूजे का रस चेहरे पर 15 मिनट लगा कर धो दें. यह चेहरे पर प्राकृतिक चमक लाता है. ध्यान रखें, चेहरे पर कोई भी ऐसा प्रसाधन प्रयोग न करें जिस में अधिक खुशबू व एल्कोहल तत्त्व हों. यदि 'ब्लीच' करना हो तो सावधानी से करें.

दूध व दूध से बनी चीजें, हरी सब्जियां व दालें भरभूर मात्रा में लें.

त्वचा किसी भी किस्म की हो, उस की दैनिक देखभाल आवश्यक है. साथ ही त्वचा की रक्षा के लिए नियमित व्यायाम, पूरी नींद, पौष्टिक आहार व कम से कम मानसिक तनाव की जरूरत होती है. इस के अतिरिक्त कब्ज न हो व रक्त शुद्ध रहे. फिर देखिए, अपने चेहरे का रूपरंग, आप स्वयं चकित रह जाएंगी. ●



लेख •
भारत भूषण श्रीवास्तव

सामूहिक विवाह की आड़ में

बैंक में कार्यरत एक युवक का कहना है, "जब मैं मुशकिल से 19 साल का था तब मेरी शादी एक भीड़भाड़ वाले समारोह में कर दी गई." अपना नाम गुप्त रखने के आग्रह के साथ उक्त युवक अपनी व्यथा बतलाता है, "मेरा वैवाहिक जीवन कभी सुखी नहीं रहा. एक बार मैं पत्नी की बदसूरती और निरक्षरता से समझौता कर सकता हूं लेकिन उस की फूहड़ता और बेहूदेपन से कतई नहीं."

थोड़े आक्रोश के साथ वह फिर कहता है, "तगड़े दहेज के लालच में, जो 'शायद' शादी के पहले ही ले लिया गया था, मेरे घर वालों ने मेरी जिंदगी को नरक बना दिया. हालत यह है कि उस समय उम्र और पारिवारिक दबाव के कारण विरोध नहीं कर सका और अब अपनी सामाजिक स्थिति और व्यवस्थाओं के कारण नहीं कर सकता."

सामूहिक विवाह बेशक कई दृष्टियों से अच्छे हैं. लेकिन आज उन की आड़ में जो विसंगतियां पनप रही हैं और हर धर्म, समाज के अग्रिम पंक्ति के लोगों ने अपना धंधा चला रखा है, उस का खुलासा समाज के सामने होना नितांत आवश्यक है. अन्यथा न जाने कितने युवक, युवतियां उक्त बैंक कर्मचारी की तरह समाज के इन दलालों की खोखली दलीलों के सामने घुटने टेक कर, घुट कर जीने को विवश होते

सामूहिक विवाह आदर्श विवाह माने जाते हैं, परंतु इन आदर्श बनाम सामूहिक विवाहों की आड़ में जो विसंगतियां पनप रही हैं, वे इन विवाहों का नकारात्मक पहलू भी सामने लाती हैं.

रहेंगे और ऐसे सामूहिक विवाहों पर आदर्श विवाह का ठप्पा लगा रहेगा. इसलिए सामूहिक विवाहों की आड़ में हो रहे अपराधों को जानना और ऐसे विवाहों का बहिष्कार होना जरूरी है. नहीं तो आगे चल कर इस के परिणाम व्यक्ति व समाज दोनों के लिए घातक होंगे.

सामूहिक विवाहों से पीड़ित अनेक युवकयुवतियां आप को हर जगह मिल जाएंगे. वैवाहिक जीवन में क्लेश के अतिरिक्त उन्हें यह बात भी सालती रहती है कि उन का विवाह भी धूमधाम से हो सकता था. लेकिन महज स्वार्थ और तथाकथित मितव्ययता के आदर्शों के कारण ऐसा नहीं हो सका.

जिस किसी ने भी सामूहिक विवाहों की शुरुआत की होगी, उस ने इस के दूरगामी दुष्परिणामों पर विचार नहीं किया होगा.

बाल विवाह/बेमेल विवाह :

सामूहिक विवाहों की आड़ में बड़ी खूबी से बाल विवाह हो रहे हैं, जिन के सामने दूरदर्शन के सरकारी विज्ञापन बौने नजर आते हैं. किसी भी समाज के सामूहिक विवाहों में चले जाइए, बरबस ही एकाध वरवधू को देख कर आप सोचने पर मजबूर हो जाएंगे कि अभी क्या जल्दी थी.

इस कुरीति से मेरा पहला साक्षात्कार एक मित्र के घर की महरी के माध्यम से हुआ. वह परित्यक्ता थी. उसी के शब्दों में, "हम तो बहुत छोटे थे बाबूजी, भाईभौजाई ने पालापोसा था. समाज के सामूहिक विवाहों में नाम लिखवा दिया. पति बहुत बड़ा था. शराबी भी था और मारतापीटता भी खूब था. फिर एक दिन घर से भगा दिया. अब इसी तरह दोचार घरों के काम कर अपना पेट पाल रही हूं."

उक्त समस्या की, एक जिंदगी के बरबाद हो जाने की जिम्मेदारी लेने वाला उस समाज में कोई नहीं. उक्त महिला कहीं कानूनन गुहार भी नहीं कर सकती. अगर करे भी तो उसे कहीं से न्याय नहीं मिलने



अधिकतर सामूहिक विवाहों में वरवधू निर्धन तबके के होते हैं. समाज का कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी संतान को इस 'तमाशे' में ब्याह रचाने की अनुमति नहीं देता. ▼



वाला क्योंकि वह गरीब है.

अधिकतर सामूहिक विवाहों में वरवधू निर्धन तबके के होते हैं. समाज का कोई संपन्न या प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी संतान को इस 'तमाशे' में ब्याह रचाने की अनुमति नहीं देता. हां, हजार, दो हजार का चंदा दे कर नाम हासिल जरूर कर सकता है और आशीर्वाद दे सकता है.

अलबत्ता दहेज किसी सीमा तक सामूहिक विवाहों में पनप नहीं पाया. वजह यही है कि लेने वाला भी गरीब और देने वाला भी गरीब. लेकिन कुछ मध्यमवर्गीय लोग अपनी संतानों का ब्याह सामूहिक रूप से रचा कर झूठी वाहवाही लूट लेते हैं. लेनदेन पहले ही हो चुका होता है.

मधुर की शादी में मैं पहली बार सामूहिक विवाहों से परिचित हुआ था. डाक्टरी पढ़ रहे मेरे मित्र ने वास्तव में एक आदर्श कदम उठाया था. लेकिन कई अव्यवस्थाएं मुझे वहां देखने को मिलीं. पानी, शौच, स्नान, तंबुओं में निवास आदि की अव्यवस्थाएं. यह तो सामूहिक विवाहों की मामूली समस्याएं हैं.

कई बार तो ऐसा देखने में आया है कि दूल्हा दुलहन बदल जाते हैं. भीड़ में बच्चे परेशान हो जाते हैं. भोजन पर लोग गिद्ध से टूट कर सारी व्यवस्था बिगाड़ देते हैं.

सामूहिक विवाहों में कई बार दूल्हा दुलहन बदल जाते हैं. भीड़ में बच्चे परेशान हो जाते हैं. किसी का सामान चोरी हो जाता है, तो किसी का बच्चा गायब हो जाता है. ▲

किसी का सामान चोरी हो गया तो किसी का बच्चा गायब हो गया. इन समस्याओं और अव्यवस्थाओं का कोई हल नहीं. क्योंकि कार्यकर्ता लोग अकसर अपनी जिम्मेदारी पूरी करने की बजाए अपने शौक पूरे करते नजर आते हैं.

सामूहिक विवाह की प्रक्रिया :

सामूहिक विवाहों की प्रक्रिया बड़ी सरल है. आयोजकों के समक्ष अभिभावक एक निश्चित रकम दे कर अपने लड़के या लड़की का पंजीयन करवा लेते हैं. निश्चित तिथि पर उन्हें तंबू की क्रम संख्या बता दी जाती है. विभिन्न समाजों में पंजीयन की रकम अलगअलग होती है. यह 101 रुपए से ले कर 5001 रुपए तक है. इस से अनावश्यक खर्चों की बचत तो अवश्य हो जाती है लेकिन इस लेख का उद्देश्य सामूहिक विवाहों की खूबियां न बता कर उन के कमजोर पहलुओं को उजागर करना है, ताकि उन समस्याओं का समाधान हो सके.

कटूक्तियां

एक वरिष्ठ पत्रकार का कथन है कि 'सभी गांधी, 'महात्मा' नहीं होते.' सोचने की बात यह भी है कि अगर सभी बिल्लियां हज करने चली जाएंगी तो...

*

लेखन के धंधे में तीन दिक्कतें हैं—ऐसा लिखना जो प्रकाशन योग्य हो, ऐसा प्रकाशक खोजना जो उसे प्रकाशित करे और ऐसे अक्लमंद लोगों को पाना जो उसे पढ़ें.

*

असली पड़ोसी वह है जो आप के विषय में आप से अधिक जानता हो.

*

विश्व में कोई भी स्त्री ऐसी नहीं होगी जैसी कि मेरी पत्नी—सिर्फ मेरी ही नहीं, मेरी पत्नी की भी यही राय है.

*

अपनी आय के अनुसार ही खर्च कीजिए, भले ही इस के लिए आप को कर्ज लेना पड़े.

*

पुराने पत्र पढ़ने का एक मजा यह है कि उन का जवाब देने की जरूरत महसूस नहीं होती.

*

आप का ऋणदाता आप के भले की सोचेगा और आप का ऋणी आप के बुरे की.

*

बुद्धिमान से दुश्मनी भी मूर्ख की दोस्ती से लाख गुना अच्छी है.

*

यह जरूरी नहीं कि रोजाना एक अच्छा काम किया जाए. किंतु यह जरूरी है कि बुरे काम से हमेशा बचा जाए.

विवाह के दोतीन दिन पहले वर व वधू पक्ष के लोग अपने तंबुओं में आ जाते हैं. विवाह की रस्में आरंभ हो जाती हैं. निश्चित तिथि पर विवाह संपन्न होता है. राजनीति से भी अछूते नहीं हैं, सामूहिक विवाह. अंत में विदाई के समय समाज का ही कोई 'बड़ा आदमी' अथवा सांसद, विधायक, मंत्री कार में आ कर नवदंपतियों को आशीर्वाद देता है, उन के सुखद वैवाहिक जीवन की कामना करता है. औपचारिक रूप से जलपान ग्रहण कर फर्राटे से चला जाता है.

निश्चित ही सामूहिक विवाहों में ऐसी नेतागिरी की न तो आवश्यकता है न कोई सार्थकता. मगर न जाने क्यों आयोजक यह ठप्पा लगवाना पसंद करते हैं. हो सकता है, इस में उन के निजी स्वार्थ जुड़े हों या अन्य समाजों के सामूहिक विवाहों के आयोजकों से प्रतिद्वंद्विता.

अंधविश्वासों से मुक्त नहीं :

प्रायः सामूहिक विवाहों के बारे में एक बड़े वर्ग की यह धारणा है कि वे रूढ़ियों, कुरीतियों और अंधविश्वासों से मुक्त हैं. यह सोचना सरासर गलत है. इन विवाहों में बाकायदा वे सभी रस्में पूरी की जाती हैं जो साधारण एकल विवाह में होती हैं. मसलन पैर पखराई, टीका लगा कर पैसे देना, दक्षिणा आदि. पंडित को प्रत्येक जोड़े से औसतन 100 रुपए तक की कमाई और इस से लगभग आधी नाई व अन्य घटकों को हो जाती है.

इस प्रकार यदि 21 जोड़ों का सामूहिक विवाह हुआ तो पंडित को 2100 रुपए के अतिरिक्त आयोजकों से तय की गई रकम अलग मिलती है. इसलिए पंडितों में भी एक प्रतियोगिता सी हो जाती है कि कौन कितने अधिक सामूहिक विवाह संपन्न करा कर जेब भर सकता है. बैंडबाजे, आतिशबाजी, लाउडस्पीकर, फिल्मी गानें सामूहिक विवाह की सार्थकता को झुठला देते हैं. ●



थी. किंतु इस बार खास कठिनाई यह थी कि गजनी का कोई भी सेनापति पंजाब की ओर कूच करने को तैयार नहीं था. उस ने अपने सभी बड़े सेनापतियों बेगतागदी सुबासी, हारुन, अजीज अरियारूक आदि से पूछा किंतु उन में से कोई भी हिंदुस्तान की तरफ कूच करने को तैयार न हुआ.

कहानी • वेद त्रिपाठी

नापित पुत्र

गजनी का सुलतान मसूद अपने महल के एक खास कमरे में बड़ी ही गमगीन मुद्रा में बैठा हुआ था. उस की चिंता का कारण था—पंजाब के सूबेदार अहमद नियालतगन द्वारा खुले तौर पर बगावत का झंडा उठा देना. वैसे तो गजनी के सुलतान के लिए बगावत कोई नई बात नहीं

फिर उस ने अपने शहजादों मजदूद, मदूद, इजादयार, अब्दुर्रशीद, फर्रूखजाद को टटोला, पर वे भी साफ मुकर गए. गरमी और बरसात के कारण वे सभी हिंदुस्तान जाने से घबरा रहे थे. उन का कहना था कि सुलतान को गरमी और बरसात खत्म होने तक इंतजार करना चाहिए और सर्दी प्रारंभ

सुलतान मसूद ने हिंदुस्तान में हुई बगावत को दबाने के लिए तिलक को चुना था, और तिलक प्रसन्न था क्योंकि उसे हिंदुस्तान से बदला लेना था. उसे लगा कि उस का चिर प्रतीक्षित स्वप्न अब पूरा होने वाला है.

होने पर ही हिंदुस्तान की तरफ कूच करने का हुक्म फरमाना चाहिए.

किंतु सुलतान मसूद सर्दी आने तक का इंतजार नहीं कर सकता था. उस के युद्ध मंत्री बू सहल जौजनी का कहना था कि यदि अहमद की बगावत को जल्दी ही नहीं दबाया गया तो हो सकता है कि सल्तनत के कुछ और भी सूबेदार बगावत कर बैठें.

स्थिति की नजाकत को समझते हुए सुलतान मसूद ने खुद ही हिंदुस्तान की तरफ कूच करने का फैसला किया किंतु उस के तजरबाकार वजीर ख्वाजा अहमद बिन हसन मैमंदी ने उस से नाइंसाफी करते हुए सलाह दी, "हुजूर, सल्जूक लड़ाके गजनी पर चीते की तरह घात लगाए बैठे हैं, इसलिए आप तो गजनी छोड़ने का खयाल भी दिल में न लाइए."

सब तरफ से मायूस होने पर सुलतान मसूद की निगाह अपने हिंदुस्तानी सेनापति तिलक पर जा टिकी. तिलक उस फौज का सेनापति था जो सुलतान के वालिद महमूद गजनवी द्वारा हिंदुस्तान पर लगातार 17 हमले करने के दौरान गठित की गई थी. हिंदुस्तान पर हमले के समय इस फौज ने जो वफादारी व बहादुरी दिखाई थी, सुलतान महमूद उस का कायल हो गया था. एक बार तो उस ने बड़े साफ शब्दों में कहा था, "मैं ने हिंदुस्तान पर हिंदुस्तानी फौजों के सहारे ही फतह हासिल की है. हिंदुस्तानी सिपाही मेरी कुल ताकत का ज्यादा नहीं तो कम से कम एकचौथाई हिस्सा तो हैं ही."

हिंदुस्तानी फौजों की बहादुरी और वफादारी का ध्यान आते ही सुलतान मसूद ने सेनानायक तिलक को ही पंजाब अभियान पर भेजने का निश्चय कर लिया, उस ने तुरंत एक हरकारे को तिलक को बुला लाने के लिए भेजा.

इधर हरकारा तिलक को बुला लाने के लिए रवाना हुआ, उधर सुलतान मसूद पुनः चिंता और दुख के सागर में गोते लगाने लगा. पंजाब के सूबेदार अहमद नियालतगन की गद्दारी को याद कर के उस का मन बारबार रो उठता था.

सुलतान को सर्वाधिक पश्चाताप इस बात का था कि जब पंजाब के समाचार वाहक बुल कासिम बुल हकम ने उसे पहलेपहल खबर भेजी कि अहमद के इरादे नेक नहीं हैं तो उस ने उस खबर पर कोई ध्यान नहीं दिया. यही नहीं पंजाब में उस के द्वारा नियुक्त प्रशासनिक अधिकारी काजी शिराजी ने भी जब अहमद के खिलाफ शिकायत भेजी तो उस ने उसे भी अनसुना कर दिया. उलटे उस ने काजी को डांट फटकार कर खत लिख दिया. यही नहीं उस ने अहमद को हिंदुस्तान के भीतरी हिस्से पर हमले करने और लूटने की भी इजाजत दे दी.

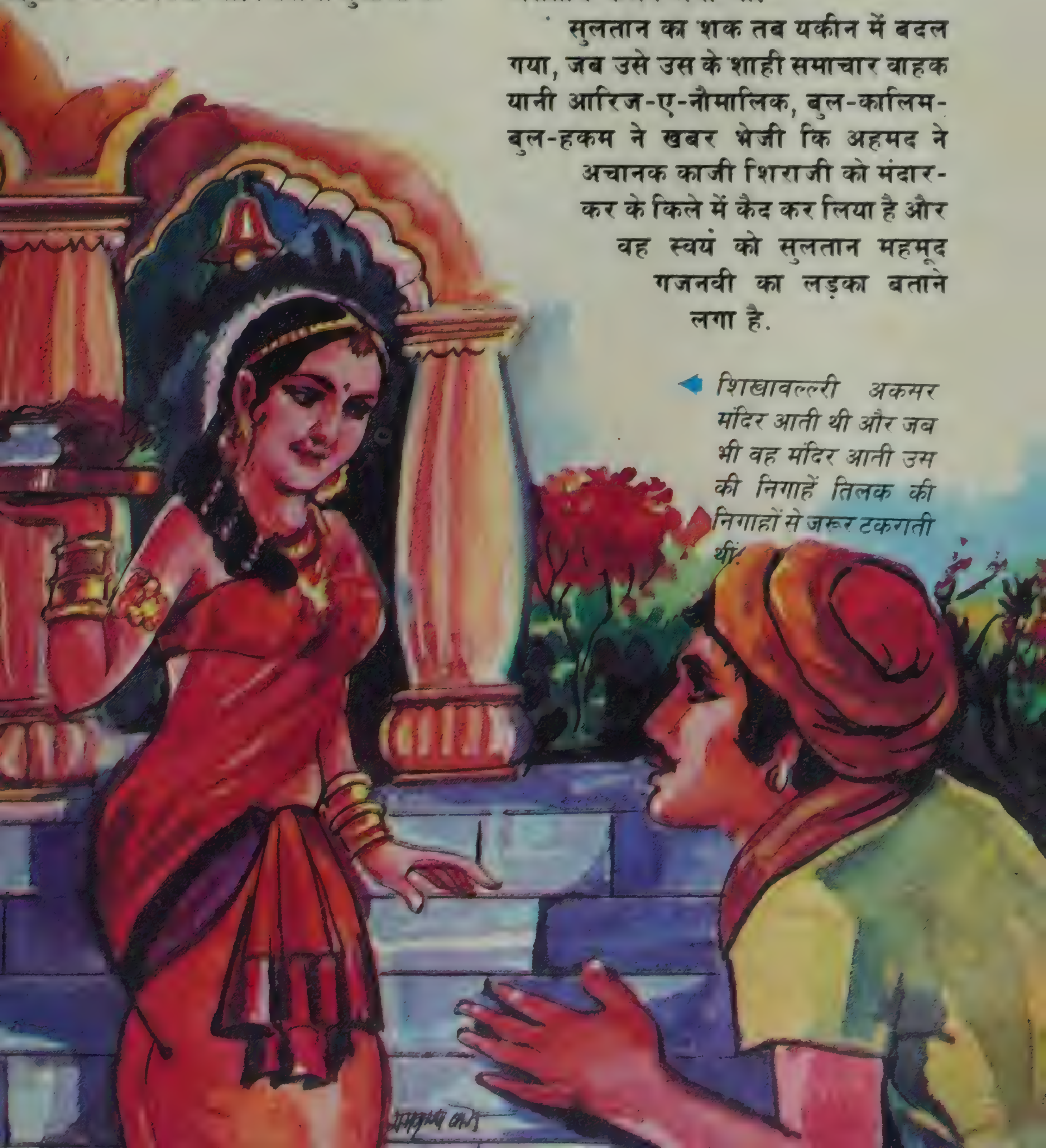
सुलतान मसूद को अहमद पर पहली बार तब शक हुआ, जब हिंदुओं के सब से पवित्र नगर काशी को लूटने के बाद भी अहमद ने बहुत थोड़ा ही माल गजनी भेजा, जबकि काजी शिराजी के द्वारा भेजे गए पैगाम में बताया गया था कि काशी के मंदिरों से तीन हजार सोने तथा 18 हजार चांदी की मूर्तियां बरामद की थीं. इन में से कुछ मूर्तियां तो इतनी विशाल थीं कि वे कांटे पर सीधे तुल भी नहीं सकती थीं, अतः उन को टुकड़ों में तोड़तोड़ कर तौला गया था. मूर्तियों के अलावा उन मंदिरों में पुश्तों से इकट्ठी की हुई असीम संपत्ति थी. किंतु अहमद द्वारा सुलतान को भेजी गई संपत्ति उस की तुलना में बहुत कम थी.

सुलतान मसूद को ध्यान आया कि जब उस के वालिद सुलतान महमूद ने सोमनाथ को जीता था तो इतनी मात्रा में सोनाचांदी और संपत्ति मिली थी कि उस को ढोने के लिए सवारियां तो कम पड़ ही गई थीं, बल्कि जो लाखों गुलाम पकड़े गए थे, वे भी कम पड़ रहे थे, ... फिर काशी में, जो सोमनाथ से कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी, इतनी कम संपत्ति कैसे हो सकती थी?

सुलतान को अहमद की हरकतें एकएक कर याद आ रही थीं. उसे यह भी ध्यान आया कि पिछले काफी समय से अहमद ने हिंदुस्तानी गुलामों को भेजना भी बहुत कम कर दिया था. जिस से गुलामों की मंडी में गुलामों के भाव काफी बढ़ गए थे, जबकि उस के वालिद सुलतान महमूद जब भी हिंदुस्तान से फतह कर के लौटते थे तो इतने गुलाम पकड़ कर लाते थे कि गजनी के बाजारों में गुलाम मिट्टी के मोल बिकते थे. हिंदुस्तान के गुलामों की तो गजनी में इतनी इफरात हो गई थी कि हसीन से हसीन हिंदू गुलाम लड़की, भेड़बकरी से भी चौथाई दामों में मिल जाती थी.

हिंदुस्तान से सोनाचांदी और गुलामों की आमद अचानक कम हो जाने के परिणामस्वरूप उन के भाव काफी बढ़ जाने से गजनी के सैनिकों और नागरिकों में असंतोष फैलने लगा था.

सुलतान का शक तब यकीन में बदल गया, जब उसे उस के शाही समाचार वाहक यानी आरिज-ए-नौमालिक, बुल-कालिम-बुल-हकम ने खबर भेजी कि अहमद ने अचानक काजी शिराजी को मंदार-कर के किले में कैद कर लिया है और वह स्वयं को सुलतान महमूद गजनवी का लड़का बताने लगा है.



◄ *शिखावल्लरी अकसर मंदिर आती थी और जब भी वह मंदिर आती उस की निगाहें तिलक की निगाहों से जरूर टकराती थीं.*

सुलतान विचारों के इसी भंवर में फंसा अपने को बुरी तरह कोस रहा था. उस के विचारों की श्रृंखला उस समय भंग हुई जब उस के दरबान ने खबर दी कि तिलक महल में आ चुका है और उस से रूबरू होने की इजाजत चाहता है.

सुलतान मसूद तो तिलक की प्रतीक्षा ही कर रहा था. अतः उस ने दरबान से तिलक को तुरंत अंदर लाने के लिए कहा. सेनानायक तिलक ने सुलतान के कक्ष में प्रवेश कर के उसे तीन बार झुक कर सलाम नजर किया तथा पुनः सुलतान के सामने लेट कर उस की कदम बोसी की और सिर झुका कर खड़ा हो गया.

सुलतान ने तिलक को निकट बैठने को कहा तथा उसे अपने पास बुलाने का कारण समझाया.

तिलक ने जैसे ही यह सुना कि सुलतान ने उसे पंजाब अभियान पर भेजने का निश्चय किया है तो वह प्रसन्नता से फूला न समाया. गजनी के सुलतान का अपने ऊपर इतना भरोसा देख कर वह इतना गद्गद् हो गया कि उसे कुछ बोलना भी मुशकिल लगने लगा. बड़ी कठिनाई से उस ने सुलतान से कहना प्रारंभ किया.

''जहांपनाह, आप का मेरे ऊपर इतना भरोसा यकीनन मेरी जिंदगी की सब से बड़ी चीज है. मेरे लिए इस से ज्यादा फख्र की और क्या बात होगी कि आप मुझे ऐसी फौज का सेनापति बना कर भेज रहे हैं जिस में बहुत से तुर्की सिपाही तथा सिपहसालार भी होंगे. उन की सदारत का मौका मुझे मिलेगा, ऐसा तो मैं ने कभी ख्वाब में भी नहीं सोचा.

''हुजूर, आप मुझ पर यकीन करें, जब भी आप मुझे हुक्म देंगे, मैं पंजाब की ओर कूच कर दूंगा. मैं हुजूर को यह भी भरोसा दिलाता हूं कि अगर मैं अहमद नियालतगन की खोपड़ी कलम कर के आप को भेंट न कर सका तो फिर मैं गजनी में कदम भी न रखूंगा. हुजूर यकीन रखें कि आप ने मुझे जो इज्जत बख्शी है, मैं आप को उस के काबिल बन कर दिखाऊंगा.''

तिलक की ये बातें सुन कर सुलतान की खुशी का ठिकाना न रहा. जब सभी तुर्की सेनापति अपने फर्ज से पीछे हट रहे थे तो तिलक का इस प्रकार से भरोसा दिलाना सुलतान को ऐसा लगा जैसे उस के सामने कोई फरिश्ता आ गया हो. यद्यपि तिलक के प्रति उस का मन अहसान से भर गया. फिर भी पहले तिलक उस का एक निचले दर्जे का हिंदुस्तानी सिपहसालार ही था. अतः उस ने अपनी प्रसन्नता तथा कृतज्ञता के भावों को बड़ी चालाकी से मन में छिपा लिया.

सुलतान ने तिलक को समझाया कि वह अपने नेतृत्व वाली हिंदुस्तानी सैनिकों की फौज के अतिरिक्त एक टुकड़ी हबशी और एक टुकड़ी तुर्की सैनिकों की भी साथ ले कर जुम्मे से पहले ही पंजाब की तरफ कूच कर दे. उस ने यह भी हुकम दिया कि अहमद को जिंदा या मुरदा जैसा भी संभव हो, उस के सामने पेश करे.

अब तिलक सुलतान मसूद की हिंदुस्तानी फौज का सर्वोच्च सिपहसालार था. उस ने अपनी जिंदगी में बहुत से उतारचढ़ाव देखे थे. उस का जन्म हिंदुस्ताव के श्रीरंगपुर नामक गांव में एक नाई के घर पर हुआ था. यही वजह थी कि लोग उसे नापित पुत्र कहते थे. उस का पिता श्रीरंगपुर के ही शिव मंदिर में मुंडन का काम करता था. बचपन में जब उस का पिता मंदिर में मुंडन का काम करने जाता था तो तिलक भी उस के साथ हो लेता था. मंदिर पर दूरदूर से बड़ेबड़े लोग अपने बच्चों का मुंडन कराने आते थे. इन लोगों के ठाटबाट को देख कर तिलक हक्काबक्का रह जाता था.

जब धनी लोगों के बच्चों का मुंडन होता था तो वे घोड़े पर बैठ कर लाए जाते थे. मुंडन के पश्चात उन्हें स्नान करा के जब कीमती पोशाकें पहनाई जाती थीं तो तिलक उन्हें ललचाई नजर से देखा करता था. वह सोचता था, आखिर इन बच्चों में ऐसी क्या खास बात है कि ये इतने ठाटबाट का जीवन

जी रहे हैं जबकि उस के पास पहनने के लिए एक लंगोटी के सिवा कुछ भी नहीं है.

मंदिर में एक पाठशाला भी थी. वहां ब्राह्मण तथा क्षत्रिय बच्चों को पढ़ते देख कर उसे भी पढ़ने की इच्छा हुई. किंतु जब उस ने अपने पिता से पढ़ने की इच्छा जाहिर की तो उस ने उसे बुरी तरह झिड़कते हुए कहा, "पढ़नेलिखने का काम तो ब्राह्मण-क्षत्रियों का होता है, हम लोगों का नहीं. हम लोग तो नाई हैं. हमें तो सारी जिंदगी यही मुंडन करना है."

"सारी जिंदगी यही नाई का काम! किंतु क्यों? क्या ब्राह्मणक्षत्रियों की तरह हमारे भी दो हाथ, दो पैर, दो आंखें, एक नाक नहीं है? आखिर हम में कमी क्या है?"

"कमी! कमी यही है कि तू मेरे घर में पैदा हुआ है. एक नाई के घर, किसी ब्राह्मण या क्षत्रिय के घर नहीं."

"किंतु आप नाई क्यों हैं?"

"इसलिए कि मेरा पिता भी नाई था."

"किंतु आप के पिता भी नाई क्यों थे? वह कुछ और क्यों नहीं हुए?"

"इसलिए कि उन के पिता भी नाई थे."

"आखिर ऐसा कब से चला आ रहा है, बापू."

"तिलक, तू कब तक ऐसे ही सवाल जवाब करता रहेगा. तू चुप क्यों नहीं रहता? कह दिया न कि यह हमारा पुश्तों का पेशा है." पिता ने अब की बार तिलक को कुछ ऊंची आवाज में झिड़कते हुए कहा.

किंतु तिलक स्वभाव से कुछ हठी और दुस्साहसी था. वह पिता की डांट से जरा भी विचलित न हुआ बल्कि दृढ़ आवाज में बोला, "पर मैं नाई नहीं बनूंगा, मैं तो क्षत्रिय बनूंगा और तीरतलवार चलाऊंगा."

यह कह कर तिलक अपने पिता के पास से हट कर खेलने लगा. उस के खेलने का ढंग भी अपनी जाति के बच्चों से भिन्न था. उस ने बांस और सरकंडे के धनुषबाण बना लिए थे. जिन से वह बाण चलाने का निरंतर अभ्यास करता था. उस का निशाना गजब



शक

भीगी पलकों से
टपकते आंसू देखे
दुलहन की हंसी
चीख में बदलती देखी,
देखता हूं शक की
निगाह से सब को मैं
मैं ने अपनों की
नीयत बदलती देखी.

—सुरेशकुमार गोयल

का था.

यही नहीं उस ने नकली तलवारों, ढालों तथा गदा का प्रयोग कर के युद्ध की तमाम कलाओं को सीख लिया था. यह सब वह तब चुपचाप ब्राह्मणों व क्षत्रियों के बच्चों को देख कर सीखता, जब वे बच्चे मंदिर में युद्ध कला सीखते थे. तिलक की बुद्धि विलक्षण थी तथा उस में सीखने की अदम्य इच्छा थी. अतः उसे इन सब विधाओं को दूर से देख कर सीखने में भी कोई कठिनाई न हुई.

नकली हथियारों से अभ्यास करते-करते तिलक सभी हथियारों को चलाने में माहिर हो गया. उस में गजब का साहस भी था. वह अकसर जंगल में शिकार खेलने जाता था तथा शेर, चीते, बघेरों को मिनटों में मार गिराता था. उस ने अपनी महारत को कभी जंगल के बाहर प्रकट न होने दिया क्योंकि वह जानता था कि ऐसा करना ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों से बैर मोल लेना है.

फिर भी एक दिन ऐसी घटना हो गई

> ## बुजदिली
>
> हर दफे दिखावे और नाम की खातिर छाती ठोक कर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना परले दरजे की बुजदिली है. —पूर्णसिंह

जिस से उस के साहस तथा वीरता का डंका केवल उस के ताल्लुके श्रीरंगपुर में ही नहीं बल्कि आसपास के तमाम गांवों और ताल्लुकों में भी गूंज उठा.

हुआ यह कि संध्या के समय श्रीरंगपुर ताल्लुके के ताल्लुकेदार गगनपाल की षोडशी कन्या शिखावल्लरी, अपनी मां के साथ श्रीरंगपुर के मंदिर में पूजा करने जा रही थी कि तभी एक खूंखार बघेरे ने उस पर हमला कर दिया. कन्या के साथ यद्यपि दो लठैत चल रहे थे, किंतु वे इस अप्रत्याशित आक्रमण से सहम कर दूर खड़े हो गए. तिलक ने जैसे ही यह दृश्य देखा उस ने अपने पिता के हाथ से उस्तरा छीन कर बघेरे पर आक्रमण कर दिया.

तिलक ने बड़ी होशियारी से पहले ही वार में बघेरे की आंखें फोड़ दीं और उछल कर उस की पीठ पर सवार हो गया. अंधा हो जाने के कारण बघेरा इधरउधर दौड़ता और पेड़ों तथा दीवारों से टकराता. तिलक उस की पीठ पर सवार मस्त हो कर उसे इधरउधर दौड़ता और लोगों को तमाशा दिखाता.

उस का वह साहस देख कर ताल्लुके के सभी लोग हैरत में पड़ गए. शिखावल्लरी जो दहशत के कारण लगभग बेहोश हो चुकी थी, इस दृश्य को देख कर अत्यंत आनंदित हो उठी.

थोड़ी ही देर में शिखावल्लरी का पिता गगनपाल तथा उस के परिवार के लोग भी आ गए. आश्चर्य की बात थी कि उन्होंने तिलक को धन्यवाद देने की बजाय उसे घृणा की दृष्टि से देखा. उन्हें लड़की के बचने की खुशी से ज्यादा दुख इस बात का था कि उन की लड़की को नाई के लड़के ने स्पर्श कर लिया.

तिलक ने शिखावल्लरी को तो बघेरे का शिकार होने से बचा लिया किंतु वह स्वयं शिखावल्लरी की हसीन निगाहों से घायल हो गया. बघेरे से बचने के बाद अपने पिता के साथ घर लौटने के बीच वह बारबार तिलक की ओर कृतज्ञता तथा प्रेम की मधुर निगाहों से निहारती रही. शीघ्र ही तिलक को अनुभव हुआ कि वे भाव भरी आंखें बेतरह उस का पीछा करने लगी हैं. सोतेजागते, उठतेबैठते, चलतेफिरते हिरनी सी वे दो आंखें उसे अपने साथसाथ ही चलती नजर आती थीं.

शिखावल्लरी अकसर मंदिर आती थी और जब भी वह मंदिर आती उस की निगाहें तिलक की निगाहों से जरूर टकराती थीं. उस से निगाहें मिलते ही तिलक होशोहवास खो बैठता था. वह अच्छी तरह जानता था कि शिखावल्लरी एक क्षत्रिय ताल्लुकेदार की लड़की है और वह साधारण नाई का बेटा. उसे मालूम था कि यदि किसी दिन वह शिखावल्लरी को देखते हुए भी पकड़ा गया तो उस का परिणाम साधारण मृत्यु से भी भयानक होगा. फिर भी उस का किशोर मन किसी भी तरह शिखावल्लरी की तरफ से न हटता था. जबतब वह गगनपाल की हवेली की तरफ भी जाने लगा. हवेली की खिड़की से जब भी उसे शिखावल्लरी के दर्शन हो जाते, वह अपना जीवन धन्य मान लेता था. धीरेधीरे दोनों ने एक निश्चित समय बांध लिया. उषाकाल में जब अधिकांश लोग सोए होते या अपने प्रातःकालीन कार्यों में व्यस्त होते, तिलक शिखा की हवेली के सामने से गुजरता, शिखा भी उसी समय अपनी खिड़की पर आ जाती और दोनों एकदूसरे को देख कर अपने नेत्रों की प्यास बुझा लेते थे. अभी तक दोनों ने एकदूसरे से आधा शब्द भी न बोला था, किंतु आंखों की भाषा से दोनों ने एकदूसरे को संपूर्ण प्रेम शास्त्र सुना दिया था.

किंतु जैसा कि अकसर होता है, तिलक का प्रेम भी छिप न सका. एक दिन जब वह हवेली के सामने ताकझांक कर रहा था, पकड़ में आ गया. शिखावल्लरी के पिता गगनपाल ने उसे तथा उस के पिता को घर से पकड़वा लिया. उन्हें रस्सियों से बांध कर गगनपाल के सामने पेश किया गया.

तिलक अदम्य साहसी तथा इरादे का पक्का था. जब उस से हवेली में ताकझांक करनेके विषय में पूछा गया तो उस ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया कि वह शिखा-वल्लरी से प्रेम करता था तथा उस से विवाह का भी इच्छुक था. उस ने दावा किया कि वह शिखावल्लरी के लिए सर्वथा योग्य वर था. उस ने खुलेआम चुनौती दी कि यदि कोई युवक उस से किसी भी प्रकार की लड़ाई में जीत जाएगा तो वह शिखावल्लरी से विवाह का प्रस्ताव हमेशा के लिए वापस ले लेगा तथा कोई भी सजा भुगतने के लिए तैयार हो जाएगा. उस ने हाथ उठा कर उच्च स्वर में पूछा, "आखिर मुझ में कमी हीं क्या है सिवाए इस के कि मैं एक नाई का बेटा हूं."

पुरूषोचित साहस का परिचय देते हुए उस ने शिखावल्लरी को बिलकुल बेदाग रखा. उस ने यह भी नहीं बताया कि शिखा को उस के प्रेम की जानकारी भी थी.

एक नाई के पुत्र से अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव सुन कर गगनपाल क्रोध एवं घृणा से धधकने लगा. उस ने तिलक तथा उस के पिता को गरम सलाखों से गुदवाया. उस का इरादा तिलक को तड़फातड़फा कर मारना था, किंतु साहसी तिलक चालाकी से गगनपाल की कैद से छूट कर भाग निकला.

तिलक भागतेभागते कशमीर पहुंचा. वहां आ कर उस ने अपनेआप को ब्राह्मण घोषित कर दिया तथा शस्त्र एवं शास्त्रों का गहन अध्ययन किया. उस ने तमाम भाषाओं में भी पारंगतता प्राप्त कर ली. उस की प्रखर बुद्धि, साहस, वीरता, कर्मठता एवं सुंदरता देख कर सब दंग रह जाते. उस के व्यक्तित्व को देख कर किसी को कभी संदेह



"अरे साब, चुनाव में आप की जमानत भी जप्त हो गई... मुझे बख्शीश मिलेगी या नहीं..."

भी न हो सका कि वह ब्राह्मण का नहीं बल्कि एक नाई का बेटा था.

कश्मीर में अपनी शिक्षादीक्षा पूरी करने के बाद वह गुप्त रूप से अपने गांव श्रीरंगपुर आया. श्रीरंगपुर देखने में तो बहुत कुछ वैसा ही था, जैसा वह कई वर्षों पूर्व छोड़ कर गया था. मंदिर वहीं ज्यों का त्यों खड़ा था. किंतु तिलक को जब यह पता चला कि गगनपाल ने उस के पिता को तड़फातड़फा कर मार दिया और शिखावल्लरी का विवाह उस ने पास के ताल्लुके रामला में शक्तिपाल नामक क्षत्रिय से कर दिया, तो वह बुरी तरह से टूट गया. अपने पिता और शिखावल्लरी के बिना उसे ऐसा लगा जैसे श्रीरंगपुर के शरीर से जान निकल गई है और वह जीवन शून्य हो गया है.

तिलक ने श्रीरंगपुर तुरंत छोड़ दिया. वह वहां से कहीं बहुत दूर निकल जाना चाहता था.

अंततः उस ने पश्चिम की ओर जाने का निश्चय कर लिया. लाहौर पहुंच कर उस ने सर्वप्रथम वहां के काजी शिराजी के यहां नौकरी की. यहीं उसे अपनी प्रतिभा दिखाने का पहला अवसर मिला. उस की अपूर्व सुंदरता, सूझबूझ और वीरता देख कर गजनी के वजीर ख्वाजा अहमद बिन हसन मैमंदी ने उसे अपना दुभाषिया बना लिया. वजीर ख्वाजा शीघ्र ही उस से अत्यंत प्रभावित हो गया. तिलक उस का इतना विश्वासपात्र बन गया कि वह उसे अपने पुत्र की तरह मानने लगा. उस ने तमाम नाजुक मामले सुलझाने में ख्वाजा की काफी मदद की.

किंतु कुछ दिनों बाद वजीर ख्वाजा मैमंदी का पतन हो गया. ख्वाजा के पतन से तिलक को कुछ समय के लिए झटका अवश्य लगा लेकिन अब तक सारा गजनी उस की प्रतिभाओं से परिचित हो चुका था. खुद सुलतान महमूद गजनवी की निगाह भी उस पर थी. सुलतान महमूद की सब से बड़ी विशेषता भी यही थी कि वह प्रतिभाशाली व्यक्तियों की तुरंत पहचान कर लेता था और उन्हें उन के योग्य पद पर प्रतिष्ठित कर के उन का भरपूर प्रयोग करता था.

तिलक को भी महमूद ने अपनी हिंदुस्तानी सेना में पद पर आसीन कर दिया. वह सुलतान महमूद के साथ उस के विभिन्न सैन्य अभियानों पर जाने लगा. इन अभियानों पर उस ने जिस प्रचंड वीरता तथा साहस का प्रदर्शन किया, उस से प्रभावित हो कर सुलतान महमूद ने उसे हिंदुस्तानी सेना का उप सेनानायक बना दिया. हिंदुस्तानी सेना में अब उस का स्थान सर्वोच्च सेनानायक सौयंद राय के बाद दूसरा हो गया. इन्हीं अभियानों के दौरान वह सुलतान महमूद के सब से बहादुर बेटे मसूद के अति निकट आ गया.

सुलतान महमूद की मृत्यु के बाद उस के दो जुड़वां बेटे मुहम्मद तथा मसूद में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष छिड़ गया. सुलतान महमूद को अपने कविहृदय तथा नेक बेटे मुहम्मद से अधिक प्यार था. अतः उस ने वसीयत मुहम्मद के पक्ष में लिखी. वह अपने अमीरों और सिपहसालारों के नाम एक फरमान भी छोड़ गया. जिस पर खलीफा की भी स्वीकृति थी. इस फरमान में सुलतान महमूद ने स्पष्ट रूप से मुहम्मद को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था. अतः गजनी के अमीरों और सरदारों ने मुहम्मद को ही गजनी का सुलतान घोषित कर दिया.

सुलतान महमूद की मृत्यु के समय शहजादा मसूद खुरासान में था. मुहम्मद को सुलतानी मिलने की खबर सुन कर वह बहुत दुखी हुआ. उसे यह सोच कर भारी पीड़ा हुई कि सारे सैनिक अभियानों पर सुलतान महमूद के साथ रहने तथा वीरता प्रदर्शित करने के बावजूद उस के वालिद ने मुहम्मद को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया. वह अपने खेमे में दुखी और मायूस बैठा अपनी हालत पर पछता रहा था कि तिलक ने उसे सलाह दी, "परवरदिगार, आगे

बढ़िए, राजगद्दी के फैसले फरमान से नहीं तलवारों से होते हैं."

यह सुनते ही मसूद की आंखों में चमक आ गई. उस ने गजनी की ओर कूच करने का ऐलान कर दिया.

गजनी के सरदार, शहजादे मसूद की बहादुरी और ताकत के कायल थे. सारी गजनी में उस की वीरता के चरचे हुआ करते थे. उस के बारे में प्रसिद्ध था कि उस की गदा कोई एक हाथ से नहीं उठा सकता. भाले चलाने में भी उस का कोई सानी नहीं था. किंतु वह अपने पिता सुलतान महमूद की तरह चालाक, कुटनीतिज्ञ और व्यवहारकुशल नहीं था. यही वजह थी कि उत्तराधिकार के मसले पर अपने पिता को अपने पक्ष में नहीं कर पाया था.

शहजादे मसूद के गजनी की तरफ बढ़ने की खबर फैलते ही गजनी में हलचल मच गई. कई चालाक सरदार यह ताड़ गए कि देरअबेर गजनी को मसूद की ही गोद में जाना है. अतः बेहतर है कि वे पहले ही मसूद के प्रति अपनी वफादारी घोषित कर दें. ये सरदार अंदर ही अंदर सुलतान मुहम्मद को गद्दी से उतार कर मसूद को सुलतान बनाने की साजिश में जुट गए.

अंततः एक दिन बगावत की यह सुगबुगाहट उस समय उफान में बदल गई जब सुलतान मुहम्मद के दो खास सिपहसालार अबुन नज्म अहमद अयाज और अजी दयाह ने गुलामों के गुट को साथ ले कर बगावत कर दी. उन्होंने दिनदहाड़े अस्तबल से घोड़े खोल लिए और सुलतान मुहम्मद के महल की ओर झपटे. किंतु हिंदुस्तानी फौज के नायक सौयंद राय ने उन्हें महल की सीढ़ियों पर ही रोक लिया. इस भयानक मारकाट में सौयंद राय मारा गया किंतु वह बगावती सैनिकों को महल से खदेड़ने में कामयाब हो गया.

महल में प्रवेश करने में असफल होने से विद्रोही सिपहसालार अहमद अयाज और अली दयाह घबरा गए. वे गुलामों की इस विद्रोही फौज को ले कर नेशापोर की तरफ भागे.

शहजादा मसूद भी खुरासान से बढ़ता हुआ अब तक नेशापोर तक आ चुका था. अहमद अयाज और अली दयाह जब वहां पहुंचे तो मसूद ने उस का भव्य स्वागत किया.

दो नए सिपहसालार तथा गुलामों की फौज के आ जाने से मसूद का उत्साह काफी बढ़ गया. वह तेजी से आगे बढ़ा और उस ने हैरात में अपना खेमा जमा लिया.

इधर शहजादे मसूद के निरंतर आगे बढ़ने की खबर से सुलतान मुहम्मद घबरा गया. वह एक विशाल सेना ले कर अपने भाई शहजादे मसूद का सामना करने के लिए आगे बढ़ा.

सुलतान मुहम्मद ने गजनी से प्रस्थान करने के बाद टकीनाबाद में पड़ाव डाल दिया. यहां उस ने रमजान का एक पूरा महीना बिताया. उस के सरदार उसे आगे बढ़ कर जल्द से जल्द मसूद पर हमला करने को उकसाते रहे. किंतु कविहृदय तथा दार्शनिक प्रवृत्ति का सुलतान मुहम्मद इस से लगातार कतराता रहा.

सुलतान मुहम्मद के इस प्रकार कतराने से उस के सिपहसालारों में असंतोष बढ़ने लगा. उन सब ने आपस में सलाह की तथा सुलतान मुहम्मद से छुटकारा पाने का निश्चय कर लिया.

इन सभी सरदारों ने ईद के ठीक दो दिन बाद विद्रोह की योजना बनाई.

—क्रमशः

विदेश नीति

अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से विदेश नीति शासित नहीं होनी चाहिए, अपितु विदेश नीति को अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को शासित करना चाहिए.

—नेपोलियन बोनापार्ट



कहानी • आशा वर्मा

एक और जूलियट

"मेरी मां बहुत खराब हैं." दरवाजा खोलते ही मेरी सहेली नीलम ने कहा और धम से सोफे पर बैठ कर रोने लगी. टोस्ट का टुकड़ा मुंह में डालते हुए मेरी मां और मैं उस की तरफ अवाक ताकती रह गईं.

मां उठ कर नीलम के पास सोफे पर जा बैठीं और चुपचाप उस का सिर सहलाने लगीं. लेकिन नीलम और जोर से रोने लगी. मां का इशारा पा कर मैं ने पानी का गिलास

"मेरी मां बहुत खराब है." नीलम यह कह कर फिर रोने लगी. टोस्ट का टुकड़ा हाथ में लिए मैं मेरी मम्मी उस की तरफ अवाक ताकते रह गए.



नीलम खुद को 'जूलियट' और राजेश को 'रोमियो' मान कर ही प्रेम दीवानी हो रही थी. किंतु जब रोमियो की असलियत सामने आई तो जूलियट का सारा प्रेम काफूर हो गया.

उस के होंठों से लगाना चाहा तो उस ने इस अंदाज से हटाया, मानो कह रही हो कि अब जीने की इच्छा ही नहीं तो भला पानी क्या पीना.

मां ने मेरे हाथ से गिलास ले कर उस के होंठों से लगाते हुए कहा, "पी लो, बेटे, तुम अच्छा महसूस करोगी."

"ओह, चाचीजी, आप बहुत अच्छी हैं, बहुत समझदार हैं." दो घूंट पानी पी कर वह और जोर से रोने लगी मानो मेरी मां का अच्छा और समझदार होना ही उस के रोने का कारण हो. यह मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा. नीलम मेरी प्यारी सहेली जरूर थी, पर मेरी मां के ऊपर कोई बात आए, यह भी मुझे बरदाश्त नहीं था.

"क्या बात है बेटी." मां ने नीलम की पीठ सहलाते हुए शांत स्वर में पूछा.

"मेरी मां बहुत खराब औरत है. एक मां की जगह मेरे दो बाप होते तो अच्छा था." नीलम गुस्से से चीखी.

"पगली." मां ने हंस कर उस के आंसू पोंछे.

"चाची, मैं वास्तव में बहुत गंभीर हूं." वह सुबकते हुए बोली.

"इस उम्र में हर बात गंभीर ही होती है. पर बात क्या हुई है, यह तो बताओ." मां ने पूछा.

"मां मुझे राजेश से शादी नहीं करने देंगी."

"यह तो सचमुच गंभीर बात है." मां गंभीर स्वर में बोलीं.

"यह राजेश है कौन?" मैं ने पूछा.

"मेरा प्रथम और अंतिम प्यार." उस ने यों आंखें मूंद लीं, मानो इस के बाद उसे दुनिया देखने की ख्वाहिश ही न बची हो.

प्रेम का चक्कर चाहे, अपना हो या पराया, एक खास उम्र में हर लड़की के मन में गुदगुदी पैदा करता है. उस समय मैं ने भी इस गुदगुदी का अनुभव किया और पूछा, "क्या मैं उस से मिली हूं?"

"कहां से मिलोगी? मैं खुद उस से पिछले सप्ताह ही मिली थी."

"लड़का कैसा है?" मां ने पूछा.

"ओह चाचीजी, वह बहुत सुंदर है. महान है, राजाओं का राजा है."

"अच्छा," मां ने उसी गंभीरता से कहा. नीलम के आदर्श पुरुष के वर्णन पर उन्होंने न आश्चर्य व्यक्त किया न अविश्वास.

"मेरी मां कहती हैं कि मैं कृष्णा चाची के बेटे से शादी कर लूं." उस ने ऐसे मुंह बनाया, जैसे रसगुल्ले की जगह उसे मिट्टी का लड्डू खाने को मजबूर किया जा रहा हो.

"कृष्णाजी बहुत अच्छी महिला हैं. मैं उन्हें जानती हूं." मां ने धीरे से कहा.

"उन का बेटा भी बहुत अच्छा होगा." नीलम ने मुंह बिचका कर कहा, मानो बेटे का अच्छा होना उस की अच्छाई नहीं बुराई हो.

"तो तुझे एतराज क्या है?" मां ने पूछा.

"वह जो अच्छा लड़का है न, सिर्फ अपनी मां की पसंद से ही शादी करेगा." नीलम ने तिरस्कारपूर्वक कहा.

"इस में बुरा क्या है?" मां ने सवालिया निगाहों से उस की ओर देखा.

"ऐसे मां के पिट्ठू से कौन शादी करेगा जो सारा जीवन 'मांमां' करता मिनमिनाता रहेगा. मैं असली मर्द से शादी करना चाहती हूं."

"तेरी समझ में असली मर्द के क्या लक्षण हैं, नीलम?"

"ओह चाचीजी, उस को ऐसा होना चाहिए कि वह राजाओं का राजा दिखे, उस की पसंद सब की पसंद हो. वह हंसे तो सारी दुनिया उस के साथ हंसे. उस का खुला दिल और खुला हाथ हो. रुपया उस के हाथों की मैल हो. दोस्तों पर दिल और दौलत दोनों लुटा सकता हो."

"तेरे विचार में राजेश में ये सब गुण हैं?"

"ओह हां." उस ने दोनों हाथ अपने दिल के पास बांध लिए.

"तब तो तुझे राजेश से ही ब्याह करना चाहिए." मां बोलीं.

"यह क्या कह रही हो मां? इस की मां इस का खून कर देंगी. वह बहुत सख्त हैं." मैं ने घबरा कर कहा.

"ओह, वह तो बहुत ही खराब हैं." इस के पहले कि नीलम को फिर रोने का दौरा पड़े मां झट से बोल पड़ीं. "मैं तुम्हारी मदद करूंगी."

"सच चाचीजी?" अविश्वास और कृतज्ञता से नीलम की चमकती आंखें मां पर टिक गईं.

"हां."

"ओह चाचीजी, आप वास्तव में महान हैं." कहते हुए उस ने मां का हाथ चूमा तो चूमती ही चली गई. मां ने उस का गाल थपथपाया.

मैं मन ही मन सशंकित हो उठी कि मेरी मां को क्या हुआ है जो इस चक्कर में फंस रही हैं. माना कि नीलम की मां मेरी मां की सहेली हैं, पर वह बहुत झगड़ालू भी हैं. जानबूझ कर इस पचड़े में पड़ने की क्या जरूरत है?

"पर मेरी एक शर्त है." मां बोलीं.

"मुझे आप की हर शर्त मंजूर है." नीलम ने चहकते हुए उत्तर दिया.

"सब से पहले तो यह बताओ कि तुम्हारी मां को राजेश क्यों पसंद नहीं है?"

"पसंद कैसे होगा, उन्होंने तो उसे देखा तक नहीं है."

"यह तो तुम ने बड़ी भूल की. तुम्हें पहले राजेश को उन से मिलाना था."

"क्यों? शादी मेरी है या उन की?"

"तो फिर उन से पूछने की भी क्या जरूरत थी?"

"यह तो राजेश की जिद है कि मेरे मातापिता पहले उस की मां के पास आएं."

"बड़े दकियानूसी खयालों का लड़का है."

"दकियानूसी नहीं, वह अपनी मां की इज्जत करता है." नीलम ने सगर्व कहा.

"और तुम अपने मांबाप की जरा भी इज्जत नहीं करतीं?" मां ने उसे घूरा.

"कैसे करूं? मेरी मां बेकार की बातें करती हैं. कहती हैं कि राजेश हमारी जाति



दोस्त के मांगने पर राजेश ने सौ की जगह दो सौ रुपए दे दिए लेकिन उस के पर्स में बिल चुकाने लायक पैसे भी न बचे थे.

का नहीं है. आप ही कहिए, आजकल जाति को कौन पूछता है? खुद क्लब में जा कर बिना जाति पूछे चाहे जिस के साथ हंसती खिलखिलाती रहती हैं. अब मेरी शादी के मामले में एकाएक जाति का खयाल हो आया है." उस ने तिरस्कार से कहा.

"तुम ठीक कहती हो, बेटी. मैं तुम्हारी मां से बात करूंगी."

"मुझे मालूम था आप मेरी बात को जरूर समझेंगी."

"पर केवल जाति ही उन के मना करने का कारण नहीं हो सकती."

"कहती हैं, वह राजेश के बारे में कुछ नहीं जानतीं. कैसी मूर्खता है. वह तो राजेश से मिलने को भी तैयार नहीं हैं और न ही उस के बारे में कुछ सुनना चाहती हैं."

"तुम राजेश के बारे में क्या जानती हो?" मां ने पूछा.

"सब कुछ."

"इतने कम समय में?"

"आदमी को पहचानने में समय ही कितना लगता है."

"पता नहीं, मुझे तो कईकई बार किसी के विषय में अपने विचार बदलने पड़ते हैं. खैर छोड़ो उसे. यही बताओ, तुम राजेश के बारे में क्याक्या जानती हो?"

"वह बहुत खूबसूरत है." कहते हुए नीलम की आंखों में विशेष चमक आ गई.

"यह तो मैं सुन चुकी हूं."

"उस का दिल और हाथ दोनों बादशाहों की तरह खुले हैं. दोस्त बनाता है तो उस पर दिल और जान के साथसाथ पर्स भी खाली कर सकता है."

"यह तुम ने कैसे जाना?"

"कल की ही बात लीजिए." नीलम बोली, "वह मुझे काफी पिलाने ले गया. हम ने चिप्स और पेस्ट्री भी खाईं. तभी राजेश का एक दोस्त आया और उस से सौ रुपए उधार मांगने लगा. मेरे सामने राजेश ने पर्स निकाल कर सौ की जगह दो सौ दे दिए. जब बैरा बिल ले कर आया तो राजेश के पास पर्स में बिल चुकाने के पैसे भी नहीं बचे थे. यह तो कहिए कि मां ने दर्जी को देने के लिए मुझे सौ रुपए दिए थे तो वहां इज्जत बच गई. वरना जनाब को अपना खूबसूरत कोट वहीं काउंटर पर छोड़ना पड़ता. ओह चाचीजी, मेरा तो हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया."

"मां ने थोड़ा मुसकरा कर कहा, "फिर दर्जी का बिल कैसे चुकाया?"

"नहीं चुकाया."

"तेरी मां ने पूछा नहीं?"

"बिना पूछे क्या वह छोड़ सकती है?"

"तो फिर?"

"कह दिया, 'शायद आटोरिकशा वाले को पैसे देते समय पर्स से रुपए गिर गए."

"और वह मान गईं?" मैं ने अविश्वास से पूछा, क्योंकि मैं जानती थी कि नीलम की मां सच को भी 'शक की निगाह से देखती थीं.

"न मानें, यहां कौन परवाह करता है?"

इस के बाद हम सब अपनेअपने खयालों में खोए कुछ देर खामोश रहे. जाहिर है कि नीलम के खयालों में सिर्फ राजेश ही आया हुआ था.

अचानक मां हंस कर बोलीं, "चलो, हम एक नाटक खेलते हैं."

हम दोनों ने ताली पीट कर इस प्रस्ताव का स्वागत किया. प्रस्ताव में अप्रत्याशित सा कुछ भी न था. बचपन से देखती आई थी. मां महल्ले भर के बच्चों को इकट्ठा कर 'शौकिया नाटक किया करती थीं.

"ऐसा करते हैं," मां उठ कर निर्देशक के अंदाज में दृश्य समझाने लगीं, "हम इसी दृश्य का नाटक खेलते हैं. फर्क सिर्फ इतना होगा कि इस में राजेश और नीलम की 'शादी हो चुकी होती है..."

"ओह चाचीजी." नीलम रोमांस की साकार प्रतिमूर्ति बन गई.

"सुमन राजेश की भूमिका करेगी."

"ओह मेरी परमप्रिय." कह कर हंसते हुए मैं ने नीलम को अपनी बांहों में जकड़ लिया तो वह अपने को छुड़ाते हुए बोली, "सुमन ही क्यों, मैं राजेश को ही फोन कर के बुलाए लेती हूं. आप से मिल भी लेगा."

"अभी हम सिर्फ नाटक खेल रहे हैं नीलम." मां हंस कर बोलीं, "इतना उतावलापन भी क्या. पहले हम कल्पना में राजेश से मिल लें, फिर हकीकत में भी भेंट कर लेंगे. हां, तो दृश्य यह है कि राजेश अपनी पत्नी नीलम को ले कर रेस्तरां में काफी पीने लगता है. वैसे राजेश करता क्या है?"

"वह हवाईजहाज उड़ाता है." उस ने कुछ इस तरह से कहा मानो पायलट आम आदमी से भिन्न स्वयं दो पंखों वाला 'परीदेश' का राजकुमार होता हो.

"ठीक है." यह जानकारी प्राप्त करने पर मां की कुछ खास प्रतिक्रिया न देख नीलम को निराशा हुई.

"नीलम, तुम अपने पति के साथ रेस्तरां में काफी पीने जाती हो. मैं राजेश के

दोस्त की भूमिका अदा करूंगी. दृश्य यह है कि मैं वहां आऊंगा और उस से रुपए उधार मांगूंगा. राजेश के पर्स में सिर्फ वे रुपए ही हैं, जिन्हें नीलम ने आज सुबह ही गृहस्थी का सामान लाने के लिए उसे दिए हैं. राजेश वे सब रुपए अपने दोस्त को दे देता है. अब रेस्तरां का बिल चुकाने का सवाल उठता है. तुम दोनों को दृश्य समझ में आ गया है?"

हम ने सिर हिला कर हामी भरी.

"ठीक है. अब सब अपनेअपने संवाद बनाओ और घटनाओं की रचना करो. याद रखना नीलम, तुम एक शादीशुदा औरत हो और पति की मासिक आय से तुम्हें अपनी गृहस्थी सुचारु रूप से चलानी है. राजेश की भूमिका से तुम शुरू करो, सुमन."

हम दोनों कमरे के बीच में खड़ी हो गईं. नीलम ने कंधे से अपना पर्स झुला दिया. मैं ने गला साफ किया और उस की कमर में हाथ डाल कर आवाज में पुरुषोचित भारीपन लाने की कोशिश करते हुए कहा, "आओ प्रिय, काफी पीने चलते हैं."

"चलो." नीलम बोली.

"बैरा, दो प्याले काफी और साथ में कुछ चिप्सपेस्ट्री भी."

"अब पेस्ट्री की क्या जरूरत है? अभी तो घर से नाश्ता कर के चले हैं." उस की आवाज में ठीक पत्नियों वाली तलखी थी जो एक अदद पति को यह महसूस कराने से कभी नहीं चूकती कि वह निहायत फुजूलखर्च इनसान है.

"अरे वाह, क्या मैं अपने दिल की मलिका को खाली काफी पेश कर सकता हूं?"

"हुजूर, पेश आप नहीं, बैरा करेगा."

"एक ही बात है." मैं ने हंस कर कहा.

"एक बात नहीं है. अपने हाथ से काफी बनानी पड़े तो यह बातबात पर चायकाफी का हुक्म देने की आदत छूट जाए." नीलम ने गुस्से से कहा.

"हैलो राजेश." तभी मां ने प्रवेश करते हुए कहा, "हैलो भाभी." मां ने जिस गंभीरता से नीलम को भाभी कहा, उस से हम दोनों ने हसंतेहंसते पेट पकड़ लिया.

"गंभीर बनो, वरना हम नाटक नहीं खेलेंगे." मां की यह धमकी हमेशा कारगर सिद्ध होती थी. "हां, फिर प्रवेश करती हूं... हैलो राजेश. हैलो भाभी." फिर मेरी ओर मुड़ कर मेरी पीठ पर जोर का धौल जमाते हुए बोलीं, "क्या यार, जब से शादी हुई है, नजर ही नहीं आता. जोरू का गुलाम. माफ करना भाभी. यह मेरा पुराना मित्र है."

"मैं नजर नहीं आता या तू नजर नहीं आता बदमाश." मैं ने भी वही अंदाज अपनाया.

"क्या कहूं यार, क्षमा करना. तेरी शादी के स्वागत समारोह में भी नहीं आ सका."

"हां, क्यों नहीं आया?" मैं ने घुड़क कर पूछा.

"क्या कहूं. अपनी तो वही स्थायी समस्या है. सारी तनख्वाह क्लब में फुंक



भंवर

दिए हैं यादों के खंडहर
तेरी मासूमियत ने,
फंसा हूं भंवर में ऐसा
किनारे ही नहीं मिलते.
—मनोज 'नीरज'

जाती है. अब शादी के मौके पर तो खाली हाथ नहीं आ सकता था."

"मूर्खों की तरह बातें न करो. यारों के बीच खाली हाथ की बात कैसी? बैरा, एक कप काफी और."

"नहींनहीं, काफी नहीं. मैं जरा जल्दी में हूं. एक मिनट, जरा सुन." उस ने ऐसा भाव बनाया मानो अकेले में कुछ कहना चाहता हो.

"बोल न, तेरी भाभी से क्या छिपाना? वह बहुत प्यारी है, तुम उस का विश्वास कर सकते हो." मैं ने नीलम के गले में बांह डालते हुए कहा.

"कैसे कहूं." मां ने आंखें झुका लीं.

"बोल न. दोस्त मानता है तो शर्माता क्यों है?"

"यार कुछ उधार चाहिए."

"कितना? सौ दो सौ?"

"सौ से काम चला लूंगा."

मैं ने पर्स निकाला और शाही अंदाज में दो सौ रुपए निकाले. "ले. दो सौ ले जा. वरना कम पड़ने पर फिर उधार की खोज में मारामारा फिरेगा."

"ओह, धन्यवाद राजेश. दोस्त हो तो तेरे जैसा. तू ने आज मुझे बचा लिया."

मां के जाने पर नीलम झिड़क कर बोली, "उसे दो सौ रुपए क्यों दिए? वह कभी लौटाएगा भी नहीं."

"ओह प्रिय, दोस्तों में सौ, दो सौ भला क्या चीज है?"

"कुछ नहीं, अच्छा, दर्जी के यहां जा रही हूं. तुम रेस्तरां का बिल चुका कर राशन ले कर यहीं मिलना."

"बिल...राशन?"

"क्यों? क्या बात है? बिल और राशन नहीं समझते?"

"प्रिय, मुझे कुछ रुपए दो."

"रुपए? किसलिए?"

"बिल और राशन के लिए."

"तुम्हारे कहने का मतलब क्या है? राशन के लिए आज सुबह ही दो सौ रुपए दिए हैं और जेब खर्च के लिए कल रुपए दे चुकी हूं."

"कल के रुपए तो कल ही 'रमी' में हार चुका हूं और आज के रुपए तुम्हारे सामने ही दे चुका हूं." मैं ने बेचारगी से मुंह बनाया.

"बहुत दरियादिल बनते हो, अब बिल का भुगतान कहां से करोगे?" नीलम को पत्नी रूप में मेरी खिंचाई करने में मजा आने लगा था.

"मेरा पर्स खाली है तो क्या हुआ मेरी पत्नी का पर्स तो भरा है."

"अच्छा, सिर्फ इस बार. पर पहले तुम वादा करो कि आज से किसी को उधार नहीं दोगे."

"किया, भई किया." मैं ने उस के सामने याचक मुद्रा में हाथ फैलाया.

नीलम ने अपना पर्स खोल कर एक सौ रुपए का नोट मेरे हाथ पर धरा ही था कि मां फिर राजेश के दोस्त के रूप में आ खड़ी हुई, "ओह राजेश, तुम अभी यहीं हो. मैं बड़ी मुश्किल में फंस गया हूं."

"अब क्या हुआ?"

"हमारा बिल दो सौ से ऊपर हो गया है. एक सौ रुपए और दे दो, मैं कल ही वापस कर दूंगा."

"बस, इतनी सी बात? ले, जा और मौज कर." कहते हुए नीलम का दिया हुआ नोट मैं ने मां को थमा दिया और मां मेरे हाथ से नोट लगभग झपटती हुई धन्यवाद कहते हुए चली गईं.

"तु... तु... तुम ने उधार न देने का वादा किया था." कहते हुए अचानक नीलम सचमुच फूटफूट कर रो पड़ी. मैं ने समझा, वह नाटक कर रही है. मैं उस की अभिनय कुशलता पर ताली पीटने ही वाली थी कि मां को उस के मुंह से पानी का गिलास लगाते देख थम गई.

मां ने स्नेह से उस की पीठ थपथपाई तो हिचकियों के बीच नीलम बोली, "चाचीजी, राजेश बिलकुल ऐसा ही है, शायद मुझे उस से शादी नहीं करनी चाहिए." ●

"जानती हो सादिया, इस छात्रावास का प्रबंधक ही शहर का सब से बड़ा बदमाश है."

"हां, तुम ने गलती की जो यहां पढ़ने आ गई."

"अरे, हम ने तो कई बार कहा कि किसी होटल में रहना इस छात्रावास से कहीं अच्छा है, लेकिन लड़कियां तैयार ही नहीं होतीं."

"सुना है, एक लड़की ने तो उस के चंगुल से निकलने के लिए कार से छलांग ही लगा दी थी."

सादिया का छात्रावास में पहला दिन था और रात के खाने के बाद लड़कियों से इस तरह की बातें सुन कर वह कांप कर रह गई. उसे ये सारी बातें बड़ी अजीब सी लग रही थीं.

दो सालों के अंदर ही सादिया की अम्मी और अब्बू चल बसे थे. रह गए थे, वे दोनों भाईबहन. कितनी मुशकिलों से ट्यूशन कर के अपनी पढ़ाई पूरी की थी, भाईजान ने. उसे छोटी सी उम्र से दुख झेलने की आदत सी हो गई थी. छोटेछोटे हाथों से वह खाना पकाती

कहानी • नैयर सद्र

हाथ की लकीरें



सादिया फजल के आकर्षण में बंधी थी और फजल हाथ की लकीरों के जाल में उलझा था. फजल को सच्चाई से रूबरू करवाने के लिए सादिया ने ऐसा चक्कर चलाया कि फजल की आंखें खुल गईं.

थी. बीच में तीनचार साल पढ़ाई भी छूट गई थी.

वक्त अच्छा हो या बुरा, कभी रुकता नहीं. अब्बू का बीमा वगैरह का रुपया मिला तो भाईजान ने उस की पढ़ाई फिर शुरू करवा दी. अब्बू के दोस्त नईम चाचा की देखरेख में दोनों बच्चे पढ़तेलिखते आगे बढ़ते रहे.

भाईजान क्लर्क हो गए थे. नईम चाचा ने उन की शादी करवा दी. वह तो सादिया के भी हाथ पीले कर देना चाहते थे, लेकिन भाईजान चाहते थे कि सादिया कुछ पढ़लिख जाए. जिंदगी के अच्छेबुरे वक्त में लड़की को अपना पेट पालने के काबिल तो होना ही चाहिए. वह खुद भी पढ़ना चाहती थी, इसी लिए उसे इंदौर के महिला कालिज में दाखिला दिलवा दिया गया.

सादिया का दाखिला करवाने तो भाईजान आए थे, लेकिन अब उसे छोड़ने न आ सके थे. इंदौर में रहने वाले अपने एक दोस्त को उन्होंने फोन कर दिया था कि सादिया फलां गाड़ी से पहुंच रही है. अपने दोस्त को उन्होंने सादिया का संरक्षक भी बनाया था.

वह दोस्त तो स्टेशन पर नहीं आए थे, लेकिन उस की गाड़ी आई थी. ड्राइवर और करीम दादा के साथ.

सादिया को छात्रावास पहुंचा कर करीम दादा चले गए थे. वह पहले ही दिन लड़कियों में घिरी उन की अजीब सी बातें सुन कर घबरा रही थी.

धीरेधीरे सादिया नए माहौल की आदी होती गई. एक शाम वह छात्रावास के उद्यान में बैठी थी कि उस के कक्ष की साथी नीलम ने घबरा कर कहा, "भाग सादिया, वह..."

"वह कौन?" सादिया ने हड़बड़ाहट में पूछा.

"वही, छात्रावास का प्रबंधक."

"कहां, किधर?" सादिया घबरा कर नीलम के पीछे छिपने की कोशिश भी कर रही थी और शहर के मशहूर बदमाश को देखना भी चाहती थी.

"वह देख नीले सफारी सूट में. वार्डन के कमरे की तरफ जा रहा है."

सादिया नीलम के साथ एक बेंच के पीछे छिप कर उसे देखती रही. उस का कद छः फुट था, रंग सांवला और उम्र कोई 35 वर्ष के लगभग थी. गर्व से सिर उठाए वह बड़ेबड़े डग भरता वार्डन के दफ्तर में चला गया. सादिया और नीलम भाग कर अपने कमरे में पहुंच गईं.

हर तरफ खबर फैल गई कि वह आया था और उस ने सादिया की ओर मुसकरा कर देखा था. कई लड़कियों ने सादिया से भी पूछा. वह हैरान थी कि बगैर किसी बात के उस के नाम के साथ कितनी बातें जुड़ गईं. साथ ही उसे यह भी लगा कि शायद छात्रावास के प्रबंधक के बारे में नईनई बातें बना कर लड़कियां यों ही मजा लेती हैं और कहीं इस बात की तरह बाकी बातें भी अफवाहें भर ही न हों.

एक दिन अचानक सादिया के भाईजान आ गए. आते ही बोले, "चलो सादिया, तुम्हें अपने दोस्त से मिलवा दूं."

एक बहुत बड़े बंगले पर पहुंच कर उन्होंने बरामदे में लगी घंटी बजाई.

एक नौकर ने दरवाजा खोला और उन्हें बैठक में पहुंचा दिया. इतनी लंबीचौड़ी और भव्य बैठक में पहुंच कर सादिया की आंखें फटी रह गईं. चंद मिनटों में भाईजान के दोस्त भी आ गए. सादिया उन्हें देखते ही एकबारगी कांप ही गई, क्योंकि सामने वही



"यह कीमती कोट तो बरबाद कर दिया तुम ने. इस का हरजाना कौन देगा... तुम या तुम्हारा भाई." फजल ने गीले कोट को देख सादिया को कड़वे स्वर में कहा.

छात्रावास का आवारा प्रबंधक खड़ा था.

"सादिया, यह हैं फजल साहब और फजल यह मेरी बहन सादिया है."

लगभग आधे घंटे तक वे वहां रुके. फजल साहब की जिद थी कि भाईजान कुछ रोज उन के यहां मेहमान रहें, लेकिन भाईजान को उसी शाम लौटना था.

वापसी में भाईजान से सादिया ने कहा, "ऐसा खराब आदमी ही मिला था, आप को मेरा संरक्षक बनाने के लिए? आवारा, बदमाश."

भाईजान एक झटके के साथ रुक गए और सादिया को घूरते हुए बोले, "फजल जैसा शरीफ कोई हो ही नहीं सकता."

"यह आप की राय होगी, छात्रावास की लड़कियां तो..."

"लड़कियां तो फालतू बातें करती हैं. सारे शहर में इस से बेहतर आदमी नहीं मिलेगा."

भाईजान चले गए थे. सादिया ने किसी को नहीं बताया था कि उस का संरक्षक कौन है.

एक शाम मौसम बहुत सुहावना था. वार्डन कमरे में नहीं थीं. नीलम और सादिया वार्डन से पूछे बिना ही बाहर निकल गईं. गेट का बूढ़ा नशेबाज चपरासी तो नाममात्र के लिए ही था. नीलम को घूमनेफिरने का शौक कुछ ज्यादा ही था. जब वे वापसी के बारे में सोच रही थीं तो उसी वक्त जोरों की बारिश होने लगी. देखते ही देखते सड़कें सूनी हो गईं. सादिया और नीलम बस स्टाप पर खड़ी परेशान हो रही थीं.

इतने में एक युवक स्कूटर पर गुजरा. उसे देखते ही नीलम चीखी, "राहुल."

आवाज सुनते ही वह रुक गया.

"मुझे चाची के घर छोड़ दो. अब देर हो गई है. छात्रावास का दरवाजा तो सात बजे बंद हो जाता है." नीलम ने युवक से कहा.

"और मैं?" सादिया ने हैरत से पूछा.

"तुम को भी कोई मिल जाएगा." कहती हुई नीलम स्कूटर के पीछे बैठ गई.

कहीं कोई सवारी नजर नहीं आ रही थी. इतने में चारपांच लड़के मस्ती में झूमते हुए उधर से निकले. सादिया को अकेले खड़ा देखा तो सामने दीवार से टिक कर खड़े हो गए. पहले फिकरेबाजी शुरू की फिर एक ने करीब आ कर कहा, "चलिए, हमारे साथ आप को छोड़ देंगे."

सादिया की आवाज नहीं निकल रही थी. हर तरह के बुरे खयाल उसे घेरे हुए थे. इतने में एक कार की रोशनी नजर आई. सादिया भागती हुई दोनों हाथ उठा कर सड़क पर खड़ी हो गई. वह फैसला नहीं कर पा रही थी कि कार को रोक कर वह मुसीबत टाल रही है या ज्यादा बड़ी मुसीबत को बुलावा दे रही है.

कार के रुकते ही सब लड़के अंधेरे में भाग गए.

कार की तेज रोशनी से बचते हुए सादिया ने सोचा, 'न जाने अब मेरा क्या होगा. कार में न जाने कैसे आदमी होंगे? मौका अच्छा है, मुझे भी अंधेरे में भाग जाना चाहिए. जैसेतैसे छात्रावास पहुंच ही जाऊंगी.'

तभी उस ने अपना नाम सुना, "सादिया."

वह हैरान सी खड़ी थी.

"अंदर आ जाओ." दोबारा आवाज सुनते ही उस ने देखा कि कार के भीतर उस का संरक्षक फजल बैठा था.

"बैठो." आगे वाला दरवाजा खुला. वह आहिस्ता से सीट पर बैठ गई.

सादिया का दिमाग काम नहीं कर रहा था. पानी में भीगी सर्दी से कांपती वह सिमटी सी बैठी थी. फजल ने अपना कोट उतार कर उस के कंधों पर डाल दिया. सादिया का दिल धौंकनी की तरह धड़क रहा था. कार सड़क पर बहते हुए पानी को चीरती हुई बढ़ी जा रही थी.

रास्ते में फजल ने सिर्फ इतना ही कहा, "तुम्हारी जगह अगर और कोई लड़की होती तो मैं उसे छात्रावास से निकलवा देता."

सादिया कुछ न बोली. उस की आवाज निकल ही नहीं रही थी. कोट के अंदर वह बुरी तरह कांप रही थी. कार के अंदर का गरम माहौल और फजल के कपड़ों से उठती इत्र की महक के साथ सिगरेट की मिलीजुली गंध उस के दिलोदिमाग पर अनोखा असर कर रही थी. उस ने बड़ी कोशिश से, कनखियों से फजल की तरफ देखा. उस के चेहरे पर अजीब सा तनाव था.

कार कितनी देर चली, सादिया को कुछ पता न चला. उसे तो तब होश आया, जब कार फजल के बंगले के अंदर दाखिल होने लगी.

"आइए." उतरते हुए फजल ने कहा.

"लेकिन छात्रावास?" वह फुसफुसाई.

फजल की आंखों में फिर गुस्सा झलकने लगा.

"छात्रावास जाना था तो सात बजे से पहले क्यों नहीं वहां पहुंची. तुम्हारे लिए मैं अपने ही बनाए उसूल तो नहीं तोड़ सकता. चलो अंदर."

फजल की बात का जवाब सादिया के पास नहीं था. फिर उसे खयाल आया कि अगर इतनी रात गए वह फजल के साथ छात्रावास पहुंची भी तो कितनी बदनामी हो जाएगी. खुद को तसल्ली देती हुई वह कार से उतरी. अपने भीगे जिस्म को कोट में छिपाए हुए वह फजल के पीछेपीछे अंदर दाखिल हुई. बरामदे की बाईं तरफ एक कमरे का दरवाजा खोल कर फजल ने कहा, "अंदर जाओ, कपड़े भिजवाता हूं."

वह उस सुसज्जित कक्ष की हर चीज को हसरत से देख रही थी. ऐसे आलीशान मकान

तो उस ने फिल्मों में देखे थे अथवा कहानियों में उन के वर्णन पढ़े थे.

दरवाजा खुलते ही सादिया के खयालों का सिलसिला टूटा. एक बूढ़ा नौकर करीम दादा कुछ सामान लिए हुए दाखिल हुआ, "बेटी, ये लो कपड़े."

कमीज, लुंगी, तौलिया और शाल थे. करीम दादा आगे बढ़े और एक दरवाजा खोल कर बोले, "यह गुसलखाना है. यह गरम पानी का नल है, दूसरा ठंडे का. कपड़े बदल लो, नहीं तो ठंड लग जाएगी. मैं अभी खाना लाता हूं."

सादिया ने कपड़ों पर नजर डाली और सोचा, 'क्या घर में औरतें नहीं है जो ऐसे कपड़े भेजे हैं?' उस ने गरम पानी से मुंहहाथ धो कर अजीब से कपड़े पहन कर बालों पर तौलिया लपेट लिया और शाल ओढ़ ली. गुसलखाने से निकली तो देखा कि कमरे में हीटर जल रहा था.

दरवाजा फिर खुला. करीम दादा खाने की ट्रे लिए अंदर दाखिल हुए और बोले, "खाने के बाद यह गोली भी ले लेना. छोटे सरकार ने कहा है, भीगने से कहीं सर्दी न हो जाए."

सादिया का भूख के मारे बुरा हाल था. लेकिन उसे अचानक लगा कि फजल ने उसे इस काबिल भी न समझा कि खाना अपने साथ खिलाते. फिर वह खुद ही मुसकरा दी, 'क्या उन के सामने तू खाना खा पाती? और हो सकता है, अब तक वह खा भी चुके हों. फिर उन के सामने तेरी हस्ती भी क्या है. अपने घर वालों के सामने इस हुलिए में वह तुझे क्यों बुलाते, क्यों उन से मिलवाते?' खाने से उड़ती हुई खुशबू ने उस के खयालों को भंग किया.

वह चुपचाप खाना खाने लगी. बेहद मजेदार खाना खत्म कर के उस ने गोली उठाई, घुमाफिरा कर देखी और धीरे से गिलास के बचे हुए पानी में डाल दी. गोली पानी में घुलने लगी और वह धीरे से मुसकरा दी.

नौकर फिर कमरे में आया और बोला, "कुछ और चाहिए बेटी?"



सब कुछ

जाने क्यों तुम से
संभाला न गया,
सब कुछ तो तुम्हें
हम ने था सौंप दिया.

—संजय जिंदल

"अगर तकलीफ न हो तो एक कप चाय पीना चाहती हूं."

"सरकार खुद काफी ला रहे हैं." कहते हुए वह बाहर चला गया.

सादिया का दिल डूबने लगा. सिर से तौलिया खोल कर उस ने शाल ढंग से लपेट ली और पलंग के एक कोने पर सिमट कर बैठ गई.

दरवाजा खुला और फजल अंदर आए. ट्रे उन के हाथ में थी. उन्होंने ट्रे मेज पर रख दी. एक कप काफी का उसे दिया. फिर कुरसी के पीछे टंगे अपने गीले कोट को देख कर कड़वाहट से कहा, "यह कीमती कोट तो बरबाद कर दिया तुम ने, इस का हरजाना कौन देगा...तुम या तुम्हारे भाई?"

सादिया के मुंह से एक शब्द भी न निकला. मुशकिल से उस ने काफी खत्म की. शीघ्र ही फजल उठा और बोला, "दरवाजा अंदर से बंद कर लो."

सादिया ने जल्दी से दरवाजा बंद किया. आरामदेह बिस्तर पर लेटते ही उसे नींद आ

गई. सुबह दरवाजे पर जोरदार दस्तक से उस की नींद टूटी. वह अलसाई सी बोली, "कौन?"

"बेटी, चाय ले लो." करीम दादा की आवाज थी. उस ने दरवाजा खोला. चाय रखते हुए वह बोले, "छोटे सरकार ने कहा है कि जल्दी तैयार हो जाओ."

मुंह धो कर उस ने चाय पी. कपड़े सूख चुके थे. जल्दी से नहा कर कपड़े बदले और तैयार हो कर बाहर आ गई. एक नजर बाजू में खिले रंगबिरंगे फूलों पर डाली और फिर अचानक कार की आवाज पर उस की नजरें उधर उठ गईं. कार ड्राइवर लाया था.

"जाओ." उस ने पलट कर देखा. फजल पीछे खड़े थे.

"ड्राइवर तुम्हें छात्रावास छोड़ आएगा. आइंदा देर तक बाहर न रहना. वार्डन कुछ कहे तो कह देना कि मुझ से बात कर ले."

सादिया कार में बैठ गई और चंद मिनटों में छात्रावास पहुंच गई. सात बजे मुख्य द्वार खुल जाता था. कार देख कर चौकीदार ने फौरन दरवाजा खोल दिया. उस की तरफ ध्यान देना उस ने जरूरी न समझा.

कमरे में जा कर सादिया ने दरवाजा बंद कर दिया. नीलम अभी नहीं लौटी थी. फजल के साथ गुजरा एकएक क्षण उस की आंखों के समक्ष घूमता रहा.

सादिया सोचने लगी, 'फजल के साथ हुए इस हादसे को वह किसी से कहे या नहीं?' जी तो चाह रहा था कि नीलम को एकएक पल का हाल सुना दे. लेकिन नहीं, कह कर कौन मुसीबत बुलाए.

उस ने सोचा, 'फजल साहब इतने बुरे आदमी तो नहीं. जितना लड़कियों ने उसे मशहूर कर रखा है. हो सकता है, भाईजान के दोस्त होने की वजह से लिहाज कर गए हों. वरना शायद?' उस ने शरमा कर तकिए में मुंह छिपा लिया.

कभी कालिज या छात्रावास में फजल नजर आ जाते तो सादिया उन्हें देखते ही शरमा जाती. लेकिन फजल जैसे उसे पहचानते ही न थे. उन के इस व्यवहार से सादिया को चुभन होती.

एक दिन चपरासी ने आ कर सादिया से कहा, "वार्डन के दफ्तर में आप का फोन आया है."

"सादिया, मैं फजल बोल रहा हूं." उधर से आवाज आई.

"जी, आदाब." उस ने घबराई आवाज में कहा.

"मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा हूं. कोई गलत हरकत नहीं करना. अगर कोई खास काम हो तो करीम दादा से कह देना, या फोन कर देना, कहीं जाना हो तो वार्डन से पूछ कर जाना. जरूरत हो तो घर से गाड़ी मंगवा लेना." इतना कह कर फजल ने फोन बंद कर दिया था.

न जाने क्यों, फजल के बारे में जानने के लिए सादिया बेचैन थी. एक शाम हिम्मत कर के वह फजल के बंगले पर पहुंच गई. बाग में माली काम कर रहा था. करीम दादा माली से बातें कर रहे थे. उसे देखते ही बोले.

"आओ बेटी, कोई काम है क्या?"

"नहीं दादा, सोचा कि आप से मिल आऊं." उस ने इधरउधर देख कर पूछा, "कोई है नहीं घर में क्या?"

"अरे, यहां होता ही कौन है." दादा अंदर जाते हुए बोले, "छोटे सरकार और हम नौकरों के अलावा...आज वह भी नहीं हैं."

"तो और कोई तो होगा?" उस ने कुरेदा.

"बड़े सरकार और बेगम साहिबा को गुजरे अरसा हो चुका है. अब उन की इकलौती औलाद उन की अमानत है. उस की देखभाल कर रहे हैं, हम सब मिल कर."

सादिया ने बड़ी कोशिश से पूछा, "उन की बीवी तो होगी?"

"अरे बेटा, छोटे सरकार के नजूमी दोस्त खान ने कह दिया है कि तुम 50 साल से एक दिन ज्यादा न जिओगे. बस, यह बात ऐसी दिल को लगी है कि हम लाख कहें, वह मानते ही नहीं. 35 पार कर चुके हैं, एक ही रट

है, 'मैं किसी को बेवा करने को क्यों लाऊं?' हम सब तो थक कर चुप हो गए हैं. कौन वारिस होगा, इतनी दौलत का?'' करीम दादा ने मायूस स्वर में कहा.

''लेकिन ज्योतिषी की बात पर इतना यकीन?''

''अरे बेटा, खान की एकदो बातें सच निकल गईं और इन के दिल में बैठ गई है कि यह बात भी सच होगी.''

''लेकिन वह इत्तिफाक भी हो सकता है. मौत का वक्त तो कोई नहीं बता सकता.''

''बहुत समझा चुके, बेटा हम सब तो हार चुके हैं.''

सादिया इस अजीब सी दास्तान पर हैरत करती हुई लौट आई. जो फजल उसे बदमाश, आवारा और बुरा लगता था, अब एक ऐसा भोलाभाला आदमी लग रहा था जिस पर सिर्फ तरस खाया जा सकता था. जिस फजल को वह इनसानों से अलग एक अजूबा समझती थी, वह उसे तन्हा, बेसहारा सा लगने लगा. फजल का खयाल उस के जेहन से चिपक कर रह गया.

चंद महीने और बीत गए. एक दिन फिर फजल का फोन आया, ''सादिया, एक जरूरी काम है...गाड़ी भेज रहा हूं, तुम कायदे से तैयार हो कर आ जाओ.''

''लेकिन क्या काम है?'' उस की आवाज में घबराहट थी.

''तुम्हारे भाईजान ने कहा था कि मैं तुम्हारे लिए अच्छा सा रिश्ता तलाश करूं. इत्तिफाक से एक बहुत अच्छा रिश्ता मिला है. मेरे एक दोस्त का छोटा भाई इंगलैंड से आया है. पांच बजे मैं ने उसे घर पर बुलाया है.तुम आ जाओ, दोनों एकदूसरे को देख लो, बाकी बातें हम तय कर लेंगे.''

सादिया इस अजीब खबर के लिए बिलकुल तैयार न थी. उस का दिल बेहद परेशान सा हो गया था. लड़कियां शादी की बात पर खुश होती हैं, लेकिन वह बेचैन हो गई थी.

वह अपने कमरे में न जा कर बाग के एक सूने कोने में चली गई और एक पेड़ के नीचे बैठ गई. उस के दिलोदिमाग में सवालजवाब शुरू हो गए थे, 'सादिया, जिस खयाल को तू मन ही मन पनपने दे रही है, वह सिर्फ सपना ही हो सकता है, कहां तू, कहां वह.'

'कोशिश करने में हर्ज भी क्या है?' दिल ने जिद की.

'और अगर वह वाकई 50 वर्ष तक ही जिंदा रहा तो?' दिमाग ने दलील पेश की.

'अरे, तुझे तो वहम होने लगा, चल मान लिया 50 तक ही रहेंगे, लेकिन अगर तू आगे न बढ़ी तो इतने दिन उन्हें कौन खुशियां देगा? उन्हें खुशियां दे कर क्या तेरी जिंदगी का हक अदा न हो जाएगा?'

'मगर कैसे करूं...क्या करूं?'

अपने खयालों के साथ उलझते हुए वह बहुत देर तक वहां बैठेबैठे सोचती रही. अचानक वह उठ खड़ी हुई. अब उस के लबों पर मुसकराहट थी.

इंगलैंड वाला डाक्टर युवक खूबसूरत, गोराचिट्टा, तंदुरुस्त नौजवान था. वह हिंदी

अब करंट नहीं लगेगा

आए दिन घरों में बिजली का करंट लगने की घटनाएं होती रहती हैं. कभीकभी तो बिजली का झटका इतनी जोर का लगता है कि जान से भी हाथ धोना पड़ जाता है. किंतु अब एक भारतीय कंपनी 'इंगलिश इलेक्ट्रिक' ने एक ऐसा उपकरण तैयार किया है, जिस से घरों तथा औद्योगिक इकाइयों में बिजली का नंगा तार छू जाने पर भी करंट नहीं लगेगा.

'सेफ और सुपर ट्रिप' नामक यह उपकरण मुख्य स्विच बोर्ड पर लगाया जा सकता है. किसी भी रूप में बिजली का नंगा तार छू जाने पर यह अपनेआप करंट को काट देता है. पाश्चात्य देशों में यह उपकरण काफी समय से उपयोग में आ रहा है.

और उर्दू साफ बोलता था. उस ने सादिया को पसंद भी कर लिया था.

जब वह चला गया तो फजल की आवाज आई, ''सादिया.''

वह सामने जा कर खड़ी हो गई तो फजल ने कहा, ''उम्मीद है, शकील तुम को पसंद आया होगा. वह तैयार है. अभी फोन कर के तुम्हारे भैयाभाभी को बुलवा लेता हूं. यह शादी जल्दी हो जाए तो अच्छा है. इतना अच्छा लड़का फिर नहीं मिलेगा.

''फजल साहब,'' सादिया ने पहली बार फजल के सामने जबान खोली थी. ''मैं कुछ कहना चाहती हूं.''

''कहो, क्या बात है?'' फजल ने लापरवाही से कहा.

''मैं शायद...'' बात अधूरी छोड़ कर वह चुप हो गई.

फिर हिम्मत कर के बोली, ''मैं ज्यादा दिन की मेहमान नहीं. बस, चंद बरस और...इसलिए किसी की जिंदगी खराब नहीं करना चाहती.''

''क्या बकवास कर रही हो?'' फजल गरजा.

''भाईजान के एक दोस्त हैं, खान साहब. उन्होंने मुझे बताया था. वह बहुत अच्छे नजूमी हैं.''

''क्या बताया था?''

''मैं 30 साल तक भी मुशकिल से जी सकूंगी.''

''अभी तुम्हारी कितनी उम्र है?''

''जी, 23 बरस.'' वह रुक कर बोली, ''भाईजान को यह बात पता नहीं है.''

फजल स्तब्ध सा सादिया की ओर देखते हुए सोचने लगा, '23 बरस की सादिया सिर्फ सात बरस की और मेहमान है. वह तो अभी 35 का है. 15 बरस और जी सकेगा.'

फिर अचानक उस ने पूछा, ''लेकिन नजूमी की बात सच निकले, यह जरूरी तो नहीं?''

''आप से कोई कहता तो क्या आप गलत मानते?''

''लेकिन फिर करोगी क्या? इसी तरह बैठी रही और नजूमी की बात गलत निकल गई तो सारी उम्र अपने भाई पर बोझ बनी रहोगी?''

''आप ठीक कहते हैं, लेकिन एक और मजबूरी है.'' उस ने रुक कर कहा.

''कैसी मजबूरी, जल्दी बोलो.''

वह धीरेधीरे कमरे के दूसरे कोने तक जा कर खिड़की के पास खड़ी हो गई. फजल की तरफ उस की पीठ थी. वह तेज कदमों से उस के पास आया और झिड़क कर बोला, ''क्या है? कुछ बोलो न.''

''जी, मैं किसी को...किसी और को...''

''पसंद करती हो?'' फजल ने उस की बात पूरी की.

''जी.''

''कौन है? फिर उसी से शादी कर लो.''

''जी वह कभी नहीं मानेंगे.''

''अरे, मैं उसे राजी कर लूंगा. तुम बताओ तो कौन है, कहां रहता है?''

''आप नाराज तो नहीं होंगे?''

''मुझे क्या मतलब. मैं भला क्यों नाराज होने लगा. अब तो बताओ.''

''जी...वह...मेरे पीछे खड़े हैं.''

''क्या?'' फजल को समझने में देर नहीं लगी. वह गुस्से से बोला, ''पागल हो गई हो? होश में हो या नहीं?''

''मुझ से गलती हुई. मैं अपने शब्द वापस लेती हूं. मैं अपनी औकात भूल गई थी.'' सादिया की आंखों से आंसू बहने लगे थे.

फजल पैर पटकता हुआ कमरे से जा चुका था. कुछ देर बाद करीम दादा आए और बोले, ''बेटी, गाड़ी तैयार है, चलो.''

वह भारी कदमों से बंगले से निकली और कार में बैठ कर छात्रावास पहुंच गई. रात भर सादिया बिस्तर पर करवटें बदलती रही. सुबह उस ने फजल को फोन किया.

''मैं फजल बोल रहा हूं.'' उधर से आवाज आई.

''मैं सादिया...कुछ लम्हे लूंगी आप के. कल जो गुस्ताखी हुई, उस के लिए माफी

चाहती हूं. मैं भूल गई थी कि कहां आप और कहां मैं. अगर यह बात भाईजान तक न पहुंचे तो मेहरबानी होगी. मेरी जिंदगी के बारे में आप फिक्र न करें. जो कुछ आप ने किया, उस के लिए बेहद शुक्रगुजार हूं. हो सके तो माफ कर दीजिएगा."

सादिया का फोन बंद हो चुका था. मगर फजल देर तक रिसीवर हाथ में लिए बैठा रहा. पिछली शाम उस ने सादिया को डांट कर भगा तो दिया था, लेकिन रात भर वह कहां सो पाया था. सादिया का आकर्षक व्यक्तित्व और उस की बातें फजल के दिल में तब हलचल मचा रही थीं.

उस ने रिसीवर को धीरे से रखा और उठा. उसे याद आया 11 बजे उसे एक मीटिंग में जाना है.

शाम पांच बजे फजल ने सादिया को फोन किया, "सादिया, तुम्हें कल जोर से डांट दिया था, इस के लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूं. तुम तो बहुत ही प्यारी लड़की हो. जानती हो, मैं 35 वर्ष का हूं."

"आप 45 के होते तो भी क्या था..." सादिया ने सांसों से बोझिल आवाज में कहा.

"ठीक है, तुम्हारी यही इच्छा है तो मुझे भी सब कुछ मंजूर है. तुम्हारे भाईजान को बुला कर मैं बात कर लूंगा."

शहनाइयों की गूंज के बीच सादिया फजल की दुलहन बनी उस के घर आ गई.

एक दिन शरारत से सादिया ने कहा, "जानते हो, नजूमी ने तो यह कहा था कि मैं 20 बरस की उम्र तक ही जिंदा रहूंगी."

"क्या? तो तुम ने मुझ से झूठ बोला था?" फजल बोला.

"नहीं तो आप कैसे मिलते?"

"पगली कहीं की. कितना अच्छा रिश्ता था वह..."

"इस से अच्छा तो नहीं था. रही नजूमी की बात तो उस का यकीन तो मुझे था ही नहीं. तभी तो 20 बरस से गुजर कर 23 को आ पहुंची हूं."

सादिया की बातें सुन कर फजल कुछ हैरान सा हो गया था. वह सोचने लगा, 'अगर सादिया 20 बरस से ज्यादा जी सकती है तो मैं 50 बरस की उम्र में क्यों मरूंगा?'

फजल और सादिया जिंदगी के रंगों में ऐसे खोए कि नजूमी की बात उन के दिमाग से ही निकल गई. दो बेटों के बाद उन के यहां एक बेटी हुई.

साल दर साल बीतते रहे. बच्चे अब युवा हो चुके थे. एक दिन घर में बहुत गहमागहमी थी. सादिया सब से ज्यादा व्यस्त थी.

"क्या मेहमान आने वाले हैं? क्या बात है इतनी तैयारी और मुझे कुछ पता ही नहीं." फजल ने पूछा.

"आज आप की सालगिरह है."

"मेरी सालगिरह? मैं तो भूल ही गया था, इस तारीख को."

"60वीं सालगिरह मुबारक हो." सादिया ने धीरे से कहा.

"जब से तुम जिंदगी में आई हो, लगता है, वक्त की रफ्तार तेज हो गई है." फजल ने मुसकरा कर कहा.

शाम को घर मेहमानों से भरा हुआ था. अचानक फजल की नजर खान पर पड़ी. वह उन की ओर बढ़े, "अरे खान साहब, आप?"

"भई, मुबारक हो. आप ने तो याद न किया, लेकिन हमें खबर हो गई थी."

"लेकिन याद आया...आप तो मुझे 50 बरस की उम्र पर ही मार रहे थे."

"अजी फजल साहब, लकीरों का क्या है. बदल भी जाती हैं. मैं तो खुद नजूमी हो कर भी इन बातों का यकीन नहीं करता."

"वाह, किसी की जान गई और आप की अदा ठहरी. और हां, जरा इधर आइए, एक और शिकार से भी आप को मिलवाऊं, जिसे

इनकार का अर्थ

प्रशंसा से इनकार करने का अर्थ है दोबारा प्रशंसा सुनने के लिए लालायित.

—ला रोशफूकी

आप 20 बरस की उम्र में ही पार करना चाहते थे," फजल खान को लिए सादिया के पास पहुंचे, "सादिया देखो, कौन आया है?"

"आप की तारीफ?" सादिया ने पूछा.

"लो, तुम इन्हें नहीं जानतीं? अरे वही खान साहब, तुम्हारे नजूमी."

"लेकिन मैं तो इन से पहले कभी नहीं मिला." खान ने हैरत से कहा.

"अब पहचानने से ही मुकरने लगे," फजल ने हंस कर कहा.

"यह ठीक कह रहे हैं." सादिया ने कहा, "इन से मैं कभी नहीं मिली."

"तो फिर वह नजूमी वाली बात...किस ने देखा था तुम्हारा हाथ?"

"मेरा हाथ किसी ने नहीं देखा."

"क्या? फिर तुम ने इतना बड़ा नाटक क्यों किया था?"

"अपनी पसंद की चीज पाने के लिए लोग जान पर खेल जाते हैं, मैं ने तो सिर्फ नाटक ही खेला था." सादिया इस उम्र में भी यह कहते हुए शरमा गई थी. फिर बोली, "आप का वहम भी तो तोड़ना था."

"तो तुम्हें सब पता था?"

"जी हां."

"और जो नजूमी का कहा सच निकल जाता तो?"

"कैसे निकलता. मैं जो लड़ रही थी आप की लकीरों से."

"फिर भी...तुम ने कुछ भी न सोचा?"

"सोचा जरूर था, लेकिन यही कि अगर यों ही है तो कम से कम 50 बरस तक तो आप को वास्तविक जिंदगी दे सकूं."

"तो तुम...ओह, सादिया." फजल सादिया को अजीब नजरों से देख रहा था, जिन में हैरत के साथसाथ मुहब्बत भी भरी थी. ●

हमारी बेड़ियां

'शादी के समय जब अधिकतर मुसलिम दूल्हा दरवाजे के अंदर जाता है तो मेहंदी की टहनी से उस की पिटाई किए जाने की प्रथा है.

मेरी मौसेरी बहन की शादी में जब जीजाजी की पिटाई की गई तो मेहंदी का एक कांटा उन की आंखों में इस तरह चुभ गया कि हमेशा के लिए उन की आंख ही ले बैठा. —नसरीन बेगम

*

हमारे गांव में रिवाज है कि जब किसी के घर बच्चा जन्म लेता है तो छठी के दिन कुत्ते और बिल्ली के बालों को जला कर उस के धुएं से बच्चे की नाभी को सेंका जाता है.

पिछले दिनों मेरे पड़ोस में एक बच्चे का जन्म हुआ. प्रथा के अनुसार बच्चे का बड़ा भाई जब कुत्ते के बाल नोच रहा था तो कुत्ते ने गुस्से में आ कर उसे काट लिया. बहुत इलाज होने के बाद भी वह बच नहीं सका. —सोनी सिंह

*

हमारे यहां प्रथा है कि जब किसी व्यक्ति की असामयिक मृत्यु एकादशी के दिन हो जाती है तो नारायण बलि नामक कर्म के अंतर्गत अंतिम संस्कार करने वाले व्यक्ति को नौ बार स्नान करना पड़ता है.

हाल ही में मेरे एक मित्र की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई. मित्र के छोटे भाई को नारायण बलि का कर्म करना पड़ा.

उसे पहले से ही बुखार था, उस पर नौ बार नहाने के कारण उसे निमोनिया हो गया. हालत यहां तक खराब हो गई कि काफी प्रयासों के बावजूद उसे बचाया नहीं जा सका. —प्रदीप जोशी

रामपुर में प्रथा है कि शादी के पश्चात बेटी की विदाई पर मामा लड़की को गोद में ले कर पालकी या वाहन तक ले जाता है.

हमारे संबंधी की बेटी के मामा काफी वृद्ध हैं. जब वह लड़की को गोद में ले कर चले तो भार सहन न कर सके और गिर गए. उन्हें इतनी गहरी चोट आई कि तुरंत हस्पताल जाना पड़ा. —कु. रेनू रुहेला

*

मुसलिम शिशु के जन्म पर मौलवी साहब द्वारा शिशु को कानों में अजान देने की प्रथा है ताकि वह सच्चा मुसलमान हो सके.

उस दिन मेरी सहेली के बच्चे के जन्म पर मौलवी साहब ने जरा कुछ ज्यादा तेज आवाज में अजान दे दी. बच्चा एकाएक चीख उठा. उस का परिणाम यह हुआ कि काफी इलाज कराने के बावजूद भी आज तक उस के कान खराब हैं. —नसरीन

*

हमारे यहां जिस व्यक्ति को कुत्ता काट लेता है, उसे सात घरों से रोटी मांग कर प्रत्येक का टुकड़ा खिलाया जाता है और कोई डाक्टरी इलाज जरूरी नहीं समझा जाता.

पिछले दिनों एक लड़का इस अंधविश्वास के कारण चिकित्सा न पा सका और उस के मातापिता को अपने इकलौते पुत्र से हाथ धोने पड़े. —सदफ अंसारी●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



भाभी

कहानी • नरेंद्रकौर छाबड़ा

आंगन के जिस कोने से धूप दिन के दूसरे पहर में ही गुजर जाती थी, वहीं दीवार से कुछ हट कर बड़ी सी दरी बिछी थी. उदास मुद्रा में शीला महल्ले की औरतों से घिरी भीगी आंखों से शून्य में ताक रही थी. उस की भाभी की मृत्यु का अफसोस जाहिर करने आई औरतें उस की चुप्पी से अलगअलग अर्थ लगा रही थीं.

भाभी की तेरहवीं के पश्चात पिछली रात ही वह लौटी थी और सवेरे से ही शोक प्रकट करने वालों का आनाजाना जारी था. जब ससुराल पक्ष के रिश्तेदार आए थे, तब उस की रुलाई फूट पड़ी थी. जेठानी ने समझाया था, ''वहां भी इतने दिन रोती रही हो, क्या इस से भाभी वापस आ गई? सब्र करो, जो कुछ इनसान के वश में नहीं उस पर जोर जबरदस्ती तो नहीं की जा सकती न. अपनी तबीयत का भी कुछ खयाल करो. कहीं रोरो कर बीमार पड़ गई तो घर को कौन देखेगा?''

शीला का पति रीतेश भी बोल पड़ा, ''भाभी, आप ही इसे समझाइए. वहां भी रोरोकर इस ने अपनी हालत बिगाड़ ली थी.''

फिर जेठानी ने ही उसे चाय व थोड़ा सा नाश्ता खिलाया था.

मातृविहीन बच्चे की चिंता रोजदोरोज तो लोग करते हैं पर भाभी के नन्हे को शीला आखिर कैसे छोड़ सकती थी. जो प्यार, स्नेह व सेवा भाभी ने उसे दी, उस का बदला तो नन्हे के प्रति कुछ कर के ही उतारा जा सकता था.

वहां आई औरतों को भाभी की मृत्यु का विवरण जेठानी ही सुना रही थी. दो वाक्य बोलते ही शीला की आंखें छलक जाती थीं. अतः जेठानी ने उसे चुप रहने की सलाह दी थी. जब महिलाएं पूछ उठतीं, "अब उस बच्चे का क्या होगा?" तो शीला की आंखों से फिर आंसू बहने लगते.

शाम के समय जेठानी भी अपने घर चली गई. शीला भी कुछ देर आराम करना चाहती थी. सारा दिन लगातार बैठे रहने से पीठ अकड़ सी गई थी. घुटनों में हलका सा दर्द महसूस होने लगा था. लंबे सफर की थकावट ने मानसिक द्वंद्व, अशांति और तनाव को और बढ़ा दिया था. गुड़िया को दूध दे कर वहीं पलंग पर वह निढाल सी लेट गई. रोरो कर थकी, अनिद्रा से बोझिल आंखों को बंद किया तो सामने नन्हे का रोता, सुबकता चेहरा घूम गया. आंखों की थकान व जलन के बावजूद भी उसे नींद कहां आ रही थी. बारबार नन्हे का चेहरा सामने आ जाता और वह तड़प उठती.

सुबकते हुए नन्हे की मां को तलाशती आंखें, दूध पीतेपीते बोतल को धक्का दे कर रोना. हर चेहरे को एकटक देख कर मां की अनुपस्थिति का भान लेते ही उस का रोतेरोते हिचकियां लेना आदि सभी कुछ



"भाभी क्या नाम रखने का विचार है नन्हे का?" उस ने पूछा.

भीतर तक शीला को दहला जाता. मृत्यु ने छः माह के अबोध नन्हे की मां को उस से जुदा कर दिया था.

'शीला की मां ने ही बताया था कि सवेरे नहा कर गुसलखाने से बाहर निकलते वक्त भाभी का पैर फिसल गया था. कमर में दर्द होने लगा तो डाक्टर के पास ले गए. परीक्षण के लिए उन्हें हस्पताल में भरती कर लिया गया. भाभी ठीक तरह से बोलती, हंसती, खाती रही थीं. नन्हे को दिन में दो बार उन से मिलाने लाया जाता. बारबार पूछतीं, "इसे दूध दिया न? पानी बिना उबाले तो नहीं पिलाया? दाल का सूप, फलों का रस भी दिया न?" मां की हामी भरने पर भाभी के चेहरे पर संतोष व तृप्ति के भाव उभर आते.

दूसरे दिन शाम के समय भाभी को चक्कर आने लगे. डाक्टर ने ताकत का इंजेक्शन तथा ग्लूकोज लगा दिया. आधे घंटे में उन का गला सूखने लगा और आवाज बंद हो गई. डाक्टर के कहने पर फलों का रस उन के मुंह में डाला तो सांस उखड़ने लगी. देखते ही देखते वह बेहोश हो गईं, तुरंत आक्सीजन लगा कर उन्हें बड़े हस्पताल में ले जाया गया. लेकिन वहां पहुंच कर पता लगा कि वह तो इस संसार से विदा ले चुकी हैं.

घर के सदस्य जड़ हो गए थे. यह वज्र एकाएक उन के ऊपर कैसे आ गिरा? घंटे भर में ही इंजेक्शन की प्रतिक्रिया स्वरूप सब को छोड़ भाभी मौत के मुंह में समा गई थीं. डाक्टर ने बड़ी चतुरता से दिल के दौरे के परिणामस्वरूप हुई मौत जाहिर कर दी थी. घर के सदस्य इस अन्याय को सहन करने के लिए विवश थे. हालांकि उन के मतानुसार, डाक्टर की लापरवाही ही भाभी की मृत्यु का कारण बनी थी. लेकिन उन की कौन सुनता?

रोतेपीटते, दो घंटे पूर्व हंसतीबोलती भाभी के शव के साथ सब लौटे थे. शीला तो पति के साथ उसी वक्त बस से चल पड़ी थी. आठ घंटे की यात्रा के बाद जब वे वहां पहुंचे थे तो भाभी की अंतिम यात्रा की तैयारियां हो चुकी थीं.

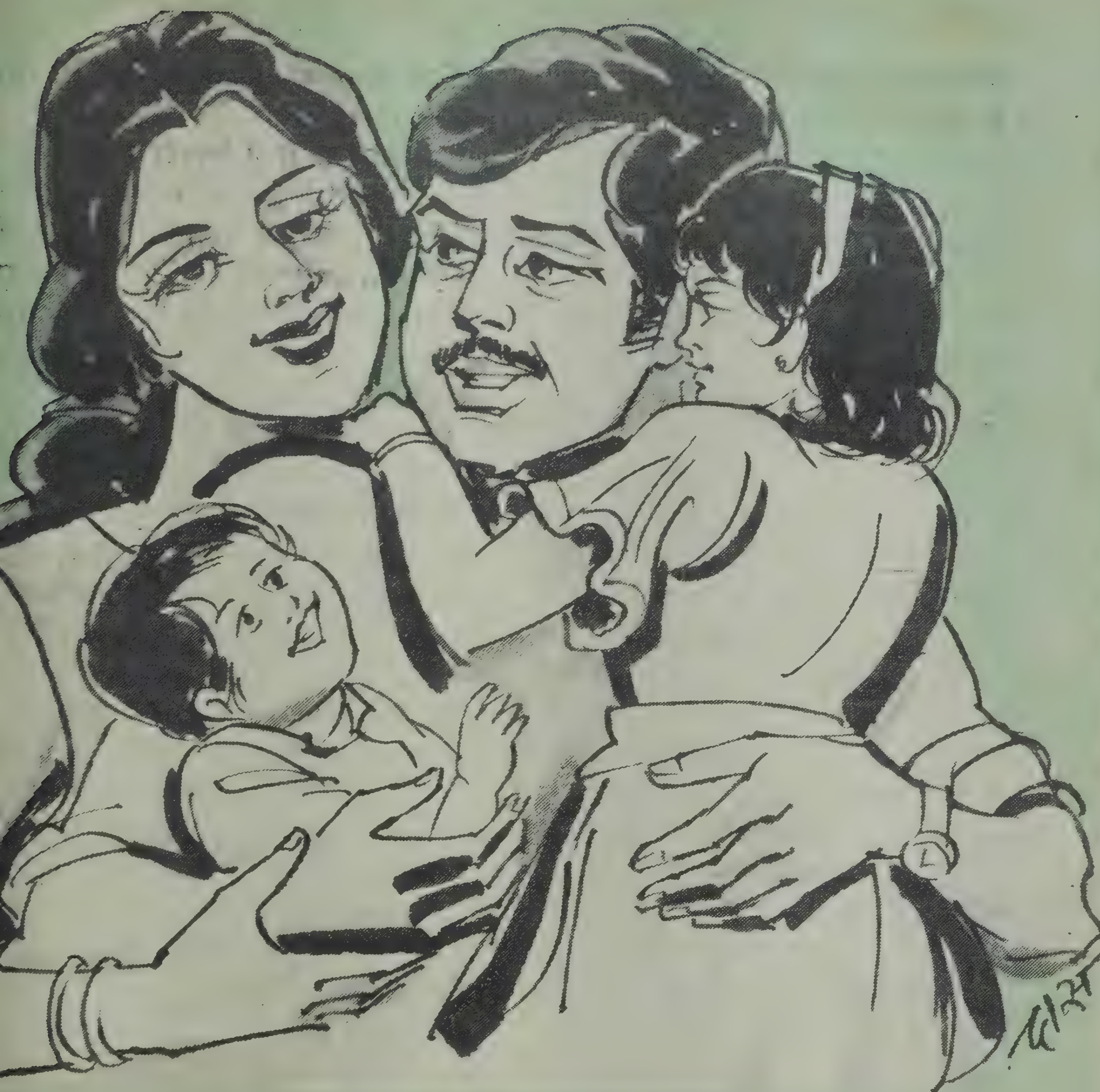
लाल साड़ी में लिपटी पूरे शृंगार में सजी भाभी दो वर्ष पूर्व के अपने दुलहन के रूप को साकार कर रही थीं. शीला दौड़ती हुई उन से जा लिपटी थी, "नहीं भाभी, तुम इतनी जल्दी नहीं जा सकती. नन्हे को कौन संभालेगा.... भैया, मां और बाबूजी को कौन देखेगा?"

अरथी उठी तो जबरदस्त मानसिक आघात के परिणामस्वरूप शीला बेहोश हो गई थी. होश में आने पर बारबार उसे भाभी का लाल साड़ी में लिपटा शव याद आता. प्रकृति प्रदत्त सुंदरता तो उन्हें प्राप्त थी ही, स्वभाव भी इतना अच्छा था कि हर कोई उन की ओर आकर्षित हो जाए.

भाभी सिर्फ मैट्रिक तक ही पढ़ पाई थीं. दो भाइयों की इकलौती बहन होने के कारण घर भर में सब की लाड़ली तो वह थीं ही लेकिन बीमार मां की देखभाल व छोटे भाइयों की देखरेख में स्वयं को व्यस्त कर पढ़ाई अधूरी छोड़ जो त्याग उन्होंने किया, उसी के कारण वह सभी की अधिकाधिक प्रिय होती चली गईं.

ढाई वर्ष पूर्व शीला के पिताजी व्यापार के सिलसिले में खंडवा गए थे. वहां एक परिचित व्यापारी के घर वह रात को रुके थे. इस दौरान व्यापारी की सुशील बेटी पिताजी को भा गई थी. दौड़दौड़ कर बगैर किसी शिकन, झुंझलाहट के अतिथि सत्कार में लीन, उस का सेवाभाव देख कर पिताजी उसे अपनी बहू के रूप में पसंद कर आए थे. फिर भैया ने भी अपनी स्वीकृति दे दी थी. छः महीने के भीतर ही विवाह हो गया था.

भैया की शादी के बाद शीला सप्ताह भर के लिए वहां रुक गई थी. कुछ भाभी के साथ मिल कर रहने का चाव था, कुछ शादी के वक्त हंगामे का रूप धरे घर को व्यवस्थित करने में मां की मदद करने का विचार था. उस की दो वर्ष की बेटी तब अचानक तेज बुखार की चपेट में आ गई थी.



"कैसे हैं, हमारे नन्हे साहबजादे?" अंदर आते ही रीतेश ने एक तरफ गुडिया और दूसरी तरफ नन्हे को बाँहों में भर लिया.

स कठिनाई के वक्त भाभी ने अपने धुमास के कार्यक्रम को रद्द कर के गुड़िया ो संभालने में जो सहारा दिया था, उसे ीला कभी नहीं भूल सकती.

रात को शीला को आराम करने की ाकीद दे कर भाभी स्वयं गुड़िया को अपने ास सुलातीं. ठीक समय पर दवा, पानी, दूध ादि देने की पूर्ण जिम्मेदारी उन्होंने निभाई ी. भैया नईनवेली दुलहन के इस रूप को ख कर मुग्ध हो गए थे. भाभी के प्रति घर हर सदस्य के मन में अपार स्नेह और म्मान पैदा हो गया था. शीला तो अपनी टी के जीवनदान में भाभी का बहुत बड़ा ागदान मानती थी.

अगले महीने भैयाभाभी घूमने निकले थे. वापसी में भाभी मां के लिए बादामी रंग की सिल्क की साड़ी, बाबूजी के लिए कुरतापाजामा, शीला के लिए शिफान की प्यारी सी साड़ी तथा दोनों देवरों के लिए टीशर्ट लाई थी. गुड़िया के लिए भी लाल रंग की आकर्षक फ्राक लाना वह नहीं भूली थीं. सभी संतुष्ट व प्रसन्न थे. सभी की आंखों में प्रशंसा के भाव थे.

छः महीने पश्चात मां को हलका सा दिल का दौरा पड़ा था. एक सप्ताह तक उन्हें हस्पताल में रखा गया. इस दौरान भाभी ने

जिस सूझबूझ, लगन व हिम्मत से इस कठिन घड़ी का मुकाबला किया था, वह अतुलनीय था. भागदौड़ में सवेरे से शाम कैसे हो जाती, पता ही न चलता. लेकिन भाभी के माथे पर कोई शिकन तक नजर न आती. पता नहीं वह कहां से इतनी सहनशीलता और त्याग बटोर लाई थीं. इतना सब करने के पश्चात कहतीं, "दीदी, समय ही कुछ ऐसा है कि न आप को कहीं घुमानेफिराने ले जा सकते हैं, न आप की खातिर ही कर पा रहे हैं. आप को भी यहां आ कर काम करना पड़ रहा है."

शीला सोचती, 'भाभी पता नहीं किस मिट्टी की बनी हैं, न कभी थकती हैं, न झल्लाती हैं. इन के स्थान पर कोई दूसरी होती तो पता नहीं क्या हाल करती. अपनी परेशानियों को भूल दूसरों की तकलीफें समझना, उन्हें हर संभव मदद करना कोई बिरला ही कर सकता है. इन्हीं गुणों के कारण ही तो भाभी सब की चहेती थी.'

एक दिन की घटना तो भुलाई नहीं जा सकती. पड़ोस में रहने वाली नीरू की शादी थी. बारात ठीक समय पर धूम मचाती, उत्साहित सी पहुंची ही थी कि किसी ने दूल्हे को उकसाते हुए कह दिया, "दुलहन के पैर में खराबी है."

बस, दूल्हा अड़ गया कि दुलहन को उस के सामने चलते हुए दिखाया जाए और डाक्टर से प्रमाणित कराया जाए, तभी वह शादी करेगा. कन्यापक्ष ने इस बेतुकी बात को प्रतिष्ठा का मुद्दा बना लिया और आपस में बहस शुरू हो गई. तभी न जाने कहां से भाभी वहां पहुंच गईं. सारा माजरा जान कर उन्होंने दूल्हे को बुला कर न जाने उसे क्या कहा कि वह खुशीखुशी अपनी भूल की क्षमा मांगते हुए विवाह की बेदी पर जा बैठा. सभी उपस्थित लोग इस समस्या को चुटकी में हल कर देने वाली भाभी की जी भर कर प्रशंसा कर रहे थे.

फिर तो भाभी सारे महल्ले की भाभी बन गईं. किसी को पापड़, बड़ी, अचार बनाना हो तो वह भाभी की राय व मदद लेने आ पहुंचती. किसी की लड़की का रिश्ता तय होना होता तो भाभी को बुला भेजती. किसी के घर शादी हो तो खरीदारी के लिए भाभी को साथ ले जाया जाता. साल भर में ही भाभी अत्यधिक लोकप्रिय तथा महल्ले भर की चहेती बन गई थीं. मांपिताजी भी अपनी बहू की प्रतिष्ठा पर गर्व महसूस करते थे.

जब मां को पता लगा कि भाभी, मां बनने वाली है तो उन की खुशी का ठिकाना न रहा. भाभी की सेवा का प्रतिदान देते हुए वह उन का अत्यधिक खयाल रखतीं, "बहू, फल, दूध रोजाना लिया करो. बच्चा स्वस्थ रहेगा, दिमाग पर कोई तनाव न आने देना, इस से बच्चे के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है. जिस चीज को खाने का मन करे, कह देना... मैं बना दूंगी."

मां की बातें सुन कर भाभी मुसकरा देतीं.

हालांकि भाभी कमजोर थीं. लेकिन मां के उचित मार्गदर्शन व सही देखरेख में वह ठीकठाक रहीं तथा समय पर उन्होंने पुत्र को जन्म दिया.

भतीजे के जन्म पर शीला भी मायके गई थी.

"भाभी, क्या नाम रखने का विचार है नन्हे का?" उस ने पूछा तो भाभी मुसकराते हुए बोलीं, "दीदी, नाम तो आपने रख ही दिया है."

"क्या...?" शीला हैरान थी.

"हां, अभी आप ने 'नन्हे' के नाम से नहीं पुकारा? कितना प्यारा नाम है." और बेटे का लाड़ का नाम 'नन्हे' ही पड़ गया था. गोरा सा तीखे नक्श, घने बाल, बिलकुल भाभी पर गया था, नन्हे.

भाभी की नसनस में सेवाभाव समाया था. तभी तो नन्हे की देखभाल में उन्हें स्वयं का भी खयाल न रहता. बिना उबला पानी भी उसे कभी न देतीं. फलों का रस, दाल का पानी भी नियमित रूप से देतीं. उस की मालिश भी स्वयं करतीं.

कभीकभी भैया मजाक में कह उठते, "तुम तो बेटे में इतनी व्यस्त हो गई हो कि अब हमारी ओर देखने की फुरसत ही नहीं है. भई दुनिया में अकेले तुम्हें ही तो बेटा नहीं हुआ."

"अच्छा, तो आप को जलन होने लगी." भाभी हंसती, "लेकिन अपने बेटे की देखभाल तो मैं इसी तरह करूंगी. हम ने कौन से सातआठ बच्चे करने हैं. एक नन्हा और एक... बस."

उस के बाद शीला भाभी से नहीं मिल पाई. उन की मौत का समाचार पा कर गई तो उन के मृत शरीर को नजर भर ही देखा था.

भाभी का निश्छल स्नेह, उन का मुसकराता चेहरा, अनुराग भरी बातें, हंसीमजाक याद आते तो शीला एक छटपटाहट सी महसूस करती. एक रीतापन सा कचोटने लगता.

सवेरे शीला उठी तो रीतेश ने उस के कुम्हलाए, उदास चेहरे को देख कर पूछा, "क्या बात है, शीला. आज बड़ी थकी हुई और परेशान नजर आ रही हो?"

"रात मैं ने एक सपना देखा है."

"सपने से परेशान हो गई? सपने तो सपने ही होते हैं." पति ने समझाया.

"रात सपने में भाभी आईं और मुझ से प्रार्थना करने लगीं कि नन्हे की देखभाल मैं करूं... अपना बेटा बना कर. उन का चेहरा बहुत उदास था." शीला के कहने पर रीतेश भी चौंक कर सोच में पड़ गया.

शीला भी मानसिक द्वंद्व में फंस गई. 'क्या यह संभव है? क्या मांपिताजी, भैया अथवा स्वयं उस के पति इस प्रस्ताव को स्वीकार कर पाएंगे? किसी की औलाद को अपनी मान कर पालना बड़ा कठिन कार्य है. क्या वह स्वयं उतनी ही ईमानदारी से नन्हे का पालनपोषण कर पाएगी, जिस तरह से गुड़िया का कर रही है?'

शाम को शीला, पति रीतेश और गुड़िया को साथ ले कर शहर के प्रसिद्ध उद्यान में चले गए. प्रकृति अपनी अनुपम छटा बिखेर रही थी. रंगबिरंगे फूलों, आकर्षक



दास्तां

सुनाता रहता हूं मैं
गमे दास्तां अपनी
हर किसी को, हर घड़ी,
हर महफिल में,
पर बंद हो जाते हैं लब,
नहीं सुनती जुबां मेरी,
जब कभी अनजाने से
'वो' सामने आ जाते हैं.

—धर्मपाल सभरवाल

पौधों तथा सघन वृक्षों को देख कर मन को कुछ शांति सी महसूस हुई. डूबते सूर्य के मद्धिम प्रकाश पर रात की कालिमा धीरेधीरे अपना आवरण डाल रही थी. बगीचे के बीचोबीच लगे पानी के फव्वारे रंगीन रोशनियों में बहुत आकर्षित लग रहे थे. कुछ देर घूमफिर कर जब वे लौटे तो शीला काफी हद तक स्वयं को तनावमुक्त महसूस कर रही थी.

अगले दिन भैया का फोन आया कि पिताजी को पक्षाघात का दौरा पड़ गया है तथा उन की हालत गंभीर है. शीला तो परेशान सी रोने ही लगी. रीतेश ने तसल्ली दी और दोनों उन्हें देखने बस से रवाना हो गए.

पिताजी को एक सप्ताह बाद हस्पताल से घर भेज दिया गया था. अब वह खतरे से बाहर थे, लेकिन उन के पास एक सदस्य का उपस्थित रहना आवश्यक था. अपनेआप वे कुछ कर नहीं पाते थे. दवा,

(शेष पृष्ठ 207 पर)

''देखिए पिताजी, वह युवक अब भी मुझे घूर रहा है.'' वर्षा धीरे से बोली.

''कोई तुम्हें देख रहा है, इस बात को ले कर झगड़ा तो नहीं किया जा सकता. फिर तुम्हें कैसे पता चला कि वह तुम्हें ही देख रहा है. इस का मतलब तो साफ है कि तुम भी उस की तरफ देख रही थी.'' नरेंद्रनाथ झुंझलाए स्वर में बोले.

''कोई मुझे घूरेगा तो क्या मुझे पता नहीं चलेगा? पर आप तो दोषी मुझे ही समझेंगे. ठीक है, अब मैं किसी से कुछ कहूंगी ही नहीं.'' वर्षा नाराजगी से बोली.

नरेंद्रनाथ की पत्नी निर्मला ने बेटी का पक्ष लेते हुए कहा, ''घर पर यह परेशान थी. इसलिए कुछ दिनों के लिए घूमनेफिरने निकले थे; परंतु यहां भी बेचारी के पीछे ही पड़े हो.''

''हांहां, तुम्हारी बेटी का सब से बड़ा शत्रु तो मैं ही हूं.'' नरेंद्रनाथ क्रोधित स्वर में बोले.

''देखो, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, छोटीछोटी बातों को इतना तूल मत दिया करो. घर से यह सोच कर निकले थे कि सारी कड़वाहट भुला कर कुछ दिन चैन की सांस ले सकेंगे, पर तुम दोनों तो अपने तनावों को भूलना ही नहीं चाहते. जिस बात के लिए इतना क्रोधित हो रहे हो, वह हंसी में भी टाली जा सकती थी.'' निर्मला ने पति को घूरते हुए कहा.

कहानी ● शकुंतला शर्मा

संयोग



वर्षा अपने मातापिता के साथ श्रीनगर घूमने गई तो वहां उस की मुलाकात राहुल से हुई और उसे दस वर्ष पहले की घटना याद आई. दस वर्ष के बाद राहुल का यूं मिलना संयोग था या पूर्वनिश्चित योजना, यह वर्षा आखिर तक नहीं समझ पाई.



"कशमीर घूमने आए हैं क्या?" राहुल के पूछने पर नरेंद्रनाथ ने मुसकरा कर कहा "हां, कभी देखा नहीं था, सोचा एक बार घूम ही लें."

"ठीक है, अब मैं कुछ कहूंगा ही नहीं. जो जिस के मन में आए, वह करो."

तभी शिकारे का मालिक अब्दुल आ खड़ा हुआ.

"आज कहां जाना है, साहब. खाना साथ ले जाएंगे या यहीं खाएंगे?" उस ने पूछा तो तीनों में से किसी को कोई उत्तर नहीं सूझा.

"हम अपने कार्यक्रम के संबंध में तुम्हें सूचित कर देंगे, अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है."

निर्मला ने अब्दुल की ओर देखते हुए कहा. फिर पति और बेटी को संबोधित करते हुए बोली, "दोनों यों ही मुंह फुलाए बैठे रहोगे या कहीं घूमने भी चलोगे? श्रीनगर क्या केवल शिकारे में बैठने के लिए आए थे?"

"तुम दोनों घूम आओ. मैं कुछ आराम करना चाहता हूं." नरेंद्रनाथ ने निर्णय सुनाया.

"इतनी छोटीछोटी बातों पर मुंह फुलाना क्या अच्छा लगता है? चलो आज शालीमार और निशात बाग देख आते हैं. कल पहलगाम चलेंगे." निर्मला ने पति की ओर देखा.

"ठीक है, तुम दोनों तैयार हो जाओ. इतनी देर में मैं एक प्याला चाय पी लेता हूं." कहते हुए नरेंद्रनाथ आंखें मूंद कर कुरसी की पीठ से सिर टिका कर बैठ गए. घरपरिवार के बारे में सोचतेसोचते उन का मन अतीत की गलियों में भटकने लगा था.

उस की इकलौती संतान वर्षा रूप और गुण में किसी भी तरह कम नहीं थी. एक कालिज में व्याख्याता के पद पर वह नौकरी कर रही थी.

पर पतिपत्नी दोनों उस की बढ़ती आयु से चिंतित हो उठे. बेटी के अपेक्षित वर के लिए प्रारंभ में उन्होंने बड़े ऊंचे मापदंड रखे थे. पर एकएक करके वे कई रिश्तों को ठुकराते चले गए थे. उन की कसौटी पर कोई खरा उतरता ही नहीं था. कोई न कोई कमी रह ही जाती थी.

पर जब उन की आंखें खुलीं तो काफी देर हो चुकी थी. एक तो वर्षा की आयु 25 वर्ष पार कर चुकी थी. ऊपर से उन के बारे में यह मशहूर हो चुका था कि वह इतने नकचढ़े हैं कि रिश्ता जोड़ने से अधिक तोड़ने में विश्वास करते हैं. अतः वह जहां बात चलाते, वर पक्ष वाले कोई न कोई बहाना बना कर कन्नी काटने का प्रयत्न करते.

फिर तो उन के उच्च मापदंड अपनेआप नीचे खिसकने लगे थे और अंततः उन्होंने भारी दहेज का वादा कर के जहां वर्षा का संबंध पक्का किया था, वह नरेंद्र बाबू द्वारा ठुकराए गए संबंधों की तुलना में कहीं भी नहीं ठहरता था.

उन की पत्नी निर्मला ने खामोशी से सब कुछ स्वीकार कर लिया था और वर्षा पिता के सामने मुंह खोल सके. इतना साहस ही कहां था, उस में. वैसे भी संबंध पक्का होने पर उस ने राहत की सांस ली थी. कम से कम रोज के देखनेदिखाने से तो पीछा छूटा था.

पर हर तरफ से आंखें मूंद लेना भी रास न आया. वर पक्ष ने विवाह से चार दिन पहले इतनी बड़ी मांग उन के सामने रख दी, जिसे पूरा करना उन के वश में नहीं था. फिर भी उन्होंने निश्चय किया कि वह अपनी जीवन भर की कमाई यानी मकान को बेच कर अपनी बेटी के हाथ पीले कर देंगे.

नरेंद्रनाथ के इस निर्णय को सुन कर वर्षा अपना संतुलन खो बैठी थी, "भारी दहेज देने की बात पर जब आप ने संबंध पक्का किया था तो मैं कुछ नहीं बोली, क्योंकि उतना व्यय करने में आप समर्थ थे. पर मैं अपने जीतेजी आप को घर फूंक तमाशा नहीं देखने दूंगी."

"घर मेरा है, मेरे नाम है. मेरा मन होगा तो रखूंगा. नहीं मन होगा तो बेच दूंगा. तुम होती कौन हो मुझे रोकने वाली?" नरेंद्रनाथ बिफर उठे थे.

"ठीक ही तो कह रही है, वर्षा? ऐसे लोगों का क्या भरोसा? विवाह के चार दिन पहले जो चार लाख नकद मांगने लगे, विवाह के बाद वह ऊलजलूल मांगें नहीं करेंगे, इस

और भी आतंकित करने लगा था. वह लक्ष्यहीन एक कक्ष से दूसरे कक्ष में घूमते रहते.

परंतु वर्षा के लिए उन्होंने स्वयं को संभाला था, जो प्रस्तर प्रतिमा सी केवल

"आप का हम से श्रीनगर में मिलना और उस के बाद की घटनाएं क्या केवल संयोगमात्र थीं," मौका मिलते ही वर्षा ने राहुल से पूछा.



बात का ही क्या आश्वासन है." पत्नी ने भी बेटी का ही साथ दिया था.

विवाह में केवल दो दिन शेष रह गए थे. घर मित्रों और संबंधियों से भरा था. विवाह टूटने की खबर फैलते ही कहकहे, फुसफुसाहटों में बदल गए थे. वे लोग सांत्वना देते तो नरेंद्रनाथ को लगता, जैसे उन्हें थप्पड़ मार रहे हों. धीरेधीरे घर खाली होने लगा था. पर खाली घर तो उन्हें शून्य में ताकती रहती. निर्मला घर में छाई उस असह्य चुप्पी को तोड़ने का सतत प्रयास कर रही थीं और यह उन्हीं का सुझाव था, जिसे मान कर नरेंद्रनाथ पत्नी और बेटी के साथ एक माह का कार्यक्रम बना कर घूमने निकल पड़े थे.

दोचार दिनों में ही वर्षा के चेहरे की रंगत बदल गई थी. बीते दिनों की सारी कड़वाहट भुला कर घूमनेफिरने में दिन

हंसीखुशी से बीत रहे थे. पर पितापुत्री के बीच हुए वार्तालाप से वातावरण पुनः तनावपूर्ण हो उठा था.

उन की नजर वर्षा पर पड़ी तो मन में एक हूक सी उठी. छोटीछोटी बातों को सम्मान का प्रश्न बना कर वह यात्रा का आनंद समाप्त नहीं करना चाहते थे. वह उदासी को झटक कर बोले, "चलो, आज शालीमार और निशात घूम कर आते हैं."

तीनों तैयार हो कर रोज की तरह निकल पड़े. शालीमार बाग में पहुंच कर प्रफुल्लित मन से उस का सौंदर्य निहारते रहे. वर्षा और निर्मला नरेंद्रनाथ से कुछ ही दूरी पर खड़ीं फोटो खींचने की तैयारी कर रही थीं कि निर्मला पति के चेहरे को अचानक ही तनावग्रस्त होते देख चौंकी, वह भी उसी दिशा में देखने लगीं, जिधर नरेंद्रनाथ की निगहें जमी थीं. 15-20 कदम के फासले पर चारपांच युवकों के समूह में वह युवक भी खड़ा था जो सुबह शिकारे के पास वर्षा को घूर रहा था और अब भी उस की निगाहें वर्षा पर जमी थीं.

निर्मला तेजी से पति के पास पहुंची. "आओ, यहां से चलें, रात को ध्वनि व प्रकाश कार्यक्रम होगा, उस के टिकट खरीदते हैं."

"तुम चुप करो, मैं इस युवक से साफसाफ बात करना चाहता हूं. कुछ दिनों के लिए हम घूमने निकले हैं और यह हमारे पीछे पड़ा है."

निर्मला कोई नया बखेड़ा खड़ा नहीं करना चाहती थी. पर जब तक वह पति को खींच कर दूसरी ओर ले जाती, वह उस युवक को अपनी ओर आने का इशारा कर चुके थे.

पर जब वह युवक आते ही नरेंद्रनाथ के चरणों में झुक गया तो पतिपत्नी किंकर्तव्यविमूढ़ से खड़े रह गए.

"आप प्रोफेसर नरेंद्रनाथ हैं न? पहले आप को झेलम में शिकारे के पास देखा था. आप तो बिलकुल ही बदल गए हैं. पर वर्षा का चेहरा जानापहचाना सा लगा. लेकिन अभी आप ने बुलाया तो मैं समझ गया कि आप प्रोफेसर नरेंद्रनाथ ही हैं." युवक ने मुसकराते हुए कहा.

"हां, मैं तो नरेंद्रनाथ ही हूं. पर तुम कौन हो? मैं ने पहचाना नहीं तुम्हें?"

"कैसे पहचानेंगे साहब. समय भी कितना बीत गया है. मैं राहुल हूं. आप के पड़ोस में रहता था. आप का ही विद्यार्थी था." युवक ने परिचय देते हुए कहा.

वर्षा ने तो युवक का स्वर सुनते ही उसे पहचान लिया था. वह दूर खड़ी सब कुछ देखसुन रही थी. नरेंद्रनाथ युवक का परिचय सुन कर चौंक उठे. कहां तो वह उसे फटकारने की तैयारी कर रहे थे और कहां अब मुख से शब्द ही नहीं निकल रहे थे.

"कशमीर घूमने आए हैं क्या?" बात राहुल ने ही आगे बढ़ाई.

"हां, कभी देखा नहीं था, सोचा एक बार घूम ही लें. तुम आजकल कहां हो? क्या कर रहे हो?" नरेंद्रनाथ ने मुसकराते हुए पूछा.

"हम लोग तो जम्मू में रहते हैं. पिताजी ने वहीं घर बनवा लिया है.सेवा-निवृत्त हो कर उन्होंने एक छोटी सी डब्बे बनाने की फैक्टरी खोल ली है. मैं एक बीमा कंपनी में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य कर रहा हूं." राहुल ने अपने साथ आए अन्य युवकों का परिचय कराया. सब उस के चचेरेममेरे भाई थे.

नरेंद्रनाथ तो राहुल से एकदम घुलमिल गए. निर्मला भी कभीकभी वार्त्तालाप में भाग ले लेती. पर वर्षा बिलकुल अलगथलग पड़ गई थी.

वे शिकारे में लौटे तो रात घिर आई थी.

"राहुल को देखते ही मैं तो हैरान रह गया, कितना बदल गया है." नरेंद्रनाथ पत्नी से बोले.

"मैं भी तो पहचान नहीं पाई." निर्मला ने पति की ओर देखा.

"क्या कहूं निर्मला, आज अपने किए

पर कितना पश्चात्ताप हो रहा है. स्वयं राहुल के मातापिता ने अपनी वर्षा को मांगा था, पर तब न जाने मुझ पर क्या झक सवार थी," नरेंद्रनाथ एकाएक दुखी हो उठे.

"अब गड़े मुर्दे उखाड़ कर अपने मन को दुखी करने से क्या लाभ?" निर्मला उदास स्वर में बोली.

पर वर्षा के जीवन में तो इस तरह राहुल के प्रकट होने से सब कुछ उलटपुलट ही हो गया था. अतीत कई रूपों में आंखों के सामने आ कर उसे चिढ़ा रहा था. घर में कोई भी नहीं जानता था कि उस समय वह भी राहुल की दीवानी थी. कितने सपने देखे थे दोनों ने और न जाने कितनी शामें एकसाथ बिताई थीं. परंतु पिता ने किसी भी मूल्य पर वर्षा का हाथ राहुल के हाथ में न देने का अटल निर्णय सुना दिया था.

जब राहुल ने वर्षा से पिता का विरोध कर चुपचाप विवाह कर लेने को कहा था तो वर्षा घबरा कर पीछे हट गई थी. अपने स्वार्थ के लिए मातापिता को इतना बड़ा दुख पहुंचाने की बात वह सोच भी नहीं सकती थी.

वर्षा सुबह उठी तो उस का सिर भारी था. राहुल के संबंध में सोचतेसोचते उसे बहुत देर से नींद आई थी. वह स्नानघर में जा रही थी कि अचानक उसे पास के कमरे से पिता का स्वर सुनाई दिया, "तुम कहो तो राहुल से बात चलाऊं."

"कैसी बातें करते हो, लगभग 10 वर्ष बीत गए हैं. क्या वह अभी तक कुंआरा ही बैठा होगा?" निर्मला ने पति को जवाब दिया.

तभी तमतमाती हुई वर्षा मातापिता के कमरे में आ पहुंची और ऊंचे स्वर में बोली, "मैं ने आप से कहा था न कि मेरे विवाह के संबंध में न आप बात करेंगे और न सोचेंगे. लेकिन पता नहीं, आप लोग मुझे शांति से क्यों नहीं रहने देते." कहते हुए उस के नेत्र डबडबा आए थे.

"ठीक ही तो कहती है," निर्मला गुस्से से बोलीं, "थोड़े दिनों के लिए स्वयं भी चैन



जिंदगी

हर ख्वाब लुटालुटा
हर तमन्ना बुझीबुझी,
जिंदगी मेरी लगती है
एक दरिया रुकीरुकी.

—सवि सिंह 'सविता'

से रहो और उसे भी रहने दो. राहुल या तो विवाह कर चुका होगा और अगर नहीं भी किया होगा तो आप के प्रस्ताव को वह कभी नहीं मानेगा. तब आप ने उसे ठुकराया था, अब वह आप को ठुकरा देगा."

"ठीक है वर्षा, तैयार हो जाओ, आज पहलगाम चलेंगे. छोड़ो ये सब बातें." नरेंद्रनाथ उठ खड़े हुए.

"मां, मैं आज बाल धो लेती हूं. अच्छी धूप निकली है और ठंड भी कम है." वर्षा ने मां की ओर देखते हुए कहा.

"धो ले, गरम पानी ले लेना." निर्मला मुसकराते हुए बेटी से बोली.

तैयार हो कर मातापिता की प्रतीक्षा में धूप में खड़ी वर्षा परिचित स्वर सुन कर चौंक उठी, "कहिए, कैसे कट रही है, जिंदगी." राहुल मंदमंद मुसकराते हुए उस की ओर देख रहा था.

"मैं आप का आशय समझ गई हूं. अभी अकेली ही हूं और मातापिता के साथ घूमने आई हूं. आप को कोई ऐतराज?" वर्षा

ने मुसकराते हुए उत्तर दिया.

"मुझे भला क्यों ऐतराज होने लगा? आप अपनी मरजी की मालिक स्वयं हैं. वैसे आप अभी तक अकेली हैं. यह जान कर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ. आप के पिताजी आप के लिए जिस सर्वगुण संपन्न वर की खोज कर रहे हैं, उसे ढूंढ़ने के लिए 10 वर्ष तो क्या पूरा जीवन भी बीत जाए तो मुझे हैरानी नहीं होगी." राहुल ने वर्षा की आंखों में झांकते हुए कहा.

"मेरे पिताजी के संबंध में इस तरह व्यंग्यपूर्ण लहजे में बात करने का अधिकार किस ने दिया है, आप को?"

"ओह... तो आप की पितृभक्ति अभी तक उसी तरह कायम है. तब तो स्थिति और भी चिंताजनक है."

"मुझे आप की सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है." वर्षा ने लापरवाही से उत्तर दिया.

"मेरे पास आप जैसे लोगों के लिए सहानुभूति है भी नहीं..." राहुल शायद और कुछ कहता, पर तभी नरेंद्रनाथ आते दिखे.

"आज कहां का कार्यक्रम है राहुल?"

"हम तो पहलगाम जा रहे हैं. आप कहां जा रहे हैं?" राहुल ने उत्तर दिया.

"वाह! क्या संयोग है. हम भी पहलगाम ही जा रहे हैं."

"चलिए, अच्छा है, साथ अच्छा हो तो घूमनेफिरने का आनंद दोगुना हो जाता है." राहुल ने एक नजर वर्षा की ओर देखा.

वर्षा की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह कैसा संयोग है कि जहां जाने का वे कार्यक्रम बनाते हैं, वहीं राहुल और उस के साथी भी चल पड़ते हैं.

शाम को पहलगाम से लौटते ही वर्षा ने ऐलान कर दिया कि वह मेरठ लौटना चाहती है.

"लेकिन बेटी, हमारा तो श्रीनगर में ही 15 दिन रहने का कार्यक्रम था और अभी तो एक सप्ताह ही हुआ है." नरेंद्रनाथ बेटी से बोले.

"स्वयं से भाग कर कहां जाएंगे, पिताजी, हम सब कुछ भूल जाने के लिए घर से निकले थे, पर कुछ भी नहीं भूल पाए. यहां आ कर एक बात अवश्य समझ में आ गई कि इन ऊंचेऊंचे पहाड़ों, झरनों और झीलों के बीच हमारा अस्तित्व कितना तुच्छ है और उस से भी तुच्छ हैं हमारी आशाएं और आकांक्षाएं. पर हम उन्हें ही पहाड़ सा बड़ा समझ लेते हैं. इन दिनों में मैं ने बहुत कुछ सोचा है. आप ही बताइए क्या केवल विवाह ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है? मेरे सामने तो अभी बहुत कुछ करने को शेष है." वर्षा ने गंभीर स्वर में कहा.

दूसरे दिन सुबहसुबह उन्होंने सामान बांध लिया. जम्मू जाने के लिए जब वे बस अड्डे पहुंचे तो राहुल भी वहां उपस्थित था. वह आश्चर्य से बोला, "अरे, आप लोग भी आज ही जा रहे हैं? आप तो कुछ दिन और रुकने वाले थे?"

"यों ही वर्षा का मन उचट गया था. परंतु तुम ने तो बताया ही नहीं था कि आज ही जा रहे हो." नरेंद्रनाथ ने राहुल से पूछा.

"मेरा तो आज ही जाने का कार्यक्रम था, लेकिन मेरे साथी अभी और कुछ दिन रुकेंगे." राहुल ने वर्षा की ओर देखा.

वर्षा की समझ में नहीं आ रहा था कि उन के हर कार्यक्रम का पता राहुल को पहले से कैसे लग जाता था.

जम्मू बस अड्डे पर उतरे तो राहुल पीछे ही पड़ गया, "यहां तक आ कर मेरे मातापिता से मिले बिना आप चले जाएंगे तो उन्हें कितना बुरा लगेगा."

"पर हमें जाना है. दो घंटे बाद ही तो दिल्ली के लिए गाड़ी है, फिर कल तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी," वर्षा ने उपेक्षा से कहा.

"तो कल चले जाना, चाचाजी," राहुल ने वर्षा की उपेक्षा को नजरअंदाज करते हुए कहा, "आप कौन सा रोजरोज जम्मू आ रहे हैं. आखिर इतने दिनों तक आप और हम पड़ोसी रहे हैं. मां और पिताजी आप से मिल

कर कितने प्रसन्न होंगे."

नरेंद्रनाथ और न टाल सके. मजबूरी में वर्षा को भी मातापिता के साथ जाना पड़ा.

राहुल के पिता पुरानी कटुता भुला कर नरेंद्रनाथ से गले मिले.

"अब आए हो तो एक दिन रुक कर ही जाओ." राहुल की मां ने निर्मला से कहा.

पुराने पड़ोसी मिले तो बातों का पिटारा ही खोल बैठे.ऐसे में जब दुनिया भर की बातें हो रही थीं, तब वर्षा के विवाह का प्रसंग न आता, भला यह कैसे संभव था.

"उन दिनों वर्षा को आप लोग स्वयं मांग रहे थे. उस संबंध को ठुकरा कर हम कितना पछता रहे हैं, आप को क्या बताएं." हाल ही में टूटे वर्षा के विवाह की बात करते हुए नरेंद्रनाथ बोले.

"हम तो अब भी वर्षा के स्वागत को तैयार हैं." राहुल की मां बोली.

"क्या कह रही हैं बहनजी, 10 वर्ष हो गए उस बात को. क्या अभी तक राहुल ने विवाह नहीं किया?" निर्मला देवी आश्चर्य से बोलीं.

"नहीं, उसे तो एक ही धुन थी कि विवाह करेगा तो वर्षा से, नहीं तो आजीवन कुंआरा रहेगा."

"फिर वह? जो अभी आई?"

"वह जो चायनाश्ता करवा रही थी?"

"हां."

"वह नीरजा है, छोटे बेटे ऋत्विक की पत्नी. जब राहुल किसी भी तरह विवाह के लिए सहमत नहीं हुआ तो हम ने ऋत्विक का विवाह कर दिया." राहुल की मां बोलीं.

फिर तो आननफानन में सब बातें तय हुईं और विवाह की तिथि भी निश्चित हो गई.

वर्षा और उस के मातापिता को पूरा परिवार स्टेशन पर छोड़ने आया था.

"एक बात पूछूं?" मौका मिलते ही वर्षा ने राहुल से कहा.

"हां पूछो."

"आप का हम से श्रीनगर में मिलना और उस के बाद की घटनाएं क्या केवल संयोग मात्र थीं?"

"इस रहस्य को अभी रहस्य ही रहने दो, वर्षा." राहुल ने जोर का ठहाका लगाया.

तभी रेलगाड़ी ने सीटी दी. एक सप्ताह पूर्व इसी रेलगाड़ी से वर्षा उतरी थी. परंतु इस बीच कितना कुछ बदल गया था. राहुल से विदा ले कर लपक कर रेलगाड़ी में चढ़ गई. प्लेटफार्म पीछे छूटता गया, पर वहां खड़ा राहुल उस के मनमस्तिष्क में बसा उस के साथ ही जा रहा था. ●

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार न करें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है. —संपादक

भूल

कहानी • कुसुम गुप्ता

माया हतप्रभ रह गई. उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि वह यह क्या पढ़ रही है. उस का सीधा हाथ कांप रहा था. उस में पकड़ा हुआ, अधपढ़ा पत्र कांपती उंगलियों से फिसल कर नीचे जा गिरा.

उस ने नजरें ऊपर उठाईं. शून्य में ताका, अनायास उस के मुख से चंद शब्द निकल गए, ''हाय यह क्या हुआ?''

श्याम पास ही बैठे कोई पत्रिका पढ़ रहे थे. उन्होंने माया की उद्विग्नता को देखा और बोले, ''क्या हुआ?''

माया ने कोई उत्तर न दिया. चुपचाप फर्श से पत्र उठाया और पति की ओर बढ़ा दिया.

''किस का है?'' श्याम ने पत्र थामते हुए पूछा.

''स्वयं देख लीजिए,'' कह कर माया कुछ क्षण रुकी. फिर भर्राए स्वर में बोली, ''समझ में नहीं आता, उस ने ऐसा क्यों किया? क्या उसे हम पर विश्वास नहीं था? मुझ से कहां गलती हुई? अवश्य हम से कहीं भयंकर चूक हुई है, वरना...''

माया की दृष्टि श्याम के मुख पर गड़ी हुई थी. उन्होंने पत्र पढ़ा, फिर चश्मा उतार कर मेज पर रख दिया और शायद स्वयं से ही बोले, ''उसे भय था कि हम उस के मार्ग में बाधा बन जाएंगे. आखिर उस के मन में हमारे प्रति यह अविश्वास क्यों जनमा?''

श्याम बेहद गंभीर और विचारमग्न हो गए. एक दीर्घ निःश्वास छोड़ वह याचक दृष्टि से माया को देखने लगे.

''मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है. यह ठीक है कि मैं अपने तरीके से इस घर का संचालन करती रही हूं. पर क्या मैं ने घर को ठीक ढंग से नहीं चलाया? क्या मैं कभी भी तानाशाह बनी? मैं ने किसी पर अपनी राय अथवा मरजी कभी भी थोपी? फिर भारती ने यह कदम क्यों उठाया?''

श्याम सिर्फ श्रोता बने बैठे रहे. वह कुछ कहना चाहते थे, पर उन्होंने स्वयं को संयत कर लिया. इस समय माया स्तंभित तथा व्यथित थी. अतः वह मुसकराए. फिर निश्चिंत स्वर में बोले, ''माया, इतिहास स्वयं को दोहरा रहा है.''

पलांश में माया वर्तमान से अतीत की यात्रा पर निकल गई. श्याम ने ठीक ही कहा था. इतिहास एक कड़वी सचाई होता है और अकसर स्वयं को दोहराता है.

''आज से 25 वर्ष पूर्व जो कुछ हुआ,





"किस का है?" श्याम ने पत्र थामते हुए पूछा. "स्वयं देख लीजिए." माया ने कोई उत्तर न दे कर सिर्फ इतना ही कहा.

"तू आगे पढ़ेगी? तेरी बुद्धि खराब हो गई है? अरी, जब मैं 18 साल की थी तो दो बच्चों की मां बन चुकी थी."

"मां, क्या यह जरूरी है कि जो कुछ तुम ने किया वह सब तुम्हारे बच्चे भी करें?" उस ने घोर वितृष्णा से कहा.

"ज्यादा जबान मत चला. तेरे पिता तो पिछले साल ही तेरी शादी करने वाले थे. वह तो मैं ने मना कर दिया कि उसे इंटर तो कर लेने दो."

"पर मां..."

"तेरे पीछे दो और भी बैठी हैं. उन के भी तो हाथ पीले करने हैं." मां ने घूरते हुए कहा.

वह समझ गई कि ये वे तिल नहीं, जिन से तेल निकल सके.

माया के हाथ में भारती का पत्र था और आंखों में अतीत की परछाइयां. उस का जीवन भी उन्हीं राहों से गुजरा था जिन से आज भारती गुजर रही थी. फर्क था तो केवल इतना कि जो कुछ माया के मातापिता ने जानबूझ कर किया था वही वह अनजाने में ही कर बैठी थी.

ह याद है?" श्याम का स्वर वह उंगली थी, जसे पकड़ कर वह अतीत की यात्रा पर नकल गई थी.

तब माया 18 वर्ष की थी. उस ने प्रथम णी में इंटर पास कर लिया था. वह आगे ढ़ कर डाक्टर या इंजीनियर बनना चाहती ी.

परंतु उस के पुरातनपंथी, अनुदार चारधारा वाले परिवार में उस की इस हत्त्वाकांक्षा की प्राप्ति में सहयोग देने वाला ोई भी नहीं था.

जब उस ने मां से आगे पढ़ने के विषय कहा तो उन की आंखें विस्मय से फैल गईं.

एक दिन उस ने पिता को बहुत खुश देख कर अपनी आकांक्षा उजागर कर दी.

सुनते ही पिता के चेहरे की खुशी की धूप अचानक ढल गई. वह बोले, "अरी पगली, पढ़लिख कर कौन सा तीर मार लेगी. शादी कर के घरगृहस्थी जमा. यही लड़की का कर्तव्य है."

"पिताजी, क्या लड़की का जन्म इसी लिए होता है?"

"बिलकुल, पढ़लिख लेगी तो शादी होनी मुशकिल हो जाएगी. लड़का कहां से मिलेगा?"

"पिताजी, मैं पढ़ूंगी. चाहे कुछ भी

हो.'' वह जिद पर उतर आई थी.

''देख माया, मेरे पास न तो तुझे आगे पढ़ाने की आर्थिक सामर्थ्य है और न ही इस खानदान की लड़कियां आठवीं कक्षा से आगे पढ़ी हैं. तू ने इंटर पास कर लिया, यही बहुत है.'' पिता के निर्णायक उत्तर के समक्ष वह मौन हो गई.

माया के मन में श्याम के रूप में आभा की एक क्षीण किरण चमक रही थी.

उस शाम वह खूब रोई. रात को न खाना खाया, न ही सो पाई. भविष्य की दुश्चिंताओं ने उसे मथ रखा था. वह बेहद उदास थी. क्या लड़कियों को अपनी रुचि, इच्छाओं के अनुरूप जीने का कोई अधिकार नहीं?

''है क्यों नहीं है.'' एक बार श्याम ने कहा था.

श्याम पड़ोस में रहता था. वह उस से तीन वर्ष बड़ा था. बी.काम कर के वह चार्टर्ड अकाउंटेंसी की तैयारी कर रहा था. पहला सत्र उत्तीर्ण करते ही उसे एक संस्थान में नौकरी मिल गई थी.

श्याम के घर वालों के साथ उस के अच्छे संबंध थे. निःसंकोच माया उन के घर चली जाती थी. श्याम भी कभीकभार उन के घर चला जाता था.

अगले दिन माया श्याम के घर गई. वह घर में अकेला ही था. उसे देखते ही बोला, ''क्या बात है, माया? तुम बड़ी परेशान नजर आ रही हो.''

''आप को कैसे पता चला?'' उस ने चौंक कर पूछा.

''ये आंखें बड़ी चुगलखोर होती हैं. लगता है, तुम रात भर रोती रही हो.'' श्याम ने अनुमान लगाया.

माया भरी बदली थी. श्याम की सहानुभूति का तनिक सा स्पर्श पाते ही बरसने लगी.

श्याम ने उस के तपते मन पर अपनी सहानुभूति की शीतल वर्षा सी की. ''यह तो तुम्हारी प्रतिभा के साथ अत्याचार है. तुम्हारे अभिभावक यह क्यों नहीं समझते कि एक सुशिक्षित, सुसंस्कृत तथा प्रतिभावान मां के बच्चे भी इन्हीं गुणों से विभूषित होते हैं.''

''यह उन की समझ से परे की बात है. वे शिक्षा को न कोई महत्त्व देते हैं और न ही आगे देंगे.''

''फिर क्या किया जाए?'' श्याम ने पूछा, ''चाचाजी को समझाने की कोशिश करूं?''

''व्यर्थ है. पत्थर की चौखट पर सिर पटकने से चोट खुद को ही लगेगी.''

श्याम को समस्या का समाधान असंभव सा लगा. पर उस दिन एक नई शुरुआत हुई थी. समझ या आत्मीयता का एक छोटा सा बीज बोया गया उन दोनों के बीच, जो बाद में एक खुशबूदार फूल के पौधे के रूप में प्रस्फुटित हो गया.

वे दोनों घर के बाहर चोरीछिपे मिलने लगे. शीघ्र ही उन्हें महसूस हुआ कि वे एकदूसरे से प्रेम करने लगे हैं. परंतु उन्हें पता था कि इस का अंत भी दुखदायी होगा. वे दोनों कदापि विवाह बंधन में नहीं बंध सकते थे, क्योंकि माया ब्राह्मण परिवार की कन्या थी और श्याम कायस्थ थे. माया को पता था कि उस के मातापिता इस अंतर्जातीय विवाह के लिए कभी भी राजी नहीं होंगे.

कुछ दिन पश्चात माया को पता लगा कि पिता ने उस के लिए मेरठ जनपद के एक गांव में लड़का देखा है. वह केवल छठी कक्षा तक पढ़ा था और वहीं गांव में कोई छोटामोटा व्यापार करता है.

स्वयं से कम पढ़ालिखा लड़का और दिल्ली जैसे महानगर के जीवन की आदी लड़की का गांव में जा कर रहना, इन दो तथ्यों ने माया को छटपटा दिया. वह श्याम से मिली. अश्रुप्रवाह और हिचकियों के बीच उस ने अपनी संपूर्ण व्यथा कथा उसे सुना दी.

''यह नहीं हो सकता. तुम्हारे जैसी प्रतिभावान लड़की का जीवन इस तरह नष्ट नहीं हो सकता. मैं करूंगा तुम से शादी.'' श्याम ने अंतिम फैसला कर लिया तो माया



श्याम के कंधे से लग कर सिसकने लगी.

श्याम ने साहस जुटाया. वह पत्र लिख कर माया के पिता को दे आया.

पत्र पढ़ते ही माया के पिता ज्वालामुखी की तरह फट पड़े, "इसे कहते हैं, आस्तीन का सांप. पड़ोसी है, घर आनाजाना है तो इस का यह मतलब तो नहीं कि पड़ोसियों की जवान लड़कियों को फुसलाया जाए."

"क्या हुआ?" माया की मां भी आ गईं युद्धक्षेत्र में.

"ये कायस्थ हम ब्राह्मणों की लड़की से शादी करना चाहते हैं. इन की इतनी हिम्मत. हमारे लिए क्या ब्राह्मण लड़कों का अकाल पड़ गया है."

"अजी, मुझे तो पहले ही इस छोकरे का घर में आनाजाना नहीं सुहाता था. मैं जानती थी, वह माया के चक्कर में ही इस घर के आसपास मंडराया करता था."

"मां, क्षमा करना अपनी बेटी की धृष्टता के लिए." कहती हुई भारती माया के वक्ष से चिपक गई.

पहले तो घर में कलह हुआ. उस के बाद दोनों परिवारों में खूब झगड़ा हुआ. दोनों घरों के संबंध खराब हो गए. आनाजाना, बोलचाल तक बंद हो गई. माया पर विशेष अनुशासन के बंधन कस दिए गए. उस का घर से निकलना बंद कर दिया गया.

पर एक दिन पंछी उड़ गया. जहां चाह, वहां राह. दोनों घरों के बीच महरी के रूप में एक संपर्क सूत्र बचा था. वह दोनों घरों के बरतन मांजती थी. वही पैसों के लोभ में पत्र संवाहक बन गई.

पत्रों के आदानप्रदान ने ही माया को मुक्ति दिलवाई.

श्याम ने माया को सूचित किया था कि उस की कंपनी की एक शाखा बंगलोर में है.

यदि वह वहां जा कर स्वेच्छा से उस के साथ शादी कर के जीवनयापन करना चाहती है तो वह सारी व्यवस्था कर लेगा.

घर के कारावास में माया का दम घुट रहा था. उस ने श्याम का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. 25 वर्ष पूर्व वह अपना घर छोड़ कर श्याम के साथ बंगलोर आ गई. दोनों ने कचहरी में शादी कर ली थी.

अगले दो वर्षों में श्याम चार्टर्ड अकाउंटेंट बन गया और उस ने स्वतंत्र व्यवसाय शुरू कर दिया.

माया ने भी बी.ए. कर लिया और घर जमा कर बैठ गई. इधर श्याम का व्यवसाय चमक रहा था, उधर माया भारती और गौतम को पालपोस कर बड़ा कर रही थी.

माया जब एक बार घर छोड़ कर आई तो फिर उस ने मुड़ कर उस घर की तरफ नहीं देखा और न ही घर वालों ने उस की कोई सुध ली. अकसर उस के मन में मातापिता, दोनों छोटी बहनों को देखने की हूक सी उठती, पर वह अवश थी.

माया को अपने निर्णय पर कोई खेद नहीं था. श्याम के साथ उस का विवाह हर दृष्टि से सफल रहा था.

श्याम आर्थिक सफलताओं की सीढ़ियां चढ़ता जा रहा था. उस ने बनाबनाया बंगला खरीद लिया था. कार पहले से ही थी. घर में समस्त आधुनिक सुखसुविधाएं उपलब्ध थीं.

श्याम में एक और गुण भी था. वह सहृदय, सरल, संतोषी तथा समझदार पति था और माया के गृह संचालन में कभी भी हस्तक्षेप नहीं करता था.

इसी कारण माया ने यह सिद्ध कर दिया था कि वह एक परिपक्व तथा सफल मां और गृहिणी है.

माया के मन का अभाव कभी खेद भावना बन उजागर हो जाता. उस के मांबाप ने उसे वह नहीं बनने दिया था जो वह बनना चाहती थी. वह डाक्टर या इंजीनियर बन घर के बाहर काम करना चाहती थी, किंतु मांबाप के दुराग्रह ने उसे मात्र गृहिणी बना कर रख दिया था.

माया चाहती थी कि उस के बच्चे अपनी इच्छा और प्रतिभा के अनुरूप जीवन में जो कुछ चाहें, वही बनें. इसी कारण कभीकभार वह उन से कहती, "बच्चों, तुम प्रतिभाशाली हो. तुम्हें जो सुविधा या अवसर चाहिए, वह मैं दूंगी. पर तुम दोनों जीवन में कुछ बन कर दिखाना."

गौतम ने मां की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति की. वह डाक्टर बन गया. माया ने तो हमेशा यही सोचा कि जो गलती उस के मांबाप ने की, वह उसे कभी नहीं दोहराएगी. इसी कारण उस ने अपने दोनों बच्चों को एक स्वतंत्र परिवेश में पाला. उन की समस्याएं सुनीं और पीढ़ियों के बीच का अंतर कभी नहीं उभरने दिया.

वह तो यही महसूस करती रही कि वह एक आदर्श मां है. उस के बच्चे बुद्धिमान तथा अनुशासनबद्ध थे. वह सदैव उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित करती रहती थी और उन की हर समस्या को सहानुभूतिपूर्वक सुलझाने के प्रयास में जुट जाती.

फिर भारती ने यह कदम क्यों उठाया? वह सुरेश के साथ क्यों भागी? यदि वह उस से विवाह करना चाहती थी तो उसे यह सब बताने में क्या परेशानी थी? वह सुरेश के साथ भाग कर बंबई गई और वहां शादी कर ली.

माया की आंखों में नमी उभर आई. यह उस की एक बड़ी पराजय थी.

"माया." श्याम की आवाज ने उसे चौंकाया. उस ने डूबी निगाहों से उन्हें देखा और बोली, "श्याम, मेरी समझ में नहीं आता कि मुझ से कहां चूक हुई? वह सुरेश के साथ क्यों भागी?"

"माया, अवश्यंभावी से समझौता करना ही विवेक है." श्याम ने शांत स्वर में कहा.

"वह तो ठीक है, पर मैं यह जानना चाहती हूं कि हमारी और उस की परिस्थितियों में जमीनआसमान का अंतर

था. हमारे अभिभावकों ने हमारी भावनाओं को कभी नहीं समझा और हमें वह सब करने पर मजबूर कर दिया जो हम करना नहीं चाहते थे. पर मैं ने तो हमेशा समझबूझ से काम लिया. उन की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति में हमेशा उन्हें सहयोग दिया."

"ऐसा तुम सोचती हो."

माया श्याम की बात सुन कर स्तंभित रह गई.

"माया, तुम अपने बच्चों के माध्यम से अपनी अतृप्त, अधूरी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा कर रही थी. संयोग से बेटे ने डाक्टर बन कर तुम्हें कृतज्ञ कर दिया, पर भारती...?"

"मैं ने उस पर अपना निर्णय कभी नहीं लादा..."

"ध्यान से सोचो."

माया सोचने लगी. उसे याद आए वे दिन जब भारती ने इंटर पास किया था और वह गृह विज्ञान में बी.एससी. करना चाहती थी. पर उस ने भारती को बी.काम. करने के लिए मजबूर कर दिया था. वह चाहती थी कि भारती चार्टर्ड अकाउंटेंट बन कर पिता की सहायता करे.

भारती ने हलका सा विरोध किया था. किन्तु बाद में उस ने बी.काम. में प्रवेश ले लिया था और अपने इस पत्र में उस ने लिखा है कि वह चार्टर्ड अकाउंटेंट नहीं बनेगी वह सुरेश के साथ विवाह कर के शांतिपूर्ण गृहस्थ जीवन बिताएगी.

"माया, अपनी भारती कोमल स्वभाव की गृहस्थी बसाने वाली लड़की थी. वह नौकरी या व्यवसाय करने वाली लड़कियों में से नहीं थी. एक बार उस ने मुझ से कहा भी था कि उस का मन इस पढ़ाई में नहीं लग रहा है और वह शादी करना पसंद करेगी." श्याम ने कहा.

"पर उस मूर्ख लड़की ने मुझ से यह क्यों नहीं कहा?" माया बिगड़ कर बोली.

"कैसे कहती? तुम ने उच्चशिक्षा के विषय में उस पर अपना निर्णय लादा था. जानती हो, वह गृह विज्ञान में बी.एससी. क्यों करना चाहती थी? उसे कैरियर से ज्यादा घर में रुचि थी और वह एक आदर्श, सफल गृहिणी बनना चाहती थी.

माया के मन में पश्चात्ताप हुआ और वह कुछ सोचने लगी.

"माया, तुम्हारे मातापिता ने तुम्हारे साथ जो ज्यादती की, वह जानबूझ कर की थी. तुम ने भी अपनी बेटी के साथ वही सब किया, किन्तु अनजाने में. तुम्हारे मांबाप ने तुम्हारे आगे पढ़ने की महत्त्वाकांक्षा का विरोध किया. तुम ने अपनी बेटी की आगे न पढ़ने की आकांक्षा की हत्या की..."

"मेरी समझ में नहीं आता, भारती जैसी कुशल, दक्ष, प्रतिभाशाली लड़की विवाह के लिए अपना स्वर्णिम भविष्य क्यों और कैसे दांव पर लगा सकती है?"

"माया, हर व्यक्ति अपनी तरह जीना पसंद करता है. उस की स्वयं की इच्छाएं, आकांक्षाएं, पसंद और नापसंद होती है. तुम



सजा

छुपा के इश्क दुनिया से
तुम एक गुनाह कर रहे हो,
इस तरहा तो प्यार नहीं हमें,
तुम एक सजा दे रहे हो.
—वीना 'वृत्तिका'

ने इस तथ्य को नकारा और अपनी एकमात्र बेटी के जीवन को अपनी तरह संचालित करने का प्रयास किया. नतीजा तुम्हारे सामने है." श्याम ने गंभीर स्वर में कहा.

"बेवकूफ लड़की. उस ने एक बार भी इशारा तो किया होता." माया ने कहा. खेदभावना उस के मन को मथ रही थी.

"उस ने सिर्फ इशारा ही नहीं किया, बल्कि बड़े स्पष्ट शब्दों में सांकेतिक रूप से कहा भी था." श्याम बोले.

"कब?"

"पिछले दशहरे की छुट्टियों में. उस ने कहा था कि उसे पढ़ाई के बाद अपना घर जमाना है. यों लड़की के लिए उपयुक्त वर और लड़के के लिए अच्छी लड़की खोज पाना बहुत मुश्किल काम है. आजकल के पढ़ेलिखे मातापिता भी अपने बेटेबेटी की पसंद को परखने की कोशिश नहीं करते."

"हां, मुझे याद है. पर मैं ने सोचा, वह यों ही साधारण बातें कर रही है."

"उस ने सुरेश को घर लाने के लिए इशारा किया था और तुम ने उसे डांट दिया था, 'भारती, रोमांस के लिए पूरी उम्र पड़ी है. फिलहाल तुम अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाओ.'

"तो मैं ने इस में कौन सा अपराध कर दिया था?"

"माया तुम ने अपनी बेटी के प्रेम के फूल को कली की अवस्था में ही मसल दिया. तुम उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाईं. अपनी अतृप्त कामना को तुम ने अपनी बेटी पर थोप दिया. पर वह उच्च शिक्षा नहीं, घर की चारदीवारी पसंद करती थी."

माया विचारमग्न हो गई.

"तुम ने उसे वह सब करने के लिए मजबूर किया है जो वह करना नहीं चाहती थी."

"पर भारती को खुल कर कहना चाहिए था कि वह किसी लड़के से प्यार करती है और उस से विवाह करना चाहती है." माया बोली.

"माया, तुम ने अपने अतिरिक्त अनुशासन और आत्मीयता द्वारा उस की स्वतंत्रता और निर्भीकता की हत्या कर दी थी."

"वह कैसे?"

"याद है, दीवाली पर उस ने तुम से 200 रुपए मांगे थे. उस ने कहा था कि वह इन रुपयों से एक उपहार खरीदेगी और उसे देगी, जिसे वह प्राणों से अधिक प्यार करती है."

"मैं ने समझा, वह कोरी भावुकता में बह रही है. इसी लिए मैं ने उसे रुपए नहीं दिए."

"माया, मैं तुम्हें यही एहसास करना चाहता हूं कि तुम अपनी बेटी को बिलकुल नहीं समझ पाईं. वह संकेतों में तुम्हें सब कुछ समझाती रही, पर तुम अपनी अतृप्त, दमित कामनाओं की पूर्ति के लिए सब कुछ अनदेखा करती रहीं. तुम में और तुम्हारे अभिभावकों में कहां अंतर रहा? जो उन्होंने जान कर किया, वही तुम अनजाने में करती रहीं."

माया को महसूस हुआ कि श्याम ठीक कह रहे हैं. उस का दर्प चूरचूर हो कर बिखर गया था. वह सोचती थी कि अपने बच्चों से उस के संबंध हर प्रकार से पूर्ण और मधुर हैं.

पर भारती ने यह सिद्ध कर दिया था कि वह गलती पर थी.

"अब?" अनायास उस के मुख से निकल गया.

"एक ही विकल्प है. शांतिपूर्वक इस वैवाहिक संबंध को स्वीकार करो या सदैव के लिए बेटी और दामाद को खो दो और समाज में उपहास की पात्र बन जाओ."

"नहीं, मैं अपनी बेटी, दामाद को खोना नहीं चाहती." माया तड़प कर बोली.

"ठीक है... तो करो फोन... बंबई का फोन नंबर लिखा है, इस पत्र में." श्याम बोले.

माया ने पत्र पकड़ कर डूबी निगाहों से

बंबई का पता और उन का फोन नंबर देखा. फिर वह डगमगाती चाल से फोन की तरफ बढ़ गई.

अगले दिन शाम को चार बजे उस के समक्ष एक सुखद आश्चर्य उपस्थित हो गया. श्याम और गौतम उस समय घर पर नहीं थे.

दरवाजे की घंटी बजी. माया ने उठ कर द्वार खोला. सामने भारती खड़ी थी. उस की बगल में एक सुदर्शन, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला नवयुवक खड़ा था.

माया एकटक भारती और सुरेश को देखती रह गई. उस की आंखों में खुशी के आंसू आ गए.

उस ने देखा, भारती के गले में मंगलसूत्र था और तरल सी आंखों में क्षमायाचना का भाव था.

''मां, क्षमा करना, अपनी बेटी की धृष्टता के लिए.'' कहती हुई भारती माया के वक्ष से चिपक गई.

''आओ बेटी.'' माया भर्राए स्वर में बोली. उसे अपनी भूल का एहसास हो रहा था. मां बेटी के संबंधों में जो समझ और सुलझापन होता है, वह नहीं था उस के और भारती के बीच.

''मां, यह सुरेश हैं.''

''बेटी, काश तुम ने हमें पहले बताया होता. खैर, अब भी कौन सी देर हुई है. हम तुम्हारी शादी पूरी औपचारिकता और खूब ठाटबाट से करेंगे.'' माया बोली.

''मां, शादी तो हो गई. हां, आप चाहें तो एक पार्टी दे दें. वही काफी रहेगा.'' सुरेश ने कहा.

माया का मन भीग गया. अब उस के एक नहीं, दो बेटे थे. वह लपक कर फोन के पास पहुंची. उस ने श्याम और गौतम को भारती के आगमन का समाचार दिया. शीघ्र ही वे दोनों भी घर पहुंच गए.

घर में उत्सव का वातावरण हो गया था. ●

शून्यकाल का शून्यालाप



इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न दिए जाते हैं जो संसद में पूछे नहीं जाते पर पूछे जाने चाहिए. यहां प्रस्तुत हैं इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न और उन के संभावित उत्तर

शिमला समझौता क्या है? पंजाब में दिनोंदिन स्थिति बिगड़ती जा रही है, क्यों? तथा अन्य प्रश्न...

सदस्य: आप की सरकार और पाकिस्तान की सरकार में अंतर या समानता क्या है?

मंत्री: हमारी सरकार भी बैसाखियों के सहारे खड़ी है और उन की भी. यहां भी विपक्ष सशक्त है और वहां भी. दोनों ही जगह पक्ष और विपक्ष में सहयोग के आदर्श की घोषणा होती है, मगर सत्ता से वंचित सत्ताधारी के मार्ग में कांटे बोना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है. वहां यदाकदा कराची और सिंध में आग भड़कती रहती है और उस का दोष भारत पर मढ़ दिया जाता है. यहां पंजाब और कशमीर की आग के लिए दोषी पाकिस्तान को माना जाता है.

सदस्य: यह शिमला समझौता क्या है?

मंत्री: यह जानने की कोशिश बेकार है. हमारी पिछली सरकारों ने समझौतों की घोषणा के मुकाबले में उन के क्रियान्वयन में एक प्रतिशत भी दिलचस्पी नहीं ली. यहां समझौते का मतलब है कि समस्या को जीवित रहने दो मगर उस की बात मत करो, उसे दबे रहने दो. इसलिए शिमला समझौता बस एक समझौता है. समस्या की बात न कर के केवल इस के नाम की माला जपी जाए.

सदस्य: चीन और अमरीका का रवैया कशमीर समस्या के प्रति कैसा है?

मंत्री: पिछली सरकार का हर मंत्री सामान उठाए विदेश भागता नजर आता था. प्रधान मंत्री भी कभीकभी दिल्ली के दौरे पर आते थे. तथापि उन के मुकाबले हम ने घर बैठे कशमीर के मामले में पाकिस्तान को अकेला कर दिया है, ऐसा हमारा मानना है. वैसे चीन और अमरीका शिमला समझौता के बारे में ऐसे बयान दे देते हैं कि हम समझते हैं कि वे हमारा समर्थन कर रहे हैं और पाकिस्तान समझता है कि उस का.

सदस्य: आप अपनी पार्टी में एकता की बड़ी डींगें मार रहे थे. लेकिन टिकटों के बंटवारे के समय हुई जूतमपैजार तथा आप के सहयोगी दलों से समझौता न होने को आप क्या कहेंगे?

मंत्री: पहले अपनी कुरसी की फिक्र करो. देश, प्रदेश और पार्टी की उस के बाद में सोचो, यह है भारत की पारंपरिक राजनीति का मूलमंत्र. आप हमारी पार्टी की एकता और महानता इसी में देखें कि कांग्रेस

छोड़ कर कितने लोग हमारी तरफ आ रहे हैं. दलबदल की इस रफ्तार ने सिद्ध कर दिया है कि जब तक दलबदलू जिंदा हैं, जनता दल के अस्तित्व को कोई खतरा नहीं. उन के बिखराव में ही हमारी एकता है.

सदस्य: पंजाब में दिनोदिन स्थिति बिगड़ती जा रही है. आप चुप क्यों हैं?

मंत्री: अब चुप तो वे हैं, जो कहते थे कि अगर प्रधान मंत्री स्वर्णमंदिर में जा आए तो समस्या हल हो जाएगी. वैसे स्थिति में या सरकारी नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है. पहले जो बात हम कहते थे, वही अब राजीव गांधी कहते हैं. वैसे यह विचार बुरा नहीं है कि लोगों को भ्रष्टाचार की तरह उग्रवाद को भी सहने की आदत बना लेनी चाहिए.

सदस्य: आंध्र प्रदेश में नक्सली जनप्रतिनिधियों और सरकारी कर्मचारियों का अपहरण कर अपने गिरफ्तार साथियों को छुड़वा रहे हैं. इस का कोई हल?

मंत्री: एक तो यह कि वह प्रदेश दिल्ली से काफी दूर है, फिर वहां हमारे दलों की सरकार भी नहीं है. वहां की सरकार संकट में है तो हमें कोई ज्यादा फिक्र नहीं है. वैसे चेन्ना रेड्डी ने इस समस्या का जो हल निकालने की सोची है, वह बात हमें पसंद आ रही है कि गिरफ्तार सभी नक्सलियों को छोड़ दिया जाए. फिर भला उन के साथी किसे छुड़वाने के लिए अपहरण करेंगे? न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी.

सदस्य: कशमीर में भी रूबिया की रिहाई के बदले उग्रवादियों को छोड़ा गया. पिछली सरकार के समय पंजाब में भी अपहरणकर्ताओं को छुड़वाने के लिए गिरफ्तार लोगों को छोड़ा गया था. क्या यह उचित है?

मंत्री: हम लोगों को उग्रवादी कह कर पकड़ तो लेते हैं, पर अव्वल तो उन पर कभी मुकदमा नहीं चला पाते, मुकदमा चल जाए तो उन्हें बरी करना पड़ता है. कई बार वे भाग भी जाते हैं. ऐसे में अगर हम उन्हें किसी के बदले छोड़ देते हैं तो क्या यह 'पुण्य' कार्य नहीं है?

सदस्य: क्या रूस बिखरने से बच जाएगा?

मंत्री: अभी तो वहां कम्यूनिस्ट पार्टी और नेताओं को ज्यादा खतरा है. इसलिए गोरबाचौफ विदेश यात्रा पर नहीं जा पा रहे हैं. रूस तो शायद सेना की वजह से जुड़ा रहेगा, पर सरकार जरूर बदलती नजर आएगी.

सदस्य: कहते हैं, रोमानिया में चाउशेस्कू को हटाते समय हुए संघर्ष में हजारों लोगों की जान गई है?

मंत्री: साम्यवाद की विडंबना यही है. जब यह किसी देश में आता है तो हजारों लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है. फिर भूख और बंदिशों को ढोना पड़ता है. जब यह किसी देश से जाता है तो हजारों की जान साथ ले कर जाता है.

सदस्य: कम्यूनिस्ट देशों में लोगों ने लोकतंत्र को लाने के लिए संघर्ष किया है. भारत जैसे देश में साम्यवादियों का संघर्ष किस लिए?

मंत्री: वह भी लोकतंत्र के लिए ही है शायद. भारतीयों को आजाद होते ही लोकतंत्र मिल गया. इसलिए यहां इस की कद्र कम है. पहले ये लोग साम्यवादी शासन का स्वाद चख लें, फिर पता चलेगा कि लोकतंत्र की अहमियत क्या है.

सदस्य: हरियाणा में क्या झगड़ा है?

मंत्री: बंगाल में 'गोरखालैंड', असम में 'बोड़ोलैंड' और पंजाब में 'सिखहोमलैंड' की मांगें काफी समय से हैं. पर सरकार देने से इनकार करती है. इधर हरियाणा में बिना मांगे 'डिजनीलैंड' मिल रहा है, फिर भी लोग नाराज हैं और लेने से न करते हैं.

सदस्य: प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने यह आदेश क्यों दिया है कि सरकारी कार्यालयों में उन का चित्र न लगाया जाए?

मंत्री: शायद इसलिए कि वह अपनी आंखों के सामने भ्रष्टाचार और कामचोरी को हंसतेखेलते नहीं देखना चाहते.

—गोविंद शर्मा ●

गाड़ी खिंच रही है

व्यंग्य • अश्विनीकुमार भटनागर

"अरे राधेलालजी, यहां बाहर खड़े हुए क्या कर रहे हैं?"

"दिख नहीं रहा है कि अपनी बुढ़िया का इंतजार कर रहा हूं. दो मिनट कहा था, आधा घंटा हो गया." राधेलाल ने खीजते हुए कहा.

"जो कुछ भी कहो, भाईसाहब, आप सुखी बहुत हैं. इतना सुखी इनसान कहीं मिलता है? अब भाभी को लो. उम्र चाहे कुछ भी हो, पर जब निकलती हैं तो ढंग से. बंगलोरी साड़ी होगी, माथे पर बड़ी बिंदी होगी, कानों में टाप्स होंगे, गले में बड़े लाकेट वाला मंगलसूत्र होगा, गालों पर होगा पाउडर और होंठें पर हलकी लिपस्टिक. सच कहूं, आप को हमेशा जवान बना देती हैं." करमचंद ने हंसते हुए कहा.

राधेलाल ने थोड़ा झेंपते हुए कहा, "अरे बुढ़िया को अब सजनेसंवरने का शौक चर्रा गया है तो क्या करूं. मैं भी कहता हूं, उम्र ही कितनी शेष है. जो शौक हों सब पूरे कर लो."

"सोलह आना सच है, भाईसाहब. जो शौक जवानी में नहीं किए, अब पूरे कर लेने



चाहिए."

राधेलाल वर्षों पहले अवकाश प्राप्त कर चुके हैं. इस समय आयु 70 वर्ष से ऊपर है, पर स्वास्थ्य लगभग ठीक है. पतलेदुबले अवश्य हैं, चश्मा भी लगाते हैं, पर चेहरे से लगता है कि कभी बड़े अफसर रहे होंगे. हमेशा धुली और साफसुथरी पेंटकमीज



"दो रुपए पाव टिंडे? क्या लूट मचा रखी है? हमारे यहां तो घर पर आ कर डेढ़ रुपए पाव दे जाता है." राधा ने चिढ़े से भाव से कहा.

पहन कर घर से बाहर निकलते हैं. सर्दियों में कोट व टाई ही पहन कर बाहर आते हैं. इसी तरह उन की पत्नी राधा भी बनठन कर साथ चलती है. लोग चाहे पीछे से हंसते हों या टीकाटिप्पणी भी करते हों, पर सामने सदा सम्मान से पेश आते हैं. अच्छी तरह रहते हैं और अच्छी तरह खातेपीते हैं.

"भाईसाहब, आप का बड़ा लड़का क्या कर रहा है? वही जो पिछले महीने आया था, आप के पास? वह बड़ा ही है न?"

"हां, मेरा बड़ा बेटा है. बीमा निगम में बड़ा अधिकारी है. बंगला है, मोटर है, बालबच्चे हैं. सब मजे से है." राधेलाल के स्वर में गर्व था.

"अच्छा," करमचंद ने आश्चर्य से

राधेलालजी और उन की राधा दोनों ही एकदूसरे के बिना रह नहीं पाते थे. राधा का बनसंवर कर बाहर निकलना भले ही औरों के लिए हंसने का मसाला होता था पर राधेलालजी अपनी 65 साल की नवोढ़ा पर वारे जाते थे.

कहा, "उम्र तो उस की अधिक लगती नहीं. लगता है, काफी तरक्की कर ली है. इधर कई सालों से आप को यहां ही देख रहे हैं, क्या आप उन के पास नहीं रहते?"

"भई, अब क्या रहना. जितना रहना था, रह लिए. उन की अपनी जिंदगी है, अपना रहने का तरीका है. बहू का भी घर चलाने का व बच्चे पालने का ढंग अलग है. हम बिलकुल अलग से लगते हैं. साथ रहते हैं तो न वे लोग आजादी महसूस करते हैं और न हम. सो भैया यहां ही भले."

"और भी तो बच्चे होंगे?"

"हां, दूसरी लड़की है, दामाद वायुसेना का बड़ा अधिकारी है. पिछले गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति पदक भी उसे मिला था. लड़की भी नौकरी करती है. दो बच्चे हैं, सब मजे में हैं."

"तो लड़की के पास तो कभीकभी जाते होंगे?"

"वहां भी जाना छोड़ दिया," राधेलाल ने गहरी सांस ले कर कहा, "अब वहां भी हम लोगों का कोई हिसाब जमता नहीं. कुछ ही दिनों में वे लोग भी ऊब जाते हैं और हम भी. उन्हें भी हमारी आवश्यकता नहीं."

"बस दो ही बच्चे हैं?"

"नहीं. एक और लड़का है. वह राष्ट्रीय बैंक में अधिकारी है. बहू भी उसी बैंक में अधिकारी है. बच्चों को हमारी जरूरत नहीं."

"यह क्या कहते हैं, राधेलालजी? बच्चों को तो मांबाप की हमेशा आवश्यकता रहती है. बड़ों का साया ही तो बच्चों के लिए सब से बड़ा आशीर्वाद है."

"हां भैया, किताबों में यह सब पढ़ते आए हैं. हिंदी फिल्मों में भी ऐसा ही कुछ देखने को मिलता है. वास्तविकता यह है कि अब हम सही अर्थों में मुक्त हो गए हैं."

"क्या मतलब भाईसाहब? आप तो काफी गूढ़ बात कर रहे हैं."

"अरे गूढ़ क्या, यह तो जिंदगी का अनुभव है. देखो, बच्चे पैदा होते हैं, अप
स्वार्थ के कारण. जब पैदा हो जाते हैं तो उ
की परवरिश करना, पढ़नालिखाना अप
कर्तव्य हो जाता है. अब जब नौकरी पा क
और शादी कर के वे आत्मनिर्भर हो जाते
तो उन्हें मांबाप की आवश्यकता नहीं रहत
बल्कि उन की जिंदगी में वे एक रुकावट
पैदा करते हैं. अब जब बच्चों से हम मुक्त
गए तो फिर बच्चों की तरह आजाद हो ग
समझो."

करमचंद ने हीही कर के हंसते ह
कहा, "यानी बच्चे आप से मुक्त हो गए औ
आप बच्चों से मुक्त हो गए और अब अ
फिर से स्वतंत्र हो गए हैं."

"क्यों, ठीक नहीं है क्या? राधेलाल
मुसकरा कर पूछा.

"भाईसाहब, बात तो आप की स
लगती है. पर अभी हम उस स्तर तक पहु
नहीं हैं. लीजिए, आप की इंतजार
घड़ियां समाप्त हो गईं. भाभीजी तशरी
ला रही हैं. कहता था न मैं कि इन की ठस
देख कर तो एक बार दुलहन भी फीकी
जाए."

राधेलाल झेंप कर मुसकरा दिए.

"नमस्ते भाभीजी, देखिए कित
प्रतीक्षा करा दी आप ने भाईसाहब को
करमचंद ने कहा.

राधा ने रुखाई से कहा, "मैं
कब कहा था इस से प्रतीक्षा क
को? अरे चले जाते तो क्या होता? बाज
का रास्ता तो मुझे भी मालूम है."

करमचंद फिर से हंस पड़ा, "भाभी
आप का जोड़ नहीं. अच्छा चलता हूं.
को भी देर हो रही होगी. नमस्ते."

राधेलाल को एक शिकायत है.
जब भी बाजार जाने को तैयार होते हैं, रा
चिल्ला देती कि उसे भी जाना है. अरे
जाना ही है तो पहले से तैयार हो जाओ.
क्या कि पहले तो तैयार होता देखो और फि
जाने से पहले टोक दो. साथसाथ भी
तैयार हुआ जा सकता है?



'तो अब यह इज्जत रह गई है मेरी?" राधा ने चिल्ला कर कहा. "बहुएं सब कुछ हो गईं और मैं कुछ नहीं?"

राधा की शिकायत है कि वह उस से पहले से नहीं कहते. अरे अगर पहले से कह दें तो क्या वह तैयार नहीं हो जाती?

राधेलाल का कहना है कि जब वह रोज घूमने जाते ही हैं और राधा भी साथ जाती ही है तो रोजरोज पूछने की क्या आवश्यकता है?

राधा का उत्तर है कि अगर रोज पूछ ही लिया तो क्या उन की जबान घिस जाएगी?

इस तरह से यह कभी न समाप्त होने वाली बहस जारी रहती है, पर एक सचाई है जो दोनों जानते हैं परंतु मुंह पर नहीं लाते. अकेले जाने का राधेलाल का मन नहीं करता और बिना उन के राधा का जी नहीं लगता.

"अरे, टिंडे क्या भाव दिए हैं?"

"दो रुपए पाव."

"दो रुपए? क्या लूट मचा रखी है? हमारे यहां तो घर पर आ कर डेढ़ रुपए पाव दे जाता है."

"तो उसी से ले लेना." ठेले वाले ने व्यंग्य से कहा.

"वह तो लेंगे ही. तेरी सलाह की जरूरत नहीं है."

"क्यों बेकार झगड़ा मोल ले रही हो... आगे चलो." राधेलाल ने बांह पकड़ते हुए कहा.

"बांह छोड़ो," राधा ने झिड़क कर कहा, "पके हुए तो टिंडे हैं, उस पर दो रुपए पाव."

"अब पके टिंडे हैं और लेने नहीं हैं तो क्यों मुंह लग रही हो?"

"कितनी बार कह दिया, मेरे बीच में मत बोला करो." राधा ने क्रोध से कहा.

ठेले वाला हंस रहा था, "क्या भाव लोगी, कुछ बोलो भी मांजी."

राधेलाल ने कहा, "भई नहीं चाहिए. वैसे ही भाव पूछ लिया था. गलती हो गई."

"अजी गलती आप से क्यों, गलती तो मेरे से हुई है. टिंडे ले कर बैठा हूं. अगर सोनाचांदी होता तो यों चुटकियों में लोग खरीद ले जाते."

राधा कस कर उत्तर देने ही वाली थी कि राधेलाल तेजी से कदम उठा कर आगे जा कर खड़े हो गए. उन्हें मालूम था कि अब राधा बिना तूतूमैंमैं किए आगे नहीं बढ़ेगी. राधा ने देखा कि पति दूर चले गए तो चुपचाप पास आ गई और क्रोध से बोली, "यह क्या बात हुई? अकेली औरत को देख कर लोग तेज बोलने लगते हैं. मेरे पास तो खड़े रहना था?"

"मुझे झगड़ा अच्छा नहीं लगता और वह भी सरे बाजार. अरे उस ने 50 पैसे ज्यादा भी लिए तो क्या हम कंगाल हो जाएंगे?"

"कहा न, मुझे घर चलाना मत सिखाओ."

राधेलाल ने बड़बड़ा कर कहा, "जाहिल, गंवार."

"क्या कहा?"

"कुछ नहीं, तुम्हारी प्रशंसा कर रहा था."

"कुछ तो कहा होगा."

"अब चुप भी रहो, दिमाग मत खराब करो."

"हाय, बुढ़ापा किसी को न आए. पता नहीं, इस काया को और कितने कष्ट सहने हैं."

राधेलाल ने कहा, "अब मायाजाल में पड़ी हो तो काया तो कष्ट उठाएगी ही."

राधा ने घूर कर देखा और चुप हो गई.

"परवल क्या भाव हैं?"

"तीन रुपए पाव."

"अरे, कल तो दो रुपए थे... एक ही दिन में तीन रुपए कैसे हो गए?"

"कल की बात कल गई. आज तो यही भाव है."

"दो रुपए देने हैं?"

"कितने किलो लोगी?"

"किलो क्या, यही दो सौ ग्राम."

ठेले वाले ने व्यंग्य से हंस कर कहा, "दो सौ ग्राम... तो फिर चार रुपए के हिसाब से दूंगा."

"क्या?" राधा ने आंखें निकाल कर पूछा.

"कुछ नहीं मांजी, मुझे परवल नहीं बेचने हैं. आप आगे जाइए."

राधेलाल फिर राधा को खींच कर आगे ले गए. "सुनो, सब्जी तो मैं सुबह ही लाया था. बहुत रखी होगी. मेहरबानी कर के जब लेना नही है तो भावतोल मत करो."

"अरे, बाजार आए हैं तो क्या सब्जी का भाव नहीं पता करेंगे? घर पर आने वाले मनमाना मांगते हैं."

कुछ दूर आगे चले थे कि राधा ने नीचे जमीन पर बैठी एक लड़की से पूछा, "यह माला कितने की है?"

"दो रुपए की?"

"एक रुपए में देगी?"

"नहीं, मोती देख लो पहले."

"क्यों क्या असली मोती हैं?"

"असली होते तो क्या दो रुपए में बेचती?"

"अगर बेचना नहीं है तो यहां क्यों आई है?"

"बेचने आई हूं. कोई मुफ्त में देने थोड़ी आई हूं."

"तो फिर भाव कम कर."

"कितने में लोगी?"

"कहा न, एक रुपया."

"नहीं."

चल, डेढ़ में दे दे."

"ले लो."

"दूसरी दिखा. इस के मोती बराबर नहीं हैं."

लड़की ने दूसरी माला दिखाई.

"छिः, इस में तो धागा लाल है और निकाल."

लड़की ने तीसरी दिखाई.

"इस से तो पहली ही अच्छी थी."

"तो पहले वाली ले लो."

"उस के मोती बराबर नहीं हैं. कोई छोटा है तो कोई बड़ा."

"अब दाम भी तो देखो."

"अच्छा, कल बढ़िया सी ले कर आना. दो लूंगी." राधा आगे चल दी. राधेलाल जलभुन रहे थे. उन्हें मालूम है कि राधा को न तो माला चाहिए और न वह खरीदेगी, परंतु यह उस का रोज का काम है. आखिर समय कैसे कटे? न बच्चे, न बच्चों के बच्चे. पति यों ही मुंह लिए बैठा रहता है. अकेले बैठे जैसे सदा एकदूसरे को काटने दौड़ते हैं. राधा के मोलभाव से राधेलाल को इतनी खुजली होती है कि हमेशा 10 गज दूर खड़े हो जाते हैं.

"देखो, आगे अंगूठी बेच रहा है. अब अंगूठी का मोलभाव मत करना." राधेलाल ने ताना दिया.

"क्यों नहीं लूं? पीतल की है, कोई सोने की नहीं."

"अरे, 10-12 तो ले चुकी हो."

"और ले लूंगी तो क्या दिवाला निकल जाएगा."

"ले लो बाबा, एक नहीं सारी ले लो." राधेलाल ने झल्ला कर कहा.

राधा ने डब्बे में रखी सारी अंगूठियां पहन कर देखीं. किसी का नग पसंद नहीं था तो कोई छोटी थी, कोई बड़ी थी तो कोई चुभती थी और किसी का डिजाइन अच्छा नहीं था.

"कल और ले कर आना. यहीं बैठते हो न? अच्छी लगी तो तीनचार ले लूंगी."

राधेलाल ने सोचा कि अंगूठी वाला मन ही मन कह रहा होगा, कल भूल कर भी यहां नहीं बैठेगा. उन्हें हंसी आ गई.

राधा ने क्रोध से पूछा, "अब क्या हुआ?"

"कुछ नहीं. यही सोच रहा था कि वह अंगूठी वाला अब इधर आने का नाम ही नहीं लेगा. तुम्हारे जैसे दोतीन ग्राहक मिल गए तो पागलखाने पहुंच जाएगा."

"मुझे यह बकवास अच्छी नहीं लगती. मेरा खरीदना अच्छा नहीं लगता तो दूर चले जाया करो."

"अरे, जाऊं तो कितनी दूर जाऊं? तुम्हें तो दूर जाने से भी शिकायत होती है."

दोनों आगे चल पड़े.

आगे आइसक्रीम वाला खड़ा था. बहुत दिन हो गए थे आइसक्रीम खाए हुए. राधेलाल का मन कर आया. उन्होंने राधा से पूछा, "आइसक्रीम खाओगी?"

"नहीं. गला खराब हो जाएगा."

"अरे, खा भी लो."

"महंगी बहुत होगी."

"अब सस्तेमहंगे से क्या लेनादेना?"



जालिम

मसल दो तुम मुझे
ऐसी नहीं हूं मैं कली,
देखे हैं तुम से बहुत
जालिम इस जमाने में.

—सुरेशकुमार गोयल

"तुम्हारी तबियत कर रही है तो ले लो. मैं उसी में से ख़ा लूंगी."

राधेलाल को क्रोध आ गया. पैर पटक कर आगे चल दिए. उन्हें राधा की यही आदत गंदी लगती है. हमेशा दूसरे के हिस्से में से खाने को तैयार रहती है. कितनी बार कहा कि अरे ले लो. नहीं खाना हो तो छोड़ देना. पर दूसरे को टोका क्यों लगाती हो? बात राधेलाल के मन में ही रह गई.

"ऐ अमरूद वाले, क्या भाव हैं, अमरूद?" राधा ने पूछा. इलाहाबादी थे. उसे अमरूद बहुत पसंद थे.

"चार रुपए किलो."

"बारह आने पाव देगा?" राधा अभी तक नए पैसों का हिसाब नहीं करती थी.

"नहीं मांजी."

"अरे, कोई सोना है क्या?"

"सोना तो नहीं, पर सोना जैसा अमरूद तो है, जरा हाथ में ले कर देखो."

"अच्छा, सौ ग्राम का एक तोल दे." राधा को मालूम था कि राधेलाल को अमरूद अच्छे नहीं लगते.

"छुट्टे पैसे होंगे?"

"अरे, तोल तो सही."

अमरूद वाले ने एक छोटा सा अमरूद तोला, "लीजिए, यह हुआ 45 पैसे का."

"मैं तो 40 पैसे दूंगी."

"अरे मांजी, पांच पैसे ही तो कमाने हैं."

"देना है तो दे."

"लेना हो तो लो."

राधेलाल ने पैसे निकालते हुए कहा, "ला भई दे दे."

राधा ने हठ पकड़ कर कहा, "नहीं, मुझे नहीं चाहिए."

"अरे, ले भी लो, क्या होता है पांच पैसे में." राधेलाल ने झिड़क कर कहा.

"कहा न, नहीं चाहिए. रख ले अपना अमरूद."

"तो ले जाओ. बिना पैसे के ले जाओ." अमरूद वाला जोर से बोला.

"नहीं चाहिए...कहा न."

"लेनादेना कुछ नहीं, समय बरबाद करने चले आते हैं. बोहनी खराब कर दी."

"क्या कहा?" राधा गुर्राई.

अमरूद वाला चिल्लाया, "अमरूद चार रुपए किलो. मिठाई का गोला चार रुपए. न देखा न सुना, चार रुपए लूट के ले जाओ, चार रुपए. इलाहाबाद का पेड़ा चार रुपए."

राधा ने घूर कर उसे देखा, मानो उसे ही खा जाएगी.

फिर राधा चल पड़ी राधेलाल के पीछे. राधेलाल का खून खौल रहा था. क्रोध से दांत भींच लिए. मरखनी एकएक पैसे के लिए झगड़ा करती है.

कुछ आगे बढ़े और वापस लौटने लगे. राधा बड़बड़ा रही थी, "एक केला तक नहीं लिया."

राधेलाल का धीरज टूट गया. चिल्ला कर कहा, "क्यों नहीं लिया केला? बात तो कर रही थी केले वाले से."

"तीन रुपए दर्जन दे रहा था क्या पैसे थे मेरे हाथ में?"

"कितनी बार कहा कि पैसे हाथ में ले कर चला करो."

"क्यों लूं? तुम तो साथ में हो."

तभी सामने केले वाला आ गया.

"क्या भाव हैं केले?" राधेलाल ने ताव से पूछा.

"चार रुपए दर्जन."

"एक रुपए के दो."

"तीन का क्या होगा? और फिर पीछे तो तीन रुपए दे रहा है." राधा ने कहा.

"तुम चुप रहो." राधेलाल ने क्रोध से कहा.

तीनों केले हाथ में ले कर राधा को पकड़ा दिए, "लो खाओ."

"किस ने कहा था इतने महंगे केले लेने को?"

राधेलाल चुप रहे और जल्दीजल्दी आगे चल दिए. कुछ मुड़ कर देखा, राधा एक केला खा रही थी.

घर पहुंच कर राधेलाल ने कपड़े बदले और अपनी आराम कुरसी पर लुढ़क गए. अब करना ही क्या था?

"खाना लगाऊं?" राधा ने पूछा.

"अभी आठ बजे हैं. यह कोई खाने का समय है?"

"मैं तो खाती हूं."

"खा लो. मैं अपने आप खा लूंगा." राधेलाल के स्वर में क्रोध था.

प्लेटों की उठापटक की आवाजें आ रही थीं. राधेलाल जानते थे कि राधा अभी नहीं खाएगी आंखें बंद किए पड़े रहे.

"अब लगा दूं खाना? नौ बजने वाले हैं."

"अभी नहीं खाऊंगा. तुम खा लो." राधेलाल ने नखरा किया, वैसे भूख तो लग रही थी.

"मरजी तुम्हारी, मैं तो खा रही हूं." राधा ने खाना लगाया और खाने लगी.

साढ़े नौ बजे राधा ने पूछा, "खाना गरम कर दूं."

राधेलाल चिढ़ गए थे, "कहा न, अभी नहीं खाऊंगा."

"मैं तो सोने जा रही हूं. खाना मेज पर रखा है."

राधा सोने चली गई. वैसे राधेलाल को मालूम है, वह सोएगी नहीं. रातभर करवटें बदलती रहती है. प्रतिक्षण, हाय, आह इत्यादि कई तरह की आवाजें निकाल कर उस का ध्यान आकर्षित करती रहती है. राधेलाल चुपचाप सुनते रहते हैं.

कुछ देर बाद राधेलाल ने उठ कर वैसे ही पड़ा ठंडा खाना ठूंस लिया. खाते समय थाली पटकना, चम्मच मारना, कटोरी घुमाना न भूले. जितना हो सकता था, शोर मचाया. मालूम था, राधा सब सुन रही है. आंखें मींचे पड़ी होगी. क्या औरत है? राधेलाल ने अपने से प्रश्न किया, इस के लिए पति नाम की कोई चीज नहीं. दो कौड़ी का हूं, दो कौड़ी का. बेवकूफ. यह शब्द जरा जोर से निकल गया.

राधा ने कमरे में से पूछा, "क्या कहा? कुछ कहा क्या?"

"कुछ नहीं. अपने को कोस रहा था."

"अपने को क्यों कोस रहे हो. मैं जो हूं निठल्ली."

राधेलाल ने बात नहीं बढ़ाई. चुपचाप आ कर अपने बिस्तर पर लेट गए. उन का बिस्तर हमेशा से अलग है. बच्चों ने कई बार हठ की कि 'डबल बेड' बनवा लें परंतु उन्होंने कभी नहीं बनवाया. राधा का बिस्तर हमेशा उलटासीधा रहता है. उस में से दवाइयों की सी बदबू आती रहती है. राधेलाल अपना बिस्तर सदा साफसुथरा रखते हैं. सुबह उठते ही झाड़ कर ठीक तरह से सजा लेते हैं. राधा को बिस्तर ठीक किए दोदोतीनतीन दिन निकल जाते हैं.

आधी रात को राधा ने जोर से आह भरी. राधेलाल चुप पड़े रहे. उस ने फिर आह भरी. वह फिर भी चुप रहे.

"सुनते हो? घुटनों में बड़ा दर्द हो रहा है. जरा मरहम लगा दो."

राधेलाल चुपचाप उठते हैं. बोलते कुछ नहीं. मरहम की ट्यूब ढूंढ़ कर लाते हैं.

उस की अलमारी एक दवाखाना है. राधा को दुनिया भर की सारी बीमारियां हैं, इसलिए सारी दवाइयां रखती है. बात सिर्फ इतनी है कि कुछ दिनों बाद ही वह भूल जाती है कि कौन सी दवाई किस बीमारी की है. राधेलाल को हंसी आती है तो उस का मुंह क्रोध से लाल हो जाता है.

धीरेधीरे राधेलाल चुपचाप राधा के घुटनों में मालिश करते हैं. कभी भूल से हाथ घुटनों के ऊपर पहुंच जाता है तो राधा चिल्लाती है, ''ऐ, यह क्या हो रहा है? मुझे गुदगुदी होती है.''

राधेलाल की मुसकान अंधेरे में गालों की झुर्रियों में गुम हो जाती है. जब दोबारा हाथ घुटने के ऊपर पहुंचता है तो राधा कहती है, ''बस अब बंद करो... सो जाओ.''

राधेलाल चुपचाप बिस्तर पर आ कर लेट जाते हैं. नींद तो नहीं आती, विचारों में खो जाते हैं. जैसे ही झपकी आती है खांसी का दौरा पड़ता है और लगता है, सुबह हो गई. जब खांसी नहीं रुकती तो राधा उठती है और छाती पर मलने के लिए मरहम ले आती है. कुछ देर तक मलती है फिर राधेलाल संकेत से मना कर देते हैं. उस के हाथ पर अपना हाथ रख कर आंखें मींच लेते हैं. अच्छा लगता है, पर राधा रुकती नहीं. दूसरे ही क्षण उठ कर हाथ साबुन से धोती है और उन्हें अपने पेटीकोट से पोंछती है क्योंकि तौलिया दिखाई नहीं देता और फिर लेट कर सो जाने का नाटक करती है.

सुबह नाश्ते पर, दिन में खाने पर, और शाम को चाय पर किसी न किसी बात पर खिचखिच चालू रहती है. हां, चिट्ठी की प्रतीक्षा अवश्य करते हैं.

राधा सदा बहुओं को दोष देती है. इधर राधेलाल कहते हैं कि अगर अपने बेटों में दम हो तो बहुएं क्या कर लेंगी?

चिट्ठी से बहू, बहू से दहेज, दहेज से और बातें और बातों से और बातें, जो सिलसिला चालू होता है तो खत्म नहीं होता.

''तुम एकदम मूर्ख हो, जो बहुओं से बना नहीं सकी, जो पति को कुछ नहीं समझ सकी वह क्या उम्मीद करे अच्छे व्यवहार की?'' राधेलाल ने क्रोध से कहा.

''तो अब यह इज्जत रह गई है मेरी?'' राधा ने चिल्ला कर कहा, ''बहुएं सब कुछ हो गईं और मैं कुछ नहीं?''

राधेलाल ने संभल कर कहा, ''मेरा मतलब यह नहीं था. तुम तो मूर्ख हो. सब उलटा समझती हो.''

''मूर्ख तुम हो, मैं क्यों?''

इस के बाद जो लड़ाई हुई, वह शब्दों में वर्णन नहीं की जा सकती. लगता था, एकदूसरे को साबुत निगल जाएंगे. राधेलाल ने तुरंत कपड़े बदले और बाहर निकल गए. कुछ बुदबुदाए. राधा मुंह ढक कर पड़ी थी. वह जोर से बोले, ''जा रहा हूं बाजार. बाहर खड़ा हूं. चलना हो तो आ जाना.''

''मैं नहीं जाऊंगी. अपनेआप झक मार आओ.'' राधा ने कटुता से कहा.

राधेलाल बाहर हर रोज की तरह खड़े थे. मालूम था कि राधा आएगी. उसी तरह श्रृंगार कर के, बनठन कर.

करमचंद ने सामने आ कर कहा, ''भाईसाहब, आप को देख कर तो सच ही बड़ी ईर्ष्या होती है, कितना सुखी और संतुष्ट जीवन है आप का.''

राधेलाल मुसकरा कर चुप रहे. उत्तर नहीं दिया. दिल जल रहा था.

उत्तर न पा कर करमचंद ने फिर कहा, ''तबियत तो ठीक है न? भाभीजी कैसी हैं? सब ठीक है न?''

गहरी सांस भर कर राधेलाल ने कहा, ''बस भई, गाड़ी खिंच रही है.''

कैसे कहते, अपने परस्पर झगड़े की बात? यही तो उन का शगल है. अगर झगड़ा भी न करें तो जिएं कैसे?

तभी राधा सज कर बाहर आई. छनछन से ध्यान आकर्षित हुआ. दोनों ने ध्यान से देखा. आज राधा ने चांदी की घुंघरू वाली पायल भी पहन रखी थी. राधेलाल मुसकराए. राधा ने मुसकरा कर मुंह फेर लिया. 65 साल की दुलहन शरमा गई थी.

भाभी

(पृष्ठ 179 का शेषांश)

पानी, दूध सभी कुछ तकिए के सहारे बैठा कर देना पड़ता था. डाक्टर का कहना था कि दवा व मालिश से धीरेधीरे वह ठीक हो जाएंगे, लेकिन समय काफी लग सकता है.

उस वक्त घर में सब से दयनीय स्थिति नन्हे की थी. मां पिताजी की सेवाशुश्रूषा में लगी रहतीं. भैया जितनी देर घर रहते नन्हे को संभालते, लेकिन उन के काम पर जाते ही वह रोने, बिलखने लगता. कभी नौकरानी उठा लेती तो कभी मां ही गोद में ले कर पिताजी के तथा घर के छोटेमोटे कार्य करती रहतीं. नन्हे के दूध, पानी, खिचड़ी, रस वगैरह का कोई नियमित समय रहा ही न था. शायद इसी कारण वह कमजोर व चिड़चिड़ा हो गया था.

शीला को भाभी की याद आ जाती कि किस तरह वह सारे कार्य छोड़ कर पहले नन्हे की देखभाल करती थीं. अचानक उस के मुंह से निकल गया, "देखा बेचारे बिन मां के बच्चे का क्या हाल हो रहा है? अभी तो केवल डेढ़ महीना ही बीता है भाभी को गुजरे. पता नहीं आगे क्या...."

रीतेश ने चौंक कर पत्नी को देखा फिर धीरे से बोला, "मैं भी दो दिनों से इस की हालत देख कर बेचैन हो रहा हूं. इस बेचारे का क्या भविष्य है?"

शीला विचारमग्न हो गई, 'अभी तो पिताजी को ठीक होने में काफी समय लग जाएगा. नन्हे की देखभाल ठीक से न हुई तो बीमार भी पड़ सकता है. भैया कितना संभालेंगे? छोटे भाई भी अपनी पढ़ाई और खेलकूद में व्यस्त रहते हैं. कोई विश्वासपात्र आया या नौकरानी भी आजकल मिलना कठिन है. क्या मैं इसे नहीं पाल सकती? लेकिन... रीतेश, भैया, मांपिताजी मानेंगे?'

रात को शीला नन्हे को अपने साथ सुलाने ले आई. बोतल से दूध पिला कर उसे थपथपा कर सुलाया तो उस के गालों पर सूख चुके आंसुओं के निशान देख कर रीतेश अचानक बोल उठा, "शीला, अगर तुम चाहो तो नन्हे को अपने साथ रख सकती हो. मैं कल जा रहा हूं, तुम एक सप्ताह रुक कर आ जाना?"

शीला को जैसे रीतेश की बातों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. वह एकाएक बोल उठी, "सच? तुम सच कह रहे हो न?"

"हां शीला, मैं पिछले तीन दिनों से यही सोच रहा हूं, यहां नन्हे का भविष्य अंधकारमय नजर आ रहा है. भैया भी कब तक अकेलेपन का बोझ उठाते फिरेंगे? साल दोसाल में ब्याह कर ही लेंगे. मांपिताजी तो स्वयं ही विवश, टूटे हुए और आश्रित से हैं. अगर नई बहू नन्हे के साथ न्याय न कर पाई तो? शायद उस की देखभाल की जिम्मेदारी हमें ही करनी है." रीतेश ने कहा.

शीला के मनमस्तिष्क पर पड़ा अतिरिक्त बोझ अचानक हलका हो गया. रीतेश दूसरे दिन लौट गया था.

अगले तीनचार दिनों तक शीला ही नन्हे की देखभाल करती रही. एक दिन शीला ने कह ही डाला, "मां अगर आप लोगों को एतराज न हो तो नन्हे को साथ ले जाने के लिए मैं तैयार हूं."

मां व भैया हैरानी से एकदूसरे का मुंह देखने लगे. आखिर मां ही बोलीं, "लेकिन रीतेश तैयार होंगे? तुम ने उन से इस बारे में पूछा है?"

"हां, वह तैयार हैं." शीला ने कहा.

"परंतु लोग क्या कहेंगे कि इन से एक बच्चा भी नहीं संभाला गया और वह भी अपना ही खून." मां दुविधा में पड़ी परेशानी से कह उठीं.

"मां, लोगों की बातें छोड़ो. हमें नन्हे के भविष्य के बारे में सोचना है या लोगों की बातों की परवाह करनी है?"

"पर...." मां झिझकती हुई रुक गईं.

"क्या बात है मां, कहो न?" शीला के

आग्रह पर वह धीरे से बोलीं, "जब तुम्हार अपना बेटा हो जाएगा तो नन्हे का क्य होगा?"

"कमाल करती हो मां, तुम भी. तुम से किस ने कह दिया कि मैं और बच्चे पैद करूंगी? एक गुड़िया और एक नन्हे, बस हमारा परिवार यहीं तक सीमित रहेगा."

"सच शीला?" मां तथा भैय साथसाथ कह उठे.

दूर पलंग पर लेटे पिताजी की आंखे में भी कृतज्ञता के भाव उभर आए थे. जह मां तथा पिताजी को संतोष और विश्वास था कि शीला नन्हे को मां की ममता, प्यार दे कर सही देखभाल करेगी, वहीं भैया को कुछ संदेह सा परेशान कर रहा था कि क्य सचमुच शीला नन्हे के साथ सामान्य व्यवहार कर न्याय कर पाएगी?

रात भर भैया विचारों के समुद्र में गोते खाते रहे. कभी सोचते, बेशक नन्हे की देखभाल ठीक से नहीं हो रही परंतु अपनी आंखों के सामने तो है न. वहां पता नहीं शीला और रीतेश उस से कैसा व्यवहा करें...? फिर तुरंत ही मन कह उठता कि यह प्रस्ताव तो स्वयं शीला का है. इस क अर्थ तो यह हुआ कि वे स्वयं ही खुशीखुशी नन्हे को रखना चाहते हैं. शीला का यह तर्क भी वजनदार है कि लोगों की परवाह छोड़ कर उन्हें नन्हे के भविष्य को देखना है.

वह फिर सोचने लगा, दुखों, चिंताओं ने मां को भी कमजोर बना दिया है. अब उ से भी ठीक से घर संभाला नहीं जाता. इस घर और मांपिताजी की देखरेख के लिए उन्हें दोबारा विवाह भी करना पड़ेगा. दूसरी पत्नी अगर नन्हे से दुर्व्यवहार करने लगी तो अपनी आंखों के सामने क्या वह यह सब सहन कर पाएंगे? शीला तो आरंभ से ही अपनी भाभी के प्रति अत्यधिक स्नेह सम्मान तथा प्रगाढ़ प्रेम रखती थी. इसी कारण नन्हे से भी उसे बहुत लगाव था शायद भविष्य में उस के साथ अन्याय की आशंका के कारण ही उस ने नन्हे को संभालने का प्रस्ताव रखा हो. रीतेश भ

सहमत हो गए हैं. इस का तात्पर्य यह है कि इस प्रस्ताव से नन्हे के अच्छे भविष्य की आशा की जा सकती है. मन में उठ रहे काफी तर्कों के पश्चात उन्होंने शीला के प्रस्ताव को मानने का निर्णय कर लिया.

अगले सप्ताह शीला लौटने की तैयारी में थी. पिताजी, मां तथा भैया की आंखों में कृतज्ञता के भाव थे. बस में बैठते हुए शीला बोली, "नन्हे आज से हमारा बेटा है. आप लोग इस के बारे में बिलकुल चिंता न करें."

दफ्तर से लौट कर रीतेश ने दरवाजे की घंटी बजाई तो शीला नन्हे को गोद में ले कर तथा गुड़िया का हाथ पकड़ कर दरवाजा खोलने गई. अंदर आते ही रीतेश ने एक तरफ गुड़िया और दूसरी ओर नन्हे को बांहों में भर लिया, "कैसे हैं, हमारे नन्हे साहबजादे?"

प्रसन्नता से शीला की आंखें नम हो गईं, "रीतेश, भाभी ने हमारे घर, हमारी गुड़िया और महल्ले वालों के लिए जितनी सेवा व त्याग केवल दो वर्षों में किया है, उस की मिसाल नहीं है. उन के त्याग, सेवाभाव और निश्छल स्नेह के बदले अगर उन के बेटे की हम सही ढंग से देखभाल कर पाएंगे तो समझेंगे कि हम ने भी अपने कर्तव्यपालन द्वारा भाभी के आदर्शों का अनुसरण किया है."

रीतेश ने मुसकरा कर पत्नी का समर्थन किया. "एक बात कहूं, बुरा तो नहीं मानोगे?" शीला ने पति की आंखों में झांका.

"कहो, मुझ पर विश्वास नहीं क्या?" रीतेश ने प्रतिप्रश्न करते हुए कहा.

"दरअसल, भाभी मेरे सपने में कभी आई ही नहीं. उस दिन मैं ने झूठ कहा था. वास्तव में तो नन्हे के भविष्य को ले कर मैं चिंतित थी, इसलिए अपने मन की बात कहने के लिए उस काल्पनिक घटना का सहारा लिया था." शीला ने कहतेकहते सिर नीचा कर लिया.

"अच्छा, इतनी बड़ी चालाकी की हम से?" रीतेश ने हैरानी से कहा तो शीला कांप गई.

इस पर रीतेश ठहाका लगाते हुए बोला, "बस, इतना ही विश्वास है मुझ पर. अरी पगली, अगर तुम बहाना बना कर यह प्रस्ताव न रखतीं तो शायद मेरी ओर से यही प्रस्ताव रखा जाता."

"क्या...?" शीला आश्चर्यचकित थी.

"हां शीला. मैं ने जब भैया की दोतीन चिट्ठियों में पढ़ा कि मां नन्हे के लिए बहुत चिंतित रहती हैं, उसे ठीक से संभाल नहीं पातीं, तभी से मन में यह विचार आने लगे कि क्यों न नन्हे को हम ही बेटा मान कर पालें. लेकिन मैं उचित अवसर की तलाश में था और अवसर आने पर मैं ने तुम्हें कह ही दिया था. सच मानो तो यह सब तुम्हारी आदर्श भाभी की ही प्रेरणा का फल है."

पति के हृदय की विशालता के सम्मुख शीला नतमस्तक हो गई थी. ●

केवल 2% जंगल भारत में

संपूर्ण विश्व की जनसंख्या के 15% आबादी वाले भारत की कुल वन संपत्ति विश्व के जंगलों का मात्र 2% है. देश में प्रतिवर्ष 15 लाख हेक्टेयर जंगल काटे जाते हैं और केवल 5 लाख हेक्टेयर जंगल लगाए जाते हैं. पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार इतने बड़े पैमाने पर जंगलों का काटा जाना भूमि के कटाव, सूखे तथा बाढ़ के खतरे को बढ़ा रहा है.

भारत में अभी केवल 20% भाग में ही जंगल है, जबकि कम से कम 33% भाग में जंगल होने चाहिए. सरकार तथा कुछ अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसियां भी इस लक्ष्य को प्राप्त करने में लगी हुई हैं.

पाठकों की समस्याएं



मैं 18 वर्षीया छात्रा हूं, कृपया मुझे नजदीकी स्थान बताएं जहां से प्लास्टिक सर्जरी करा सकूं. इस से कोई दोष तो नहीं आ जाता?

आप को किसी कुशल प्लास्टिक सर्जन से ही सर्जरी करानी चाहिए. आप दिल्ली के सफदरजंग हस्पताल से संपर्क कर सकती हैं. वैसे प्लास्टिक सर्जरी को आप खेल न समझें. यह प्रक्रिया कष्टदायक भी है और इस में थोड़ा जोखिम भी है.

मैं 27 वर्षीया विवाहिता हूं, छाती, मुंह व ठोढ़ी के नीचे के बालों से परेशान हूं, इन्हें स्थायी रूप से हटाने का कोई इलाज बताएं?

स्थायी इलाज के लिए आप को इलेक्ट्रोलिसिस विधि को ही अपनाना होगा. इस से भी एक बार में ही बाल जड़ से नहीं समाप्त होते. पर यह उपचार कई बार दोहराने से पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं. यह लंबी व महंगी प्रक्रिया है, पर स्थायी इलाज भी यही है.

मैं जीवन की संध्या बेला में हूं. अपने एक मात्र दोनों पैरों से विकलांग पुत्र को किसी अच्छी संस्था के संरक्षण में देना चाहता हूं, क्या देश में कोई ऐसी शासकीय अथवा समाजसेवी संस्था है, जो विकलांगों को संरक्षण दे सके.

आप निदेशक, समाज कल्याण विभाग, 18, केनिंग लेन, नई दिल्ली एवं स्वैच्छिक समाज सेवी संस्था अमरज्योति चैरिटेबल ट्रस्ट, कड़कड़डूमा, नई दिल्ली से पत्र व्यवहार कर सकते हैं.

मैं 18 वर्षीया छात्रा हूं, मेरी सगाई हो चुकी है और शादी की तिथि तय हो चुकी है जो कि मेरी मासिक धर्म की तारीख भी है. क्या किसी दवा के द्वारा इस में परिवर्तन लाया जा सकता है. दूसरे, सुना है कि सुहागरात को लड़के बुरी तरह पेश आते हैं. मैं अपने मासिक धर्म के दौरान तेज दर्द से पीड़ित रहती हूं, कई बार बेहोश तक हो जाती हूं. क्या करूं?

प्रथम तो यह मान कर चलिए कि सुहागरात को पति के बुरी तरह पेश आने वाली बात सही नहीं है, यह तो दो दिलों के परस्पर मेल व सौहार्द की रात होती है. रहा मासिक धर्म का प्रश्न तो यदि शादी की तिथि एकदम पक्की नहीं है तो आप अपनी भाभी या अन्य किसी हमराज से कह कर तिथि बदलवा लीजिए. मासिक चक्र में बदलाव के लिए आप को किसी लेडी डाक्टर से परामर्श लेना होगा.

कृपया उन संस्थानों का पता बताएं जहां से बच्चा गोद लिया जा सकता है?

'उदयन,' डाक्टर्स लेन, गोल मार्किट, नई दिल्ली.

समाज कल्याण निदेशालय, ओल्ड आई.टी. आई. बिल्डिंग, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001.

दिल्ली कौंसिल फार चाइल्ड वेलफेयर 'पालना', कुदसिया बाग, दिल्ली.

आप उपर्युक्त संस्थानों से संपर्क कर सकते हैं.

मैं एक सरकारी सेवारत 23 वर्षीय विवाहित युवक हूं. समस्या यह है कि मैं अत्यंत दुबलापतला हूं. खूब खाने के बाद भी सेहत नहीं बनती. कुछ दोस्तों का कहना है कि मैं शराब पीना शुरू कर दूं. कृपया राय दीजिए कि क्या शराब के सेवन से सेहत बन जाएगी?

शराब के सेवन से रहीसही सेहत भी जाती रहेगी. आप ऐसे दोस्तों की राय कभी न मानें. खूब खाने से ही सेहत नहीं बनती. आप किसी चिकित्सक की राय से पौष्टिक भोजन एवं विटामिन की गोलियां लेना शुरू कर सकते हैं.

मैं एक अविवाहित युवती हूं. समस्या यह है कि दो वर्ष से एक लड़का हमारे घर आ कर पारिवारिक सदस्य समान बन गया है. पर दरअसल वह मुझ से शारीरिक संबंध स्थापित करना चाहता है, घर वालों के सामने भी मुझ से प्रेम भरी व अशिष्टतापूर्ण बातें करता है. इस सब से मेरा तनाव बढ़ रहा है. बताइए, क्या करूं?

शायद आप के घर वालों को उस के कुत्सित इरादों का पता न लग पाया हो, आप घर के किसी सदस्य से स्पष्ट रूप से कह दीजिए. उस की किसी भी कुचेष्टा को आप दृढ़ शब्दों से कुचल सकती हैं.

एकांत का अवसर भी न आने दें, आप की बेरुखी और घर वालों के मना करने पर वह आप से दूर हो जाएगा.

मैं 23 वर्षीय स्वस्थ विवाहित युवक हूं. अपनी पसंद की लड़की से ही शादी की है, लेकिन समस्या यह है कि सुहागरात वाले दिन उसे और मुझे कोई परेशानी नहीं हुई, क्या उस का शीलभंग हो चुका है? सहवास के अगले दिन वह मायके चली गई, अभी गौना होना है. मैं ने यह बात उस से नहीं की, पर चाहता हूं वह अपनी गलती मान ले. इस तनाव के कारण मेरी पढ़ाई भी नहीं हो पा रही. जब उस ने खेलकूद में भाग नहीं लिया, न कोई दुर्घटना ही घटी तो ऐसा क्यों हुआ? उसे मैं छोड़ भी नहीं सकता, क्या करूं?

केवल खेलकूद या कोई दुर्घटना ही कौमार्य भंग होने का कारण नहीं है और भी कई कारण हैं, जैसे कभी ऊंचीनीची जगह पर पांव पड़ने या कई बार अन्य किसी कारण से झिल्ली फट सकती है, इस में कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है. याद रखिए, ऐसे बेसिरपैर के संदेह द्वारा आप स्वयं तो तनाव में रहेंगे ही, साथ ही आप का भविष्य भी चौपट हो जाएगा.

मैं 20 वर्षीया युवती हूं. मेरा कद काफी छोटा है. क्या व्यायाम के अतिरिक्त कद बढ़ाने का कोई उपाय बता सकती हैं?

जी नहीं. कद कुछ खा कर तो बढ़ाया नहीं जा सकता. आप एक तो ऊंची एड़ी के सैंडिल पहनना शुरू कर दें और लंबी धारी के प्रिंट को खड़े बल में सिलवा कर पहनें, साथ ही वजन न बढ़ने दें, तब आप ठीक लगेंगी.

मैं एम.ए.बी.एड. पास अविवाहित युवती हूं. दिल्ली या रोहतक में आकाशवाणी आदि में नौकरी करना चाहती हूं. क्या दूसरे शहर में रह कर नौकरी करना सुरक्षित है? किसकिस पद पर मेरा चुनाव हो सकता है और कहां आवेदनपत्र भेजूं?

आप को नौकरी मिल सकती है, किंतु इस के लिए उस नौकरी के किसी पद हेतु अखबार आदि में विज्ञापन हो, तब आप आवेदन कर सकती हैं. आप की, शिक्षा के अनुसार शिक्षिका की नौकरी सर्वोत्तम है. अखबार में दिए विज्ञापन देखते रहना चाहिए. रहा सवाल दूसरे शहर में नौकरी करने का तो रहने की जगह ठीक होना जरूरी है, तभी आप सुरक्षित अनुभव करेंगी.

मेरे चेहरे पर अनावश्यक बाल हैं. मुझे लगता है कि ब्लीच करने से बाल बढ़ते हैं, क्या इलेक्ट्रोलिसिस से बाल ठीक से हट जाते हैं? मेरे होंठों के ऊपर वाली जगह पर भी मर्दों की तरह बहुत बाल हैं, इस से हीन भावना बढ़ गई है, क्या करूं?

ब्लीच करने से बाल थोड़ेबहुत बढ़ते हैं, आप घरेलू ब्लीच जैसे, खीरे का रस और नीबू का रस बराबर मात्रा में मिला कर लगाएं तो नियमित प्रयोग से बाल ब्लीच हो जाएंगे और बढ़ेंगे नहीं. इलेक्ट्रोलिसिस भी कई बार करवाने से बाल हट जाते हैं. पर यह थोड़ी महंगी प्रक्रिया है.

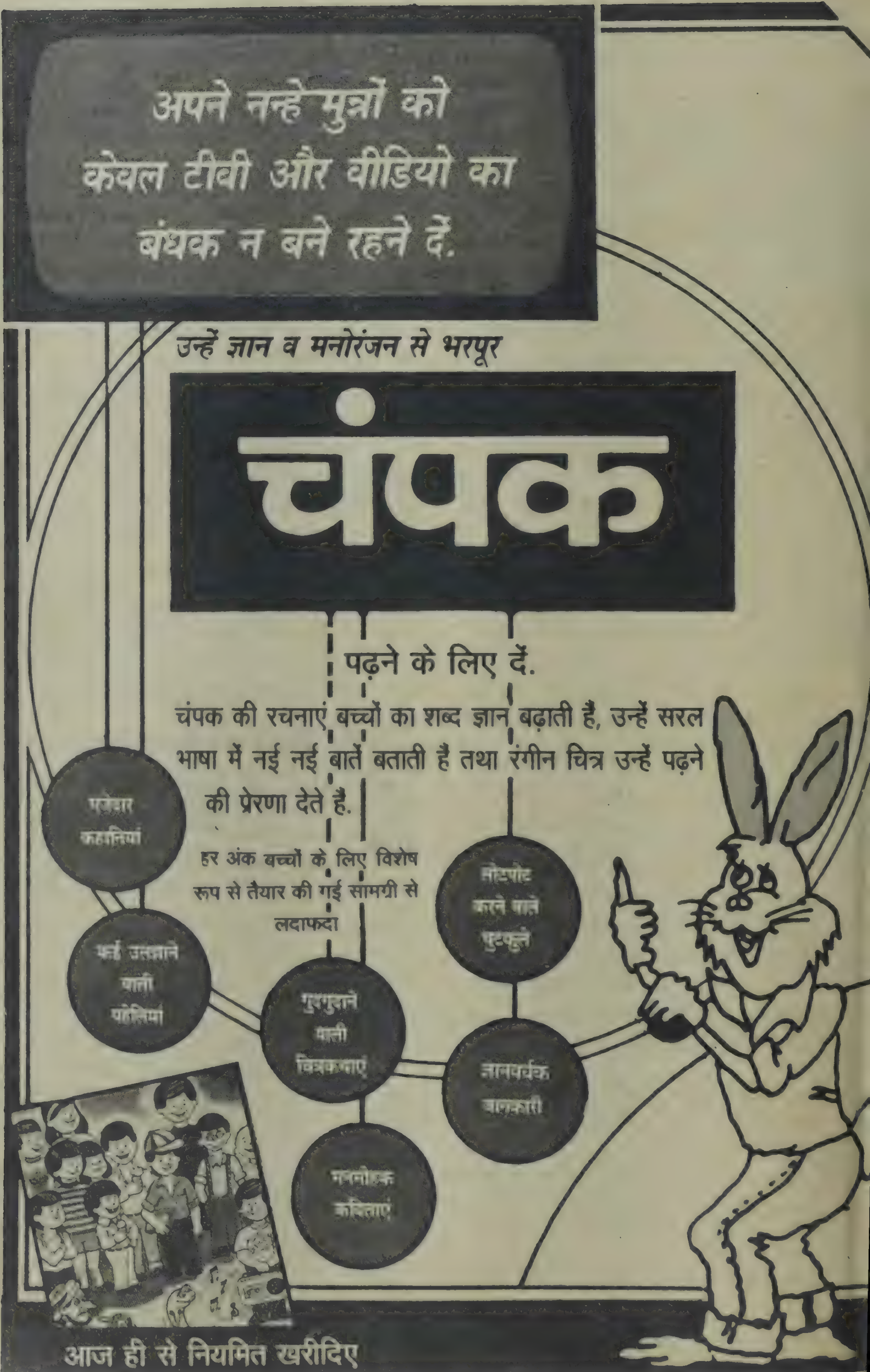
मैं 18 वर्षीया छात्रा हूं, मेरी नाक का आकार बहुत भद्दा है. जब कोई टोकता है तो मर जाने का मन करता है. मैं ने टीवी में देखा था कि नाक का आकार ठीक हो सकता है. मैं मध्यमवर्ग से संबंधित हूं. क्या ऐसा आपरेशन कहीं भी हो सकता है और कितना पैसा लगेगा?

आपरेशन से कोई अंग ठीक कराने की विधा को प्लास्टिक सर्जरी कहते हैं. निश्चित रूप से आप की नाक ठीक हो सकती है. इस में खर्च भी बहुत नहीं आता, पर योग्य शल्यचिकित्सक का होना जरूरी है. आप सफदरजंग हस्पताल, नई दिल्ली के प्लास्टिक सर्जरी विभाग को पत्र लिख कर संपूर्ण जानकारी ले सकती हैं.

मैं 21 वर्षीय अविवाहित युवक हूं. दो साल पहले मौसी की लड़की आई और दो साल यहां रही. इस बीच हम एकदूसरे को चाहने लगे. शारीरिक संबंध तो नहीं हो पाया, पर और सब कुछ था, हम दोनों के बीच. अब उस की शादी हो गई और वह भी मेरे ही शहर में लगता है, मुझे वह अब कम चाहती है. क्या करूं?

यह सब केवल आकर्षण है. मौसी की लड़की आप की बहन है. उस से यह रिश्ता ही गलत था और अब वह विवाहित है, इसलिए आप उस के घर कम से कम जाने का प्रयत्न करें. किसी भी सुंदर लड़की को देख कर आकर्षित होने से लगता है कि आप खाली ज्यादा रहते हैं और इन्हीं विचारों से घिरे रहते हैं. **—कंचन**

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.



अपने नन्हे मुन्नों को
केवल टीवी और वीडियो का
बंधक न बने रहने दें.
उन्हें ज्ञान व मनोरंजन से भरपूर
चंपक
पढ़ने के लिए दें.
चंपक की रचनाएं बच्चों का शब्द ज्ञान बढ़ाती है, उन्हें सरल भाषा में नई नई बातें बताती है तथा रंगीन चित्र उन्हें पढ़ने की प्रेरणा देते हैं.
हर अंक बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई सामग्री से लदाफदा
आज ही से नियमित खरीदिए

★ जीने दो

निर्माता : राकेश सेठी
निर्देशक : राजेश सेठी
संगीत : राहुलदेव बर्मन
मुख्य कलाकार : जैकी श्रोफ, संजय दत्त, फरहा, सोनम, अमरीश पुरी, शक्ति कपूर और अनुपम खेर.

कर्ज लेना किसान की मजबूरी है और कर्ज देना साहूकार की रोटी है. जो कर्ज किसान अपने परिवार के लिए साहूकार से लेता है उसी कर्ज के सूद से साहूकार किसान की जिंदगी को किस तरह बदतर बना देता है, यही फिल्म 'जीने दो' का मुख्य विषय है.

हालांकि किसान अब जागरूक हो गया है. उसे भी अक्ल आ गई है कि अपना अनाज वह खुद मंडी में ला कर बेच सकता है. फिर भी देश के कई ऐसे पिछड़े इलाके आज भी मौजूद हैं जहां किसान जमींदारों को ही अपना माईबाप समझते हैं और ताउम्र उन की गुलामी करते रहते हैं.

फिल्म 'जीने दो' ऐसे ही किसानों की कारुणिक कथा पर लिखी गई है. फिल्म में अगर कुछ कमियों को नजरअंदाज कर दिया जाए तो फिल्म अपने उद्देश्य में सफल होती नजर आती है.

हरदयाल (अनुपम खेर) एक किसान है जिस के दो बेटे हैं. सूरज (जैकी श्रोफ) और कर्मा (संजय दत्त). सूरज पढ़ने में जितना होशियार है कर्मा उतना ही नालायक. सूरज को पढ़ाने की खातिर हरदयाल साहूकार शेर बहादुर (अमरीश पुरी) से कर्ज लेता है. कर्ज उतर नहीं पाता और सूद बढ़ता ही जाता है. सूरज को जब इस कर्ज के बारे में पता चलता है तो वह साहूकार के पास जा कर अपने बाप के अंगूठे वाले खाली कागज पर कर्ज की रकम

'जीने दो' में संजय दत्त : अच्छा अभिनय.



लिखवा देता है. उधर साहूकार सूरज को एक षड्यंत्र में फंसवा देता है. कहानी उस समय मोड़ लेती है जब हरदयाल का नालायक बेटा कर्मा बाप का बोझ स्वयं उठाता है और साहूकार के अत्याचारों को सहन करता है. तभी एक दिन सूरज वापस गांव लौटता है. दोनों भाई मिल कर साहूकार से अपने दुखों का बदला लेते हैं. इसी कहानी के साथसाथ सूरज और सुजाता (सोनम) व कर्मा और कमली (फरहा) की प्रेम कहानी भी चलती है.

फिल्म की कहानी किस काल की है, स्पष्ट नहीं है. लगता है जैसे सन 1947 से पहले की कहानी देख रहे हैं. मगर फिल्म की पटकथा काफी सशक्त है. फिल्म में अगर कोई कमी है तो वह है उस का संपादन. जगहजगह ऐसा लगता है जैसे फिल्म जंप कर रही हो. लगता है ज्यादा काटछांट करने के चक्कर में संपादन गड़बड़ा गया है.

फिल्म का निर्देशन राजेश सेठी ने दिया है. बतौर निर्देशक यह उस की पहली फिल्म है. इस फिल्म में उस ने अच्छा निर्देशन दिया है. निर्देशक ने फिल्म का संतुलन बनाए रखा है. मारधाड़, भावनात्मक दृश्य, रोमांस, गीत, संगीत सभी का समन्वय खूबसूरती से किया गया है. फिल्म के संवाद भी अच्छे लिखे गए हैं.

अभिनय की दृष्टि से अनुपम खेर का काम काफी अच्छा कहा जा सकता है. संजय दत्त ने एक उग्र युवक की भूमिका में अच्छा काम किया है. जैकी श्रोफ साधारण रहा है. शक्ति कपूर ने दर्शकों को थोड़ाबहुत हंसाया है. नायिकाओं के करने के लिए फिल्म में गुंजाइश कम थी. अन्य कलाकार साधारण रहे हैं.

फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. जिन्हें राहुलदेव बर्मन ने अच्छी धुनें दी हैं. दरअसल इस फिल्म का संगीत ही अच्छा है. फिल्म का छायांकन मनमोहन सिंह ने किया है. आउटडोर शूटिंग के कुछ दृश्य अच्छे बन पड़े हैं.

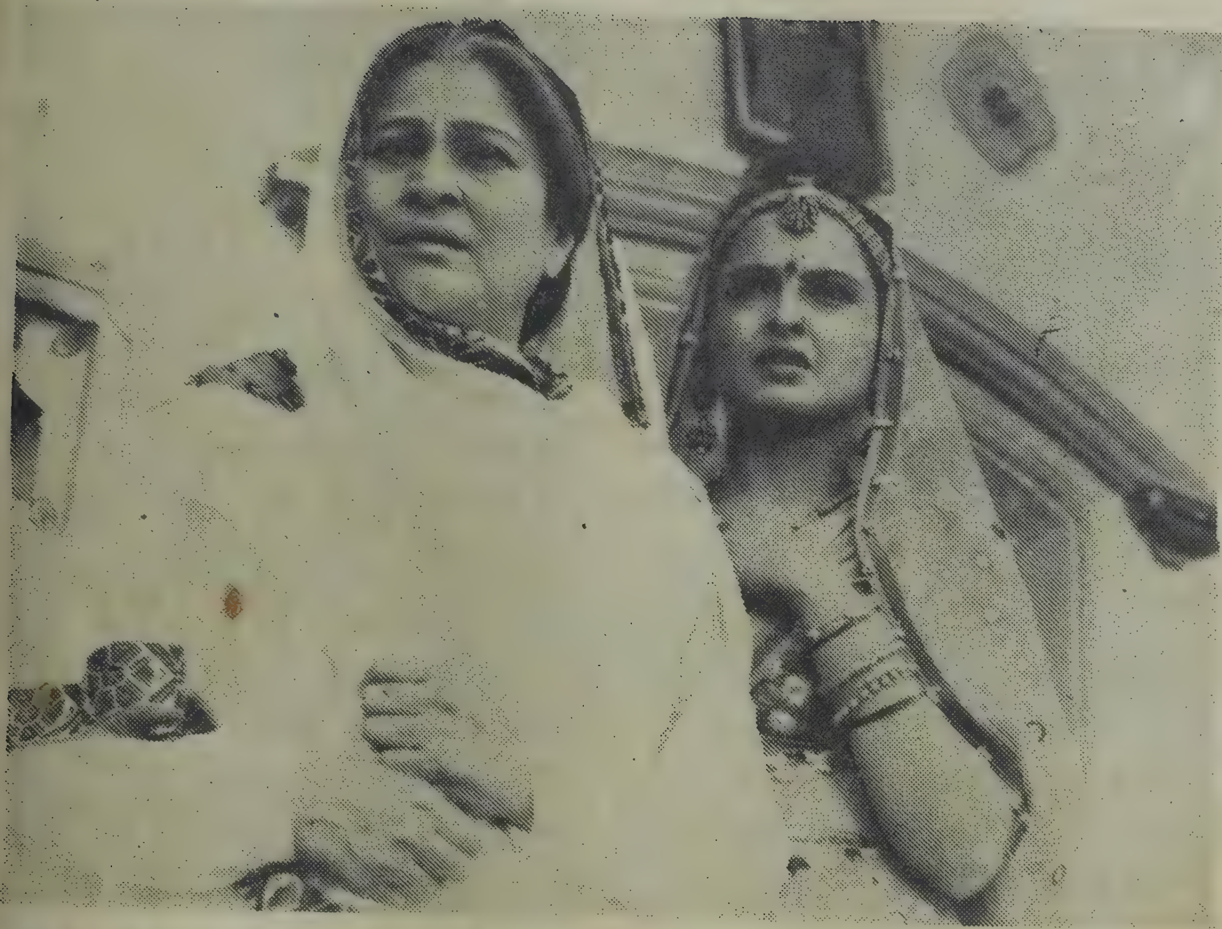
★ बहूरानी

निर्माता : प्रेम लालवानी
निर्देशक : मानिक चटर्जी
संगीत : राहुल देव बर्मन
मुख्य कलाकार : रेखा, राकेश रोशन, उत्पल दत्त, उषा किरण, राकेश बेदी, देवेन वर्मा और अरुणा ईरानी.

कई वर्ष पहले गुरुदत्त और माला सिन्हा को ले कर 'बहूरानी' फिल्म का निर्माण किया गया था. उस फिल्म में नायकनायिका दोनों ने अपने अच्छे अभिनय से दर्शकों को प्रभावित किया था. यह 'बहूरानी' उस 'बहूरानी' के मुकाबले ज्यादा अच्छी तो नहीं कही जा सकती, हां, विषय प्रस्तुतीकरण, अच्छे संवादों के कारण कुछ हद तक अच्छी कही जा सकती है. फिल्म की बस एक ही कमजोरी है और वह है इस की धीमी गति. अगर निर्देशक फिल्म में थोड़ी तेजी ला पाता तो फिल्म चल निकलती.

माधुरी (रेखा) एक पढ़ीलिखी लड़की है जो अपनी विधवा मां और भाई के साथ गांव में रहती है. शहर के एक रईस आदमी के बेटे अमित (राकेश रोशन) के साथ उस की शादी तय हो जाती है. अमित को यह रिश्ता मंजूर नहीं होता क्योंकि वह शहर की आधुनिक लड़की से शादी करना चाहता है, परंतु उस में अपने पिता से न कहने की हिम्मत नहीं है. वह चुपचाप माधुरी से शादी कर लेता है, परंतु फेरों के बाद ही वह उसे त्याग देता है. माधुरी शहर आती है और मालती बन कर अमित के दफ्तर में ही उस की सचिव बन जाती है. वह धीरेधीरे अमित को अपने प्रेमजाल में फंसा लेती है. अंत में जब अमित उस के सामने शादी का प्रस्ताव रखता है, तभी वह भेद खोलती है. अमित उसे स्वीकार कर लेता है.

फिल्म पारिवारिक है, मगर काफी लचर है. मध्यांतर तक फिल्म की गति



'बहूरानी' के एक दृश्य में रेखा और उर्मिला भट्ट.

काफी धीमी रहती है. निर्देशक मानिक चटर्जी ने बासु चटर्जी की तरह निर्देशन देने की कोशिश की है. बासु चटर्जी का अपना एक अलग ढंग है. फिल्म में जहांतहां हंसी की फुलझड़ियां छूट पड़ती हैं, खासकर उत्पल दत्त के संवाद सुन कर दर्शक खिलखिला पड़ते हैं.

बहुओं वाली भूमिकाएं रेखा अच्छी तरह कर लेती है. इस के अलावा बीवियों वाली भूमिकाएं भी यह ठीक ढंग से निभा लेती है. दो वर्ष पहले प्रदर्शित 'बीवी हो तो ऐसी' में रेखा ने जो स्वाभाविक अभिनय किया था, वह इस फिल्म में नदारद है. 'खून भरी मांग' में रेखा ने राकेश रोशन के साथ ही जो प्रणय दृश्य दिए थे, जो चुलबुलापन दिखाया था, दर्शक उस का इस फिल्म में इंतजार ही करते रह गए. वैसे इस फिल्म में वह आकर्षक दिखाई दी है, वैसी ही छरहरी, पतलीदुबली, जैसी आज से पांच वर्ष पहले दिखाई देती थी.

उत्पल दत्त के अभिनय की अपनी एक अलग शैली है. उस ने अपने अभिनय की छाप दर्शकों पर एक बार फिर से छोड़ी है. देवेन वर्मा का हास्य अभिनय दर्शकों को पसंद आएगा. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म के गीत अनजान ने लिखे हैं. एक गीत 'दुनिया की नजरों से छिप के मिले' अच्छा बन पड़ा है. फिल्म का छायांकन साफसुथरा है.

○ खूनी मुरदा

निर्मातानिर्देशक: **मोहन भाखड़ी**
संगीत: **भप्पी लाहिड़ी**
मुख्य कलाकार: **दीपक पराशर, मीठी, जावेद खान, मयूर, पुनीत इस्सर, कामना, हुमा खान, राजेश विवेक, जगदीप तथा किरणकुमार (मेहमान कलाकार).**

भारत में 'हारर' फिल्मों के निर्माता एफ. यू. रामसे की फिल्में देख कर डर नहीं

लगता बल्कि हंसी आती है. इन फिल्मों का स्तर इतना घटिया होने के बावजूद आज भी दर्शकों का एक वर्ग इन्हें बड़े चाव से देखता है. यही कारण है कि सभी 'हारर' फिल्में आर्थिक रूप से फायदे का सौदा मानी जाती हैं. क्योंकि इन पर खर्च भी बहुत कम होता है.

इन फिल्मों में कहानी लगभग होती ही नहीं है. इस फिल्म की कहानी भी केवल इतनी सी है कि परिस्थितिवश कालिज के छात्रों के एक ग्रुप के हाथों एक बदमाश की हत्या हो जाती है. इस बदमाश की 'आत्मा' एकएक कर के इन छात्रों को खत्म करती है. अंत में जब कुछ छात्र बच जाते हैं तो एक तांत्रिक की मदद से इस आत्मा को खत्म किया जाता है.

फिल्म में विशेष प्रभाव दर्शाने के लिए जिस तकनीक का प्रयोग किया गया है, वह बहुत ही पुरानी है.

अगर जगदीप की अत्यंत अश्लील हरकतों एवं संवादों में आप की (कु) रुचि है तो यह फिल्म अवश्य देख सकते हैं. वैसे हालत यह है कि रामसे की फिल्में देख कर कम से कम हंसी तो आती है मगर इस फिल्म को देख कर तो वह भी नहीं आती, सिर्फ रोना आता है.

○ शानदार

निर्माता: टी.सी. दीवान
निर्देशक: विनोद दीवान
संगीत: भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार: मिथुन चक्रवर्ती, सुमित सहगल, मीनाक्षी शेषाद्रि, जूही चावला, कादर खान, डैनी, मंदाकिनी तथा तनूजा.

आज नंबर एक के सिंहासन की तरफ बढ़ते अनिल कपूर के कदमों को कोई व्यक्ति यदि लगाम दे सकता है तो वह है मिथुन चक्रवर्ती. परंतु मिथुन यदि ऐसा नहीं कर पा रहा है तो उस का कारण यह है कि जहां एक ओर अनिल के कर्णधारों की सूची में सुभाष घई, एन. चंद्रा व सतीश कौशिक जैसे प्रतिभाशाली लोग शामिल हैं, वहीं दूसरी ओर मिथुन के चहेते बी.सुभाष, के. बापय्या व टी.सी. दीवान जैसे दूसरे दर्जे के निर्देशक हैं. नतीजा यह है कि मिथुन की बासी एवं घिसीपिटी फिल्मों का अंतहीन सिलसिला कहीं थमता दिखाई नहीं देता. यह फिल्म भी उसी सिलसिले की एक कड़ी है.

शंकर (मिथुन चक्रवर्ती) का भाई अशोक (सुमित सहगल) 'बिजनेस मैनेजमेंट की डिगरी प्राप्त कर के घर लौटता है, परंतु उसे नौकरी नहीं मिलती. एक बदमाश दारा (डैनी) अपने भाई की मौत का बदला शंकर से लेना चाहता है, अतः वह अशोक को तस्करी के रास्ते पर डाल देता है. शंकर अशोक को वापस शराफत की दुनिया में लाने में सफल तो हो जाता है, परंतु दारा व एक विधायक एकनाथ चौरसिया (कादर खान) के साथ जंग में अशोक मारा जाता है.

इस फिल्म में कहानी नाम की कोई चीज लगभग है ही नहीं. बेतरतीब घटनाओं का सिलसिला मात्र है यह फिल्म.

फिल्म में गरीबों द्वारा अमीरों को जी भर कर कोसा गया है. एक स्थान पर नायिका यहां तक कह देती है, "अगर आप लोगों को अपनी अमीरी का खुमार है तो हमें भी अपनी गरीबी का नशा है."

घटिया निर्देशन के बावजूद मिथुन निराश नहीं करता. मीनाक्षी शेषाद्रि ने एक बार फिर अकड़ी हुई संवाद अदायगी के साथ अभिनय किया है.

○ प्यार का कर्ज

निर्मात्री : सुषमा शिरोमणि
निर्देशक : के. बपाय्या
संगीत: लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार: मिथुन चक्रवर्ती, मीनाक्षी शेषाद्रि, नीलम, सोनम, कादर खान, विनोद मेहरा, शक्ति कपूर और धर्मे (विशेष भूमिका में).

प्यार का कर्ज एक औसत भावही मसाला फिल्म है, जिस में दो बड़े नाय



'प्यार का कर्ज' में मिथुन : परंपरागत नृत्य.

और तीन नायिकाएं हैं. पूरी फिल्म फ्लैशबैक में चलती है.

रविशंकर (मिथुन) एक गिटार वादक है जो डाक्टर नैना (मीनाक्षी शेषाद्रि) से प्यार करता है. राजपाल (रजा मुराद) एक आतंकवादी गिरोह का सदस्य है और एक राजदूत की हत्या करना चाहता है. नैना उस का यह प्रयास विफल कर देती है तो वह उस का अपहरण कर लेता है. वह उस पर किसी भी युवक से शादी करने का दबाव डालता है ताकि ठीक शादी वाले दिन वह उस राजदूत को खत्म कर सके. नैना को मजबूरी में रवि के दोस्त शाका (धर्मेंद्र) से शादी का नाटक करना पड़ता है. राजदूत की हत्या के प्रयास को शाका विफल कर देता है. रवि जब नैना और शाका को शादी के लिबास में देखता है तो उस का दिल टूट जाता है और वह दूर चला जाता है. उस की मुलाकात सीमा (नीलम) से होती है. दोनों में प्यार हो जाता है, फिर शादी हो जाती है. सीमा एक ब्लैकमेलर (शक्ति कपूर) से आतंकित है. वह ब्लैकमेलर सीमा तथा उस की बच्ची को मार डालता है. अब रवि को असलियत पता चलती है. वह ब्लैकमेलर को तो खत्म करता है, साथ ही राजपाल को भी मार डालता है. इस जंग में शाका भी मारा जाता है और रवि नैना का हाथ थाम लेता है.

फिल्म में दो गीत, एकदो सेट, थोड़ीबहुत कामेडी और आउटडोर शूटिंग में अच्छी फोटोग्राफी के अलावा ऐसा कुछ नहीं है जो दर्शकों को प्रभावित कर सके. निर्देशन सामान्य है तथा संवाद चालू. फिल्म में घटनाएं अधिक हैं. कहींकहीं एक घटना का दूसरी घटना से तालमेल नहीं बैठता.

अभिनय की दृष्टि से सभी कलाकार पुराने अंदाज में दिखाई देते हैं. मिथुन चक्रवर्ती ने इस फिल्म में एक बार फिर से दो नृत्य किए हैं. कादरखान और असरानी की कामेडी, कामेडी कम फूहड़पन अधिक लगती है. ऐसी कामेडी 'सी' क्लास दर्शकों को अवश्य पसंद आएगी. सोनम को सिर्फ अंग प्रदर्शन के लिए ही फिल्म में रखा गया है. मीनाक्षी और नीलम ने साधारण अभिनय किया है. धर्मेंद्र विशेष भूमिका में है. लगता है, उस के नाम को भुनाने के लिए ही उसे इस फिल्म में रखा गया है. फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. एक गीत 'नैना तेरे नैनों की गलियों में' अच्छा बन पड़ा है. ●

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

26, 162 सें.मी., डबल एम.ए. इतिहास, साईकोलोजी, एम.एड., डिप्लोमा मार्केटिंग मैनेजमेंट, स्लिम, लंबी, गोरी, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, प्रतिभावान, वैश्य विशनोई कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विवाह सामान्य. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 22 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.बी.बी.एस., इंटर्नशिप कर रही, मेधावी कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 22, 148 सें.मी., बी.ए., गृहकार्यदक्ष, सुशील, सुंदर, मंगली कन्या हेतु प. उत्तरप्रदेशीय, बिहार में स्थापित, शाकाहारी, निर्व्यसनी, आत्मनिर्भर, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, जैन, 156 सें.मी., स्नातकोत्तर, अत्यंत गोरी, इकहरी, स्मार्ट, प्रतिष्ठित कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह.लिखें: वि.नं. 6764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोत्र गोयल, 22, 163, एम.एससी. (गणित), एम.फिल. (गणित), रंग साफ, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु शिक्षित एवं प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6765, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 एवं 18 वर्षीया, गौरवर्ण, गृहकार्य निपुण, बारहवीं की छात्राएं, जाति स्वर्णकार, पिता मध्य प्रदेश में केंद्रीय सेवारत हेतु वर दहेज विहीन, उत्तम शादी, जाति, प्रांतबंधन नहीं. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, बी.ए. (आनर्स), साफ गेहुआं रंग, 157 सें.मी. लंबी, छरहरी, तीखे नाकनक्श, गृहविज्ञान, संगीत और कला में विशेष अभिरुचि वाली, स्वर्णकार कन्या के लिए सजातीय, योग्य वर चाहिए. इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, प्रतिष्ठित, उच्च व्यवसायी, अग्रवाल पारिवारीय, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., 42 किलो, स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक व्यक्तित्त्व, उच्च नक्षत्री (बृहस्पति केंद्रीय), एम.काम. फर्स्ट डिविजन, चार्टर्ड एकाउंटेंसी (इंटरमिडीयेट उत्तीर्ण) अध्ययनरत कन्या हेतु अति सुंदर, सुयोग्य, सजातीय (सिंहल गोत्र छोड़ कर) उच्च अधिकारी/प्रोफशनल/व्यवसायी वर चाहिए. वर्षांत तक बेहतरीन विवाह. विज्ञापन मात्र उत्तम चयन हेतु. इच्छुक जन्मकुंडली पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6776, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 19 वर्षीया, 155 सें.मी., बी.काम. (द्वितीय वर्ष) अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 160 सें.मी., एम.एससी., लेक्चरर, सुंदर, स्लिम, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, राजपूत, सरकारी अधिकारी की कन्या हेतु वायुसेना अधिकारी, डिफेंस आफीसर, पायलट क्लास वन को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6889, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा ब्राह्मण, 24 वर्षीया, 158 सें.मी., बी.ए., गौरवर्ण, गृहकार्य में कुशल कन्या हेतु सरकारी कर्मचारी, इंजीनियर, डाक्टर अथवा लेक्चरार वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. मध्य प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. जल्दी शादी. संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6890, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25 वर्षीया, 152 सें.मी., गेहुआं रंग, इकहरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवारीय कन्यार्थ सुशिक्षित, सजातीय, सेवारत वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6891, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, मंगली, 20, 150, एम.ए., कन्या हेतु सेवारत, मंगली वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6892, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सांवली, बी.ए. पास, महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. पारिवारिक जानकारी सहित पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 6893, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राधास्वामी परिवारीय ऋषिकेश (जि.) देहरादून निवासी, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए. प्रथम वर्ष, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, साधारण, सुशील, ब्राह्मण (भारद्वाज) कन्या हेतु सेवारत, व्यवसायरत, ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6894, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.ए. इतिहास, गेहुआं (साफ) रंग हेतु राजकीय सेवारत उपयुक्त वर. लिखें: वि.नं. 6895, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, राजपूत कन्या, एम.फिल (मनो.) सांवली,आकर्षक, गृहकार्य में अत्यंत दक्ष, हेतु वर जातिबंधन नहीं, प्रगतिशील परिवार. लिखें: वि.नं. 6896, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (बढ़ई), 21 वर्षीया, 160 सें.मी., बी.ए. बी.एड., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय सुयोग्य, सुशिक्षित, ग्रेजुएट/पोस्ट ग्रेजुएट, डाक्टर इंजीनियर, सेवारत वर चाहिए. पिता सीनियर आर्मी आफीसर/आर्मी आफीसर को वरीयता. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6897

सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित सारस्वत ब्राह्मण परिवारीय, 24, 163 सें.मी., एम.काम., गृहकार्यदक्ष एवं सुशील कन्या हेतु प्रतिष्ठित व्यवसायरत, शासकीय सेवारत, सुंदर एवं स्वस्थ वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6898, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 155 सें.मी., (अ.ज.) मध्यमवर्गीय परिवार, डा. (एम.डी.), कन्या हेतु डा. एम.डी./एम.एस. या केंद्रीय सिविल सेवा अधिकारी वर चाहिए. दहेज इच्छुक कृपया क्षमा करें. लिखें: वि.नं. 6899, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्री, 26 वर्षीया, 158., डिप्लोमा (मैकेनिकल), ए.एम.आई.ई., सरकारी सेवा, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. राजस्थान में कार्यरत को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6900, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25 वर्षीय, 157 सें.मी., एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ व्यवसायी, सी.ए. इंजीनियर, माहेश्वरी, संपन्न परिवारीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6901, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जादौन राजपूत, 24, 170, एम.ए., बी.एड., एम.फिल (अध्ययनरत), रंग साफ, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु व्यवसायरत या प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त, दहेजविरोधी वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6902, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 160 सें.मी., जायसवाल, गोरी, सुंदर, दसवीं तक पढ़ी, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6903, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 162, सनाढ्य ब्राह्मण, एम.एससी., एम.फिल., गौरवर्ण, अति सुंदर, मेधावी, पूना स्थित कन्या हेतु ब्राह्मण, इंजीनियर वर चाहिए. उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6904, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू (तैलिक वैश्य) राजस्थानी, शिक्षित परिवार, 23, 157, पोस्टग्रेजुएट, बी.एड., सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु अच्छी सर्विसशुदा, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. पिता, भाई राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 6905, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 20, 150 सें.मी., सभी परीक्षाएं उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण, पीएच.डी. अध्ययनरत, उत्तरप्रदेशीय, सुंदर, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, पिता यूनिवर्सिटी प्रोफेसर कन्यार्थ सजातीय अधिकारी, इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक या लेक्चरर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6906, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 159, स्मार्ट, सुंदर, एम.ए., बी.एड., एलएल.बी., अग्रवाल, दहेज कट्टर विरोधी, उच्चाकांक्षी, प्रगतिशील कन्यार्थ, स्मार्ट, उच्च शिक्षित अग्रवाल वर. लिखें: वि.नं. 6907, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 160, स्मार्ट, सुंदर, एम.ए., एलएल.बी., माथुर वैश्य, दहेजविरोधी, उच्चाकांक्षी, प्रगतिशील कन्यार्थ उच्च शिक्षित, वैश्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6908, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 153 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण, विधवा, निस्संतान, एम.ए., एम.एड., फर्स्ट डिविजन, डिग्री कालिज में अध्यापनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कन्यार्थ सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. प्राथमिकता सजातीय को. लिखें: वि.नं. 6909, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (ऐरन), 18 वर्षीया, 152 सें.मी., स्लिम, गृहकार्यदक्ष, मैट्रिक (प्रथम श्रेणी), सुंदर, सुशील, गौरवर्ण कन्या हेतु सजातीय वर (साधारण विवाह दहेज बिना) चाहिए. लिखें: वि.नं. 6910, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, ब्राह्मण, इंटरमीडिएट, कन्या हेतु आत्मनिर्भर वर चाहिए. धर्म, जातिबंधन नहीं, दहेज चाहने वाले क्षमा करें. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6911, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यमवर्गीय सक्सेना कायस्थ, 157, 25, एम.ए., बी.एड., कन्या हेतु सजातीय सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6912, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एससी., बी.एड., 24, 161, स्लिम, साफ रंग, आकर्षक नयननक्श, लेक्चरर, 2,750/- मासिक, माहेश्वरी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6913, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 25, 150, स्नातक, गोरी कन्या हेतु अधिकारी, बैंक, प्रशासनिक, शाकाहारी, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6914, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए., बी.एड., केंद्रीय विद्यालय अध्यापनरत, वेतन 2,020/- मासिक, सुंदर, सुशील, निरामिष, राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. दहेज अनिच्छुक, राजपत्रित अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6915, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव कायस्थ, 24, 163, बी.एससी., सुंदर, सांवली, सुशील, बिहार निवासी (पिता एस.डी.ओ.) कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य, आत्मनिर्भर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6916, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, कुर्मी, पब्लिक सेक्टर में जूनियर स्टेनोग्राफर, एम.ए., मासिक आय दो हजार, कन्या हेतु सजातीय (उत्तरप्रदेशीय), सरकारी सेवारत (कम से कम स्नातक), दहेजविरोधी, आदर्शवादी वर चाहिए. अतिशीघ्र एवं सादा विवाह. लिखें: वि.नं. 6917, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, क्षत्रिय (ठाकुर), अशिक्षित परंतु गौरवर्ण व समझदार कन्या हेतु दहेजविरोधी, सजातीय, स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6918.

सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 एवं 28 वर्षीया, कनौजिया (धोबी), सरकारी सेवारत हेतु सजातीय, सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6919, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अत्यधिक सुंदर, 22 वर्षीया, 160, ग्रेजुएट, नेशनल मेरिट स्कालरशिप होल्डर, पी.जी. डिप्लोमा (निर्यात) कोर्स अध्ययनरत, माहेश्वरी कन्यार्थ चार्टर्ड एकाउंटेंट, इंजीनियर, अधिकारी या व्यवसायी, मांगलिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6920, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश निवासी, गहलौत राजपूत कन्या 23, 157, एम.ए., एम.फिल., अति सुंदर, गौरवर्ण हेतु सजातीय वर चाहिए. लेक्चरार या अच्छे पद पर सरकारी कार्यरत को प्राथमिकता. दहेज के इच्छुक पत्रव्यवहार न करें. लिखें: वि.नं. 6921, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ताम्रकार, हैहयवंशी क्षत्रिय, मंगली कन्या, एम.ए. (इंगलिश), 155, 25, हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6922, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 157, 55, एम.ए., बी.एड., सुंदर, गोरी, कन्यार्थ मंगली वैश्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6923, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20½ वर्षीया, मैट्रिक, 152, गृहकार्यदक्ष, पंजाबी अरोड़ा कन्या हेतु वर चाहिए. बदलते मौसम में हलकी सांस की तकलीफ, छोटे परिवार वालों को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6924, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शालीन, सुसंस्कृत, मैढ, क्षत्रिय, 25, 150, एम.ए. (अंगरेजी), बी.एड., तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 6925, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव कन्या, 24 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.एससी. गणित, बी. म्यूजिक, डिप्लोमा बिजनेस मैनेजमेंट, स्लिम, सुंदर, गौरवर्ण परिवार, राजपत्रित अधिकारी हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6926, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 26, 160, सांवला रंग, मैकेनिकल में 66.6% डिप्लोमा, तथा डिगरी कर ली, आई.टी.आई. में कार्यरत कन्या हेतु स्वजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6927, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 155 सें.मी., एम.ए., अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष, स्लिम, सुशील, गोरी, गौड़ ब्राह्मण कन्या हेतु सरकारी सेवारत ब्राह्मण वर चाहिए. इंजी. व अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6928, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरी, सुंदर, स्लिम, एम.ए., 22, 155 सें.मी., कायस्थ कन्यार्थ वर. लिखें: वि.नं. 6929, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, जायसवाल, 150 सें.मी., ग्रेजुएट, गृहकार्य में दक्ष, सुशील कन्या हेतु मध्यमवर्गीय, जायसवाल या स्वजातीय योग्य वर चाहिए. संपूर्ण विवरण शीघ्र लिखें: वि.नं. 6930, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 155 सें.मी., सुंदर, जाट कन्या, एम.ए. फाइनल अध्ययनरत, हेतु वर. इंजीनियर, डाक्टर, राजपत्रित अधिकारी, मुरादाबाद, बिजनौर निवासी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6931, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती ब्राह्मण, 31 वर्षीया, 148 सें.मी., 3,000/- रुपए, बैंक सेवारत, कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6932, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर, 23 वर्षीया, 163 सें.मी., बिहार निवासी, स्नातक, सुशील, गृहकार्यदक्ष कायस्थ कन्यार्थ सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6933, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ठाकुर, 25 वर्षीया, ग्रेजुएट, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. पिता उच्च अधिकारी, विवाह शीघ्र एवं अति उत्तम. लिखें: वि.नं. 6934, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 23, 152, एम.ए. (फाइनल), बी.एड., अति सुंदर, प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूल अध्यापिका दिल्लीवासी हेतु वर. लिखें: वि.नं. 6935, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सुंदर, एम.ए., बी.एड., 27 वर्षीया, 150 सें.मी., गौरवर्ण कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6936, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण, कन्या 32, 155 सें.मी., एम.ए. (डबल), बी.एड., लेक्चरार, कार्यरत, उत्तर प्रदेश इंटरमीडिएट महाविद्यालय, पिता उद्योगपति, हेतु सुशिक्षित, प्रतिष्ठित वर चाहिए. शीघ्र विवाह लिखें: वि.नं. 6937, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, कुमरे गोत्रीय, गोंड अ./ज./जा., म.प्र. निवासी, तृतीय वर्ष बी.ए. अध्ययनरत हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6938, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्री स्वर्णकार, 23, 160, एम.ए., बी.एड., गौरवर्णीय, सुंदर, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. शीघ्र लिखें: वि.नं. 6939, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, 158 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, उत्तरप्रदेशीय, एम.ए. (अर्थशास्त्र), सरकारी सेवारत, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु सजातीय सुयोग्य उत्तरप्रदेशीय, दहेजविरोधी वर चाहिए. आत्मनिर्भर नवयुवक स्वयं लिखें: वि.नं. 6940, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जयसवाल, एम.ए., पीएच.डी., लेक्चरर, 31, 157, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6941, सरिता, नई दिल्ली-

110055.

23 वर्षीया, 152 सें.मी., तलाकशुदा, प्रतिष्ठित सिंधी, सुशील, सुंदर, गृहकार्य में अति निपुण कन्या हेतु प्रतिष्ठित सिंधी परिवारीय, कुंआरा, निस्संतान, तलाकशुदा वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6942, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सक्सेना, सुंदर, स्मार्ट, स्लिम, गोरी, एम.एससी., कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6943, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 156 सें.मी., गेहुआं रंग, श्रीवास्तव, एम.ए. कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, कार्यरत, बिहार निवासी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7000, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 156 सें.मी., कायस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, स्नातक, निस्संतान, विधवा हेतु सुयोग्य, रूढिमुक्त वर. लिखें: वि.नं. 7001, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 22 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.ए. (राजनीति शास्त्र), यू.पी. निवासी, गौरवर्ण, बिंदल गोत्र, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7002, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूमिहार ब्राह्मण, 21, 165, बी.ए. पास, गौरवर्ण, सुंदर, स्मार्ट कन्या हेतु उपयुक्त पात्र लिखें: वि.नं. 7003, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, मुसलिम सुन्नी, बी.ए., बी.एड., केंद्रीय सरकार सेवारत एवं 24 वर्षीया, बी.ए., केंद्रीय सरकार, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्याओं हेतु सुयोग्य, सेवारत सुव्यवस्थित वर चाहिए. उत्तर प्रदेश निवासी प्रथम विचारणीय. शादी बहुत जल्द. लिखें: वि.नं. 7004, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरी, स्लिम, घरेलू, गुप्ता (गोयल), 26, 167, एम.ए. कन्या हेतु लंबा, स्नातक, वैश्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. पिता तथा भाई बैंक अधिकारी. लिखें: वि.नं. 7005, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिकरवार क्षत्रिय, 21 और 23, 155 सें.मी., ग्रेजुएट, अति सुंदर, गौरवर्ण, मृदुभाषी एवं सुशील कन्याओं हेतु उच्च सेवारत/व्यवसायरत, सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 7006, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीय ब्राह्मण, 29, 152 सें.मी., एम.एससी., एम.एड., गौरांग, पूर्वी उत्तरप्रदेशीय, सरकारी सेवारत, 3,000/-, शिक्षित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर लिखें: वि.नं. 7007, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप, कहार धीवर, 25, 150, एम.काम., पब्लिक स्कूल अध्यापिका, दिल्लीवासी, गेहुआं, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7008, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 22, 155 सें.मी., एम.एससी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु स्वजातीय, इंजीनियर, डाक्टर या समकक्ष अधिकारी, सुयोग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 7009, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत वसिष्ठ गोत्र, स्वस्थ, सुघड़, गृहकार्य में कुशल, एम.ए., बी.ए., आयु 24, 22, लंबाई, 160, 158, दो सगी बहनों के लिए योग्य वर. जातिबंधन, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 7010, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, एम.ए., 25, 160, कार्यरत कन्या हेतु सनाढ्य या गौड़ ब्राह्मण वर चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 7011, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए., गर्ग गोत्र अग्रवाल, सुंदर कन्या, गृहविज्ञान, पाककला, सिलाई, कढ़ाई आदि गृहकार्यों में दक्ष, पी.सी.एस. परीक्षा दी जा चुकी, परीक्षाफल अभी नहीं. आई.ए.एस. परीक्षा आवेदित, कुशाग्र बुद्धि, सामाजिक रीतिरिवाज के अनुसार विवाह हेतु योग्य वर चाहिए. जन्मपत्रिका सहित पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 7012, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 21, 157, एम.ए., बी.एड., रंग साफ, स्लिम, सुंदर कन्या हेतु सरकारी सेवारत या इंजीनियर, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7013, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 23, 163, बी.ए. अध्ययनरत, गोरी, दुबलीपतली, मृदुभाषी, अल्प भाषी, सुंदर, पूर्णरूपेण घरेलू कन्या वास्ते किसी प्रांत के, कोई ब्राह्मण, ब्राह्मणोचित संस्कारमय परिवार का, पुलिस, सेना के किसी अंग, सिविल, फारेस्ट, बैंक, कालिज, ख्यातिप्राप्त लिमिटेड कंसर्न में अधिकारी या समकक्ष वेतनवालों, दहेज विरोधी लड़का चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी, शीघ्र शादी. लिखें: वि.नं. 7014, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 155, मैट्रिक, अति सुंदर, गृहकार्य निपुण, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 7015, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 163 सें.मी., 2,200/-, बैंक कार्यरत, निर्दोष तलाकशुदा, आत्मनिर्भर, स्वतंत्र, ब्राह्मण कन्यार्थ कार्यरत, कोर्ट मैरिज को सहमत, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. सविवरण लिखें: वि.नं. 7016, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24½, 160, एम.ए., गेहुआं रंग, सुशील, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, उत्तम परिवारीय कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य, इंजीनियर, डाक्टर, सरकारी आफीसर वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 7017, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई, 20 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.ए., सुंदर, गोरा रंग, परिवारीय, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुंदर वर चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं.

7018, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

मैढ राजपूत, 21 वर्षीय, निजी व्यवसायरत, हर तरह से सुविधासंपन्न लेकिन चलनेफिरने में असमर्थ, रंग साफ, युवक हेतु वधू चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 29, 170, अंगरेजी माध्यम शिक्षित, आय चार अंकीय, व्यवसायी, सुंदर, संपन्न परिवार, पिता अवकाश प्राप्त केंद्रीय सरकार के एवं भाई बैंक में प्रथम श्रेणी अधिकारी, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. उत्तम तथा शीघ्र विवाह. दहेज तथा जातिबंधन नहीं, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6817, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पुत्रवधू रूप में दो प्यारी सी बेटियों की तलाश है. कन्याएं इज्जतदार (चाहे गरीब) परिवार की, सुंदर, समझदार, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक विचारों वाली होनी चाहिए. उचित कन्याएं मिलते ही साधारण विवाह तीन कपड़ों में शीघ्र. अमरीका में बसे, हिंदी एवं पंजाबी भाषी, देहलवी, पूर्णतया भारतीय विचारधारा वाले, बहुत प्यार देने वाले, संपन्न परिवार में मातापिता एवं हैंडसम, कम्प्यूटर प्रोफेशनल, 32, 178 सें.मी., एवं 26, 180 सें.मी., दो पुत्र, कोई बंधन नहीं. कन्या मुख्य, प्रथम बार संपूर्ण पारिवारिक जानकारी, जन्मतिथि, ताजा फोटो आवश्यक. इच्छुक परिवार अथवा कन्याएं निस्संकोच, विश्वास के साथ लिखें: DEAR PARENTS, BOX 16363, ATLANTA, GA 30321, USA.

नेत्रहीन युवक, 27, 157 सें.मी., एम.ए., संगीत शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय (पंजाब में), वेतन, 1,700/- हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. मामूली विकलांग, निस्संतान तलाकशुदा, विधवाएं भी. जाति, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 6818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय सेवारत, 27, 168, 1, 600/-, एम.ए., शाक्य कुलीन, नेत्रहीन युवक हेतु मृदुभाषी, विचारशील, साक्षर वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6819, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 35, 180, 2,500/-, बी.ए., एलएल.बी., हरियाणा सरकार में सेवारत, स्थाई संपत्ति, हरियाणवी युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलमान बैचलर हेतु कैरियर+ गृहस्थाकांक्षी सवर्ण, आकर्षक, 30 वर्षीया, अध्यापिका (गणित/विज्ञान). स्वैच्छिक गैरमुसलिम स्वीकारणीय. लिखें: वि.नं. 6825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 2, 600/-, 35 वर्षीय, स्नातकोत्तर, माध्यमिक शिक्षक हेतु दहेज, बंधनादि मुक्त, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 28, 168, गोरा रंग, सिविल इंजीनियर, सरकारी सेवारत युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. महाराष्ट्रवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, 28, 175, 5,000/-, उत्तरप्रदेशीय, व्यापारी/मोटर मैकेनिक को दहेज विरोधी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. सैनिक परिवारों को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, गुप्ता, 36 वर्षीय, विधुर, चार बच्चे, लड़की 15, 13, 9, लड़का 11 वर्ष, लखनऊ निवासी, निर्व्यसनी, संभ्रांत परिवार, निजी आवास, कार, टेलीफोन, व्यवसायी, आय पांच अंकीय, हेतु घरेलू, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. कुंआरी, निस्संतान विधवा, तलाकशुदा, संतानोत्पत्ति असमर्थ तथा भविष्य में संतान अनिच्छुक चाहिए. प्राथमिकता संतानोत्पत्ति असमर्थ तथा भविष्य में संतान अनिच्छुक को/दहेज, जातिबंधन नहीं, निस्संकोच लिखें: वि.नं. 6836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय राजपूत (ठाकुर), बिहारवासी, 39 वर्षीय, स्नातक, साईंस एवं ला, आकर्षक, गेहुआं रंग, 167 सेंमी., सरकारी पदाधिकारी, मासिक आय 6,800/-, शहर एवं देहात में मकान, जमीन, वाहन, पूर्व पत्नी की अक्षमता के चलते निस्संतान विधुर हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, शिक्षित, पारिवारिक, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज रहित, शीघ्र, साधारण विवाह मात्यार्पण से मंदिर में, प्रथम बार ही पूर्ण विवरण सहित लिखें, विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. लिखें: वि.नं. 6837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 167 सें.मी., अनुसूचित जाति, मासिक आय चार अंकों में, विदेश में कार्यरत, विधुर हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, स्टाफ नर्स, अध्यापिका, सरकारी नौकरीशुदा, 30-35 वर्ष तक की विधवा, निस्संतान तलाकशुदा, बच्चों में रुचि रखने वाली, सजातीय ही जीवनसंगिनी चाहिए. दिल्ली, राजस्थान, हरियाणावासी को प्राथमिकता. लिखें: THE ADVERTISER, P.O. BOX—35790, JALAN, B.B. ALI, SULTANATE OF OMAN.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., ग्यारहवीं पास, निजी व्यवसाय, आय 4, 000/-, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं, साधारण शादी. लिखें: वि.नं. 6944, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½', 165, मांगलिक, भारद्वाज ब्राह्मण, एम.बी.बी.एस. डाक्टर हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर, गौरवर्ण कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6945, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 25, 170 सें.मी., बी.ई., एम.बी.ए., प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान में कार्यरत, स्मार्ट, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए.

लिखें: वि.नं. 6946, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 166, बी.ए., शाकाहारी, प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय, हैदराबाद निवासी, व्यवसायी, 5, 000/- मासिक, हेतु स्लिम, सुंदर, स्मार्ट, गोरी, स्नातिका वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6947, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 26, बी.ए., पक्की सर्विस, वेतन 2,300/-, प्रतिमाह, युवक हेतु सुंदर, गोरी, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6948, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 39 वर्षीय, विधुर, 170 सें.मी., निजी मकान, ज्वैलरी शाप (एक लड़का 11 वर्षीय, एक लड़की 10 वर्षीया), हेतु सुशिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. अग्रवाल, माहेश्वरी, गुजराती जैन मान्य, शीघ्र विवाह, पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6949, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, 70 कि.ग्रा., 150 सें.मी., अविवाहित युवक हेतु योग्य जीवनसाथी, दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6950, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिष्ठित, संपन्न, सुशिक्षित परिवारीय, बी.ई. (सिविल), एम.एस. (इंजीनियरिंग) अमरीका से कर के वहीं सरकारी इंजीनियरिंग पद पर कार्यरत, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित (इंजीनियर/डाक्टर/ विज्ञान स्नातक) वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 6951, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 170, 2,000/-, सरकारी कंपनी में सेवारत, गूंगे, युवक हेतु वधू चाहिए. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6952, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, सिविल इंजीनियर, 27, 170, शारजाह (यू.ए.ई.) में कार्यरत हेतु सजातीय, सुंदर, आर्किटेक्ट, डेंटल डाक्टर/साइंस/अंगरेजी में पोस्ट-ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6953, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली (अ.जा), 25, 158, एकसाइज इंस्पेक्टर, हेतु स्नातक, गोरी, सुंदर वधू चाहिए. टीचर को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6954, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई हिंदू, 29 वर्षीय, 160 सें.मी., एलएल.बी., क्लर्क हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6955, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, 25, 172 सें.मी., ग्रेजुएट, वेतन 2, 000/-, केंद्रीय कार्यरत युवक हेतु सुंदर, योग्य, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6956, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 47, माहेश्वरी, चार बच्चे, निजी व्यवसाय, हेतु घरेलू, धार्मिक, विचारवान, संभ्रांत परिवारीय, संतानोत्पत्ति अनिच्छुक वधू चाहिए. निस्संतान विधवा मान्य. लिखें: वि.नं. 6957, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 159, 3,500/-, राजपत्रित अधिकारी हेतु आकर्षक, सुशिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. पिता राज्य सेवा में उच्च पद पर, पारिवारिक उद्योग व्यवसाय भी है. लिखें: वि.नं. 6958, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 26, 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस., एम.डी. (अध्ययनरत), हेतु अति सुंदर कन्या चाहिए. मेडिको को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6959, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25, 170 सें.मी., सुंदर, बी.ए., एलएल.बी., अत्यंत सुखी, संपन्न परिवार, निजी उद्योग, मासिक आय पांच अंकीय. बिहार निवासी हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6960, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 162, 1,800/-, डबल पोस्ट ग्रेजुएट (कानवेंट) जबलपुर, केंद्र सरकार लिपिक, मोना पंजाबी ब्राह्मण युवक हेतु वधू. कार्यरत को प्राथमिकता. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6961, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 28, 155, इंटरमीडिएट, पियरलेस एजेंट, हेतु गोरी, सुंदर, मैट्रिक कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6962, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 32, 183, 4,000/-, एम.एससी., बैंक आफिसर हेतु गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6963, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 180, 1,700/-, बैंक कार्यरत, स्नातक, निर्व्यसनी, साफ रंग, स्वस्थ, सुंदर, पटना निवासी, अग्रवाल युवक हेतु सुंदर, गुणवती वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6964, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदी भाषी, गुजरात निवासी, एकमात्र संतान, फाइनल सी.ए., 27, 175, 3,000/- मासिक आय, मातापिता उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च पदों पर, खानदानी व उच्च मध्य वर्ग, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण युवक हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित, व्यापक दृष्टिकोण वाली, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6965, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी सुखरैन, 27, 175, इंटर, आई.टी.आई., सरकारी सेवा में नियोजित युवक हेतु सुंदर, सुशील, घरेलू कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6966, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, बंगाली, कायस्थ, 171, ड्राइवर, आय 3,000/-, हेतु सुंदर वधू चाहिए. जातिबंधन और दहेज रहित. लिखें: वि.नं. 6967, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 172 सें.मी., 65 कि.ग्रा., रु. 2,000/-, मैकेनिकल डिप्लोमा धारक, सेवारत, व्यसनहीन हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, पंजाबी कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6968, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, इंटर साइंस, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., औषधी निर्माण वाराणसी तथा व्यापार बिहार, युवकार्थ वधू. लिखें: वि.नं. 6969, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 158, निस्संतान विधुर, सेवारत, इंजीनियर, चमार हेतु सुंदर, इकहरी, आकर्षक, उच्च शिक्षित, सेवारत वधू चाहिए. विधवा, तलाकशुदा विचारणीय. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6970, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, सुंदर, बी.ए., ब्राह्मण नवयुवक, प्रतिष्ठित परिवार, अपना कारोबार, आय चार अंकों में, हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6971, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जयपुर निवासी, ब्राह्मण, 40, 166 सें.मी., शिक्षित, स्वस्थ, अविवाहित, स्वतंत्र, व्यवसायी, अच्छा परिवार (एक पैर थोड़ा पोलियो ग्रस्त परंतु चलने में बाधा नहीं), हेतु सुशील, शिक्षित युवती चाहिए. निस्संतान परित्यक्ता भी विचारणीय, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6972, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, उद्योगरत, माहेश्वरी विधुर के लिए माहेश्वरी/अग्रवाल/ओसवाल, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष जीवसंगिनी चाहिए. युवक के पूर्व विवाह से एक चार वर्षीय संतान भी है. योग्य वर के इच्छुक शीघ्रातिशीघ्र पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 6973, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौरवर्णीय, सुंदर, सुयोग्य, स्मार्ट, राजपूत, लंबाई 171, निजी व्यवसाय, मासिक आय 5 अंकों में, 24 वर्षीय वर हेतु सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6974, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, मलहोत्रा (खत्री) लड़का, एम.ए., 170, अपना कोचिंग कालिज, 5,000/- मासिक, हेतु पढ़ीलिखी, सुंदर कन्या. लिखें: वि.नं. 6975, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन ब्राह्मण, 29, 173, 3,100/-, एम.ए., सरकारी अध्यापक, निजी संपत्ति, हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6976, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसायी परिवारीय युवक, बी.काम. जैन, उम्र 25, एक पांव पूरा नहीं मुड़ता चाल में फर्क नहीं, ऐसी कन्या को अपनाने का इच्छुक जिस के अभिभावक घरजंवाई के रूप में स्वीकार कर सकें, विकलांग भी स्वीकार्य, केवल व्यवसायी एवं उद्यमी ही लिखें: वि.नं. 6977, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, माहेश्वरी परिवार, 26 वर्षीय, 173, बी.काम (आनर्स), बंबई, आसाम में निजी व्यवसायरत, सुविधासंपन्न युवक हेतु सजातीय, सुंदर, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6978, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रचलित विवाह औपचारिकताओं के प्रति अनास्थावान, पंजीकरण हेतु तत्पर, हरियाण महाविद्यालीय वाणिज्य प्राध्यापक, (29, 170 3,000/-,) संग सुशिक्षित, कामकाजी, नास्तिक, हिंदी ज्ञाता, मांसाहारी, रूढ़िमुक्त, उदार, प्रबुद्ध, निस्संकोची चित्ताकर्षक, स्वतंत्र विचार संपन्न, अत्याधुनिक युवतियां समस्त परंपरागत बंधनविहीन मित्रवत अनुकूलता, मूल्यांकनार्थ स्वयं लिखें: वि.नं. 6979 सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½ वर्षीय, 165, एम.ए., रंग गेहुआं साफ आकर्षक व्यक्तित्व, मासिक आय 4,000/-, निजी संपत्ति व जमीन वाले ठाकुर (क्षत्रिय) युवक हेतु सुंदर सुशील, आकर्षक गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू चाहिए जाति व दहेजबंधन नगण्य. लिखें: वि.नं. 6980 सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (विश्वकर्मा) परिवारीय, 27 वर्षीय मैट्रिक, निजी व्यवसाय राजस्थान, मूल निवासी उत्त प्रदेश, हेतु वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें वि.नं. 6981, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूतपूर्व फौजी अफसर, अब मेडिको, 41 वर्ष 181 सें.मी. लंबाई, स्वस्थ, हंसमुख स्वभाव, को आवश्यकता है ऐसी युवती की जो सर्वप्रथम दोस्त सुशील, स्वस्थ, स्वभाव से सुंदर, मृदुभाषी, गृहकार्य दक्ष, सेवा भावना, प्रेमसहानुभूति रखने वाली, साहसी निस्संकोची, संकीर्ण, धार्मिक रूढ़िवादी विचारों मुक्त, बाल लंबे, थोड़ी अंगरेजी भाषा का ज्ञान हो त अच्छा है. गरीब, बेसहारा अवश्य पत्रव्यवहार करें युवती स्वयं पत्रव्यवहार करे. RAJA SHARMA P.O. BOX 8175, STN F, EDMONTON ALTA CANADA, T6H4PI.

27, 163, खटीक, राष्ट्रीयकृत बैंक कार्यर युवक हेतु सरकारी कार्यरत, दिल्ली निवासी व चाहिए. लिखें: वि.नं. 6982, सरिता, नई दिल्ली 110055.

यादव, अविवाहित युवक, 38, 160, 2,700/ एम.ए., एलएल.बी., केंद्रीय सरकार में सहा... सुयोग्य वधू. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 69.. सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 27 वर्षीय, 158 सें.मी., 62 कि.ग्रा मथुरा निवासी, मर्चेंट नेवी अधिकारी, 25,000/-, हे 22-24 वर्षीया, सुशिक्षित परिवार की स्नातक व चाहिए. कानवेंट शिक्षित को वरीयता. दहेज नहीं लिखें: वि.नं. 6984, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25, 170, बैंक में प्रोबेशनरी अधिकार सुंदर, स्वस्थ युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित कन चाहिए. जाति कोई बंधन नहीं. प्रथम बार सविवर लिखें: वि.नं. 6985, सरिता, नई दिल्ली-110055

28 वर्षीय, रोमन कैथोलिक, 170, स्नात निजी व्यवसाय, मासिक आय 5,000/- से अधि गौरवर्ण युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन चाहिए. लिखें: वि.नं. 6986, सरिता, नई दिल्ल

110055.

13 वर्ष से मिड्लईस्ट में सेवारत, सुन्नी मुसलिम, 42 वर्षीय, 185 सें.मी., स्मार्ट, इलेक्ट्रोनिकलटेक्नीशियन, आय मासिक पांच अंकों में, शादीशुदा, पहली पत्नी से संतान लाभ विहीन, धार्मिक नियमों मुताबिक, इंशाअल्लाह हर तरह से दो पत्नियों के साथ संपूर्ण न्याय करने में समर्थ, संतान प्राप्ति की उम्मीद में 30 वर्ष से कम आयु वाली मेच्युअर्ड, परेजगार, पाकदामन कन्या संपूर्ण विवरण सहित लिखें; हाफीजाए-कुरान विधवा या नव मुस्लमा को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6987, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश निवासी, श्रीवास्तव, 26, 180 सें.मी., साइंस स्नातक, डी.पी.एड., निजी दुकान, मकान, फोन, कार, आयकर दाता, व्यवसायी, हेतु अति सुंदर, गौरवर्ण, सुशिक्षित कन्या चाहिए. मेडिकल अध्ययनरत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6988, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 170, सरयूपारीय ब्राह्मण, कश्यप गोत्र, बी.काम., केंद्रीय वेतनमान में अध्यापक पद पर कार्यरत, मासिक वर्तमान आय 2,200/-, स्वस्थ, गौरवर्ण युवक हेतु सजातीय, ट्रेंड ग्रेजुएट, एम.ए., एम. ए.सी., अति सुंदर, सुशील, कुलीन, अविवाहित कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 6989, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 161, 2,200/-, राजस्थानी नामदेववंशी (जोशी), अंगरेजी शिक्षक (केंद्रीय विद्यालय) हेतु सुशिक्षित, आकर्षक कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6990, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.ए., स्मार्ट, प्रतिष्ठित, गौड़ ब्राह्मण, उच्च व्यवसायी युवक हेतु अति सुंदर, सजातीय, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6991, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू युवक, 22, 183, 5,000/-, धनी परिवार, अपना मकान, अनुशासित, स्वस्थ, संगीत में पारदर्शी, लेकिन जन्म से एक आंख, हेतु अच्छी स्वभाव की आकर्षक कन्या, मामूली विकलांग भी स्वीकार्य. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6992, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई, 29 वर्षीय, 175 सें.मी., एम.एससी., स्टेट बैंक सेवारत, इकलौता पुत्र, स्वयं का बंगला, हेतु सुंदर वधू चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 7019, सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] केंद्रीय कर्मचारी, 52, मासिक आय 2,500/-, एवं निजीघर, हेतु 40-45 वर्षीया, विधवा या परित्यकता जो बेसहारा, निस्संतान एवं शाकाहारी हो, जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7020, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, 35 वर्षीय, गौतम ब्राह्मण, विधुर, बैंक एकाउंटेंट हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. पूर्व पत्नी से 3 बच्चे, बड़ी बेटी 10 वर्ष की. गौतम कन्या को वरीयता, अन्य ब्राह्मण विचारणीय. लिखें: वि.नं. 7021, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 180, सुदर्शन, कार्यरत, डिप्लोमा इंजीनियर हेतु सजातीय, ऊंची, गोरी, अधिकतम बाइस वर्षीया, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 7022, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 173, बी.ई., एम.बी.ए., स्वस्थ, सुंदर युवक हेतु इंजीनियर, डिग्रीधारी कन्या पक्षवाले जन्मकुंडली सविवरण लिखें: वि.नं. 7023, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन भाइयों 27, 176 व 24, 168, ग्रेजुएट, सुंदर, स्वस्थ, सुसंपन्न, उच्चस्तरीय व्यापार, मासिक पांच अंकीय आय, समस्त आधुनिक सुविधाएं, अन्य जायदाद, हेतु असामान्य सुंदर, जैन/अग्रवाल, मंगली/नानमंगली कन्याएं. लिखें: वि.नं. 7024, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, मांगलिक, 27 वर्षीय, 180 सें.मी., ग्रेजुएट, कलकत्ता में व्यवसायरत, मध्यमवर्गीय, आमिष, निरामिष, छोटा परिवार, स्मार्ट, सुंदर, श्याम वर्ण, व्यवसायी के एकमात्र पुत्र के लिए वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. गोरी, सुंदर, पढ़ीलिखी, गृहकार्यदक्ष, मांगलिक हो या न हो, जन्मपत्री के साथ प्रथम बार में पूर्ण विवरण साथ लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन वास्ते, जायसवाल को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 7025, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (महरा-कहार-धीवर), इंजीनियर (मैकेनिकल डिप्लोमा), 26, 165, 3,000/- एवं बी.काम., 24, 170, 6,000/-, दिल्ली निवासी, सम्माननीय परिवार, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधुएं चाहिए. लिखें: वि.नं. 7026, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, अति संपन्न परिवारीय, 27,166, शिक्षित, रंग साफ, श्रेष्ठ खानदान, सुव्यवस्थित व्यवसाय, अच्छी मासिक आय चार अंकीय एवं प्रापर्टी वाले स्मार्ट नवयुवक हेतु गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7027, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 170, 1,200/-, बी.काम., प्राइवेट नौकरी, सदाचारी ब्राह्मण युवक हेतु वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7028, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42, 3,000/-, केंद्रीय कार्यरत, विधि स्नातक, तलाकशुदा (एक 16 वर्षीय पुत्र साथ), शाकाहारी हेतु वधू चाहिए. सीधीसादी, मृदुभाषी, शाकाहारी, आत्मविश्वासी, विधवा, तलाकशुदा, शिक्षित, बेसहारा, स्वयं निर्णायिका को प्राथमिकता. जाति, प्रांत, दहेजबंधन नहीं. बिना खर्चे की शादी. लिखें: वि.नं. 7029, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 168, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बी.टेक., असिस्टेंट इंजीनियर (राजपत्रित), उत्तर प्रदेश (पिता राजपत्रित, प्रतिष्ठित परिवार) युवकार्थ, अति सुंदर वधू. लिखें: वि.नं. 7030, सरिता, नई दिल्ली-

110055.

निगम कायस्थ, झांसी मंडल निवासी, एम.ए., 26 वर्षीय, सेवारत, आय 1,500/-, हेतु शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 7031, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25, 168, 3,000/-, बी.काम., स्मार्ट युवक के लिए सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 7032, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सौम्य, शालीन, संस्कारित, न्यायाधीश युवक, आंशिक विकलांग, दाहिना पांव पोलियो ग्रस्त, 25, 161, 3,200/-, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7033, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

26½, 152 सें.मी., 3,300/-, गोरी, सुंदर, गृहकार्य कुशल, मिलिट्री नर्सिंग में लेफ्टीनेंट कन्या एवं 25½, 165 सें.मी., 2,200/-, रेलवे सर्विस, डिग्रीधारी, आकर्षक, युवक हेतु योग्य, पंजाबी खत्री, कार्यरत वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6993, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (तोमर ठाकुर), म.प्र. निवासी, 29, 160, बी.ए., गौरवर्ण, आकर्षक एवं गृहकार्य में दक्ष बहन हेतु सुयोग्य, शिक्षित, सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए एवं भाई 31, 168, 3,500/-, इंजीनियर बी.ई. (सिविल), सरकारी सेवारत हेतु सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए. एक ही परिवार से संबंध स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6994, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 25 वर्षीया, 164 सें.मी., बी.एससी. (आनर्स), कन्या एवं भाई 27 वर्षीय, 175 सें.मी., बी.काम., केंद्रीय सेवा कार्यरत (2,600/-), दोनों कानवेंट शिक्षित हेतु सुयोग्य वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6995, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता : 4.50 रु. प्रति शब्द
वूमंस ईरा : 2.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वूमंस ईरा : 5.50 रु. प्रति शब्द.

अन्य व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर सरिता में 7.00 रु. प्रति शब्द है, तथा वमूंस ईरा में 4.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 1.50 रु. अतिरिक्त यानी 8.50 रु. प्रति शब्द होगा.

धनराशि अग्रिम आने पर ही आप का विज्ञापन प्रकाशित किया जा सकेगा.

विज्ञापन की कटिंग/कटिंग्स विज्ञापन प्रकाशित होने के पश्चात भेजी जाएंगी.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें :

मुख्य विज्ञापन कार्यालय
दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.
फोन नं.-3321313.

गोद विज्ञापन

निस्संतान राजस्थानी युवा दंपती (राष्ट्रीयकृत बैंक अधिकारी, आय 40,000) को एक वर्ष से छोटा, स्वस्थ, सुंदर, लावारिस बालक गोद चाहिए. आप के क्षेत्र में जब भी ऐसा बालक मिले, तुरंत लिखें: पत्राचार गोपनीय. इच्छुक अनाथालय, स्वयंसेवी संस्थाएं लिखें: वि.नं. 6996, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य दंपती 2 साल तक का स्वस्थ, सुंदर, गोरा लड़का गोद चाहते है. अनाथालय भी लिखें: वि.नं. 6997, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण युवक, 23, 164, बी.एससी. अध्ययनरत, उद्योगपति, उच्चाधिकारी को गोद का इच्छुक. लिखें: वि.नं. 6998, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

दिल्ली में एक्ससर्विसमैन पंजाबी अरोड़ा, विधुर को गृहकार्य हेतु महिला चाहिए. लिखें: वि.नं. 6999, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर, अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, जिन के बाई और सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 50/- वी.पी.पी द्वारा (डाक खर्च अलग) कुलदीप सिंह, 32, दि माल अमृतसर-143017.

मेडिकल

प्लास्टिक/कासमेटिक शल्य चिकित्सा केंद्र, 11 ए/6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली, कासमेटिक शल्य चिकित्सा हेतु कृपया संपर्क करें. दूरभाष 585802.

सेहत से जुड़ी कुछ दिल की बातें.

ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड ऑइल.
स्वाद और सेहत का एकदम सही मेल.

जरा सोचिए आपके पति, हर समय अपने काम में जी जान से लगे हुए, रोज की उलझनों से कैसे निपटते रहते हैं. उनकी ये सारी मेहनत है आपके और आपके परिवार के लिए.



आप जानती हैं, इतनी मेहनत का दिल पर क्या असर होता है ? पर अब गौर करने की बात ये है कि आप क्या करें जिससे आपके पति हमेशा खुश और तन्दुरुस्त रहें.

अच्छी सेहत के लिए अच्छा क्या है ?

वैज्ञानिक खोजबीन से ये पता चला है कि अन्सैचुरेटिड फ़ैटी ऐसिड्ज़ - दोनों, मोनो और पॉली - कॉलस्ट्रॉल पर रोकथाम रखने में मदद करते हैं. ये, पकाने के बहुत से तेलों में होते हैं. पर, सभी तेलों में से सिर्फ़ सोया ऑइल में ही सही तालमेल है.



ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल में सैचुरेटिड फ़ैट्स कम और अन्सैचुरेटिड फ़ैट्स ज़्यादा हैं. उसे बनाने वाले हैं ब्रिटैनिया, यानि ये १००% शुद्ध है. तभी तो इसमें पका खाना, दिल की खूबी को बनाए रखता है.... और आपके परिवार की सेहत को.

व्हाइटल सोया रिफ़ाइन्ड ऑइल

अन्सैचुरेटिड फ़ैट्स	मोनोअन्सैचुरेटिड फ़ैट्स	पॉलीअन्सैचुरेटिड फ़ैट्स
८५%	२२.८%	५७.८%

वो स्वाद जो पूरे परिवार को भाए.

ज़्यादातर लोगों के मन में ये बात बैठ गई है कि खाने को अगर पौष्टिक बनाया जाए तो वो स्वादिष्ट नहीं रह पाएगा. ब्रिटैनिया को इस बात पर बहुत आश्चर्य होता है : व्हाइटल ऑइल इतना हल्का और शुध्द है कि इसका, खाने के स्वाभाविक स्वाद पर कोई असर नहीं पड़ता. व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल इस्तेमाल में भी किफ़ायती है.

ब्रिटैनिया
व्हाइटल
शुद्ध रिफाइन्ड कुकिंग ऑइल

"दिल की बात"

